मई 2012 ■ ₹ 20/-

चन्दामामा

www.chandamama.com/parle/

युवा सितारे

यदि आप अपने परिवार या आस-पास के किसी बच्चे का नाम युवा सितारे के रूप में सुझाना चाहें, तो कृपया हमें बच्चे का विवरण और अपना संपर्क विवरण इस पते पर भेजें:

Young Achievers-RCM,
Chandamama India Ltd,
No:2 Ground Floor, Swathi Enclave, Amman koil street,
Vadapalani, Chennai-26
(or)
online@chandamama.com

उठो और जीतो

प्रगति नटवर भट्टड को एक विलक्षण बालिका कहा जा सकता है। प्रगति को कर्नाटक के राज्यपाल, श्री रामेश्वर ठाकुर के द्वारा २० नवम्बर २००८ को चिन्नरहब्बा में विलक्षण बालिका की उपाधि से सम्मानित किया गया।

प्रगति की स्मरणशक्ति विलक्षण है। चार वर्ष की उम्र में वे भारत के २८ राज्यों की राजधानियाँ व दुनिया के १९६ देशों की राजधानियों के नाम बता सकती थीं। प्रगति एक ही साँस में राशियों व ग्रहों के नाम गिनवा देती हैं। वे आपको कम्प्यूटर के कीबोर्ड की सभी कीज़ के नाम क्रम से बता सकती हैं।

प्रगति ने २० से अधिक नृत्य प्रतियोगिताएँ जीती हैं। उनका सबसे प्रमुख प्रदर्शन था चेन्नई में अगस्त २०१० में राष्ट्र स्तरीय अबेकस प्रतियोगिता, जिसमें वे स्कूल में प्रथम आई थीं। वे अबेकस के सूत्रों का अपनी पढ़ाई में भी उपयोग करती हैं, जिनसे उनका गणित बहुत अच्छा हो गया। यह बालिका अपनी पढ़ाई और अतिरिक्त पाठ्येत्तर गतिविधियों में बहुत अच्छे से तालमेल बनाती है।

प्रगति इस बात में विश्वास करती हैं कि केवल पढ़ना काफ़ी नहीं, खेलना-कूदना भी आवश्यक है। अत: प्रगति यह सुनिश्चित करती हैं कि वे रोज़ कम से कम एक खेल खेलें। उनका अच्छा भविष्य तो सुनिश्चित है ही, उन्होंने जीवन में सफलता के लिये आवश्यक सभी गुण अपना रखे हैं।

May 2012 ₹20/-
Founded by **B. Nagi Reddi and Chakrapani**

Editor & Publisher :
Prashant Sharad Mulekar

Associate Editors :
R. Vaasugi, K. Raja Sekhara Raju

Sub Editor :
Patricia Pandian

General Manager :
Sowmya Bharadwaj

Senior Artists:
K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh, Sandeep Solkar

Artist :
Venki

Layout Designers :
B. Thirumal, K. Narendra, N. Sivakumar

Production In-charge :
Prashant Pawar

Circulation:
circulation@chandamama.com

Asst. Manager - Sales & Circulation:
Subhankar Rej

Sales Officer - Circulation :
K. Ravishankar

Advertisement :
sales@chandamama.com

Subscription :
Subscription@chandamama.com
Ramya K (Chennai)
Ph: +91 44 4399 2828

Head Office :
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
P.O.Box No:19407, Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email:chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Published, Printed and Owned by CHANDAMAMA INDIA LTD.,
Published and Printed on their behalf by Prashant Sharad Muleker
Published at B-3, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East) Mumbai - 400093.
Printed At :- Kala Jyothi Process Pvt. Ltd, S.No.185, Kondapur, R.R.District-500133, Andhra Pradesh.
Editor :- Prashant Sharad Mulekar

H

अनुक्रम

चन्दामामा

Volume-3 May 2012 Issue-05

* पाठकों के पत्र ...०६
* मेरी स्मृतियाँ ...०९
* प्रजा की सेवा ...११
* अनुचित दान ...१७
* भूत से छुटकारा! ...२०
* मित्र भेद - ३० ...२४
* मेरी सुनहरी मछली कहाँ है? ...२७
* मोक्ष के योग्य ...३०
* विश्वासघात ...३२
* मुर्गी के दाम ...३५
* आलसी ...३९
* क्या मैं कंजूस हूँ? ...४०
* देने की आदत ...४२
* बीरू की बही ...४३
* भयंकर मनुष्य ...४४
* मूक-प्रशंसा ...४८
* अपना अपना नज़रिया ...५२
* रहस्यमय उपहार ...५४
* शिथिलालय-२६ ...५५
* चतुराई ...६३
* अन्धी सरकार ...६४
* घमण्डी ...६६
* कर्ज का ख़तरा ...६७
* आवरण पृष्ठ की कथा ...७०
* मैं क्या बन सकता हूँ? ...७१
* चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - ४० ...७२
* हँसते-हँसते हो जा लोट-पोट ...७३
* भोजन राजा ...७४
* चूँ-चूँ का डिब्बा ...७६
* भारत दर्शक ...७८
* बीरबल ...८०
* ट्रेज़र बॉक्स ...८२

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

छुट्टियाँ आम और चन्दामामा

छुट्टियाँ आते ही शुरू हो जाता है मौज-मस्ती का समय! इस समय हम उसी पुरानी दिनचर्या पर वापस आ गए हैं - नई जगहों पर जाना, रिश्तेदारों से मेल-मुलाकातें, दोस्तों के साथ खेल-कूद, टी.वी. देखना... आओ हम इस साल इस सबके साथ कुछ और भी करें। हम अपने पाठकों से कुछ कहानियाँ, कुछ ऐसे अनुभव चाहते हैं, जिनका मज़ा हम सभी ले सकें। साथ ही, जैसा कि हम पिछले कुछ समय से कहते आ रहे हैं, हमें अपने आस-पास के इलाके, दोस्तों और देश के लिये कुछ करना चाहिये। क्या हम अपने कुछ छोटी उम्र के दोस्तों या कुछ ऐसे मित्रों को चन्दामामा पढ़कर सुना सकते हैं, जो देख नहीं पाने के कारण दुनिया का लुत्फ़ नहीं ले पाते? कुछ पेड़ लगा सकते हैं? कुछ खिलौने बना सकते हैं? हमारे स्कूल को साफ़ करके, उसकी रंगाई-पुताई करके उसके लिये कुछ कर सकते हैं? ऐसी कई गतिविधियाँ हो सकती हैं, जिन्हें करके हम न केवल छुट्टियों का मज़ा ले सकते हैं बल्कि समाज को कुछ दे भी सकते हैं।

पिछले वर्ष, जापान ने सबसे भीषण प्राकृतिक आपदाओं में से एक सही थी। भूकंप और सुनामी के प्रभाव उस देश को अब भी उठाने पड़ रहे हैं। लेकिन पूरा देश, उसके सभी नागरिक उसी समय एक होकर उठ खड़े हुए, और उन्होंने उन क्षेत्रों को पुनः ठीक कर दिया है, जिन्हें इस विनाश के समय नुकसान उठाना पड़ा था। उन स्थानों की उस महाविनाश के समय की तस्वीरें, और उनकी हाल की सूरत देखकर मन विस्मय और जापानियों के प्रति श्रद्धा से भर उठता है।

पिछले सम्पादकीय तक, हम प्रत्येक माह के प्रमुख दिनों और उनकी महत्ता के बारे में बात करते थे। हमें लगता है कि जैसा कि हम कई वर्षों से कह रहे हैं, हमें आगे बढ़ते हुए इन चीज़ों को सम्पादकीय से हटा देना चाहिये। इस पर हम आपके विचार जानना चाहेंगे।

हम आप सभी से अनुरोध करेंगे कि अपनी छुट्टियों के अनुभव हमारे साथ बाँटें, जिससे उन्हें पत्रिका में भी छापा जा सके।

तो छुट्टियों के लिये शुभकामनाएँ!!!

- सम्पादक

पाठकों के पत्र

हाल ही में मैं अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में भाग लेने के लिये जयपुर गया। स्टेशन से बाहर आते ही मैंने हिन्दी चन्दामामा के बंडल आते देखे। मैंने दौड़कर एक प्रति खरीदी और उसके पन्ने पलटने लगा। स्टॉल के मालिक ने मुझे गौर से देखा और एक कुर्सी देते हुए बैठकर पुस्तक पढ़ने को कहा। तब तक मेरे मित्रगण आ गए और मुझे खींचकर वहाँ से ले गये। वे मज़ाक कर रहे थे कि एक डॉक्टर होकर मैं यह कर रहा था। मैंने उन्हें कहा कि चन्दामामा का यह पागलपन तो मेरी अन्तिम साँस तक जारी रहेगा। ***- डॉ. सिरि, मिरयाला गुडा***

बचपन से ही, मुझे चन्दामामा की नैतिक कहानियों ने पाला पोसा है। लेकिन हाल ही में प्रकाशित कहानियाँ उतनी अच्छी नहीं हैं, और कई कहानियाँ दुबारा प्रकाशित हो रही हैं। उदाहरण के लिये, मुझे फरवरी और मार्च २०१२ में प्रकाशित २ कहानियों में समान शिक्षा दिखी। आपसे अनुरोध है कि कहानियों के दोहराव पर ध्यान दें जिससे चन्दामामा की गुणवत्ता बनी रहे और इस प्रतिसाद पर आपके सकारात्मक रवैये की आशा करता हूँ। ***- श्रीनिवास पमर्थ (ईमेल से)***

अनन्त का निर्णय नामक बेताल कथा सोचने पर मजबूर करती है। पुराने पाठकों द्वारा साझा की गई चन्दामामा की स्मृतियाँ मन को छू जाती हैं। पंचतंत्र धारावाहिक बहुत रोचक लग रहा है।

- बी. राजेश्वर, पोन्कल

जटायु का आवरण चित्र शानदार है। पिछले कवर पर सीता की छवि और आर्ट-बुक की छवि भी शानदार है। हमें एक अंक में पूरे पृष्ठ के चार चित्र मिले। यह चन्दामामा में बिरली ही बात है। आज तक क्लासिक दृश्य देते रहने के लिये चन्दामामा को साधुवाद!

- एन. रमेश, चित्तूर

एक पृष्ठ की कहानियाँ चन्दामामा की विशिष्टता हैं। मैं "प्रपथम" नामक कहानी में देवी लक्ष्मी के उत्तरों से बहुत प्रभावित हुआ। "प्रेरणा" नामक कहानी में अन्तिम प्रेरणादायी बातें बहुत अच्छे से कही गई हैं। चन्दामामा की कहानियाँ सच में सन्तरे की फ़ाँकों की तरह हैं।

- जोगराव, विजयवाड़ा

आरक्षित बीज बहुत अच्छी कहानी है, जो मैंने चन्दामामा में पढ़ी। यह संवाद पढ़कर मेरा दिल रो पड़ा, "हम केवल भूख जानते हैं। मुझे और कुछ नहीं पता। मैं कल के बारे में नहीं जानता।" यह बातें हमारे ग्रामीण जीवन की सच्चाई और दुःखद स्थिति को दर्शती हैं। लेखक और चन्दामामा को साधुवाद। ***- सी. एच. वेणु, हैदराबाद***

शुरुआत से ही, चन्दामामा की कहानियाँ विवेक और तर्क पर आधारित रही हैं। नवीनतम अंक ने भी यही दर्शाया है। पाक कला की रानी, चौथा चोर, पेड़ की छाया और परोसने का चम्मच कहानियाँ अति उत्तम तार्किक ढंग से समाप्त हुईं। आरक्षित बीज कहानी ने बच्चों की शिक्षा के महत्व को बहुत अच्छे से दर्शाया है। अपने चन्दामामा में इस प्रकार की कहानियाँ देखकर बहुत प्रसन्नता हुई।

- नरसिंहुलु, करनूल

मार्च के अंक की कहानियाँ बहुत अच्छी हैं। 'सबके लिये न्याय' और 'पाक कला की रानी' ने बहुत अच्छा सन्देश दिया। भारतीय संस्कृति और पारम्परिक मूल्यों को दर्शाने वाली कहानियाँ प्रकाशित करने के लिये मैं आपकी प्रशंसा करता हूँ। कृपया वापाजी की और कृतियाँ प्रकाशित करें।

- माधव, पाठपट्टनम्, श्रीकाकुलम्

फ़रवरी २०१२ के अंक के सम्पादकीय में डारविन के बारे में एक ग़लत कथन है। सभी जानते हैं कि उनके सिद्धान्त में कमियाँ हैं, लेकिन साइंस के दीवाने अब भी उससे प्रभावित हैं! और यही इस सिद्धान्त के बारे में आश्चर्यजनक बात है। चन्दामामा जैसी पत्रिका को ऐसे विरोधाभासी मतों का समर्थन नहीं करना चाहिये। कृपया इस पर ध्यान दें।

- कृष्ण प्रसन्ना (ईमेल से)

मैं ५ वर्ष की उम्र से चन्दामामा पढ़ता आ रहा हूँ। यह एक बेहतरीन पत्रिका है। मैं हमेशा अगले माह की पत्रिका का इन्तज़ार करता हूँ। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि उड़िया चन्दामामा में दूर देशों की कहानियाँ, चित्र परिचय प्रतियोगिता, चार निडर आदि प्रकाशित करें चन्दामामा श्रेष्ठतम पुस्तक है।

- गोराचन्द (ईमेल पर)

आपको मेरी शुभकामनाएँ। उड़िया चन्दामामा उड़ीसा से दूर एक स्थान से प्रकाशित होती है। मैं एक सहकारी अधिकारी हूँ और उड़िया लेखक के रूप में आपको यह पत्र लिख रहा हूँ। मैं पिछले कई वर्षों से लेखन कर रहा हूँ। अब मैं ८५ वर्षों का हूँ और अब भी लिख रहा हूँ। मेरा घर आपके द्वारा प्रकाशित पत्रिका के अंकों से भरा हुआ है।

- हरेकृष्ण दास, बारागडा

कन्नड़भाषी अपनी भाषा को उतना ही प्रेम करते हैं जितना बच्चे और बड़े अपनी प्यारी पत्रिका चन्दामामा को। हमें और चुटकुले व हास्य कथाएँ चाहिये। जटायु का आवरण चित्र बहुत सुन्दर था। मार्च २०१२ के अंक की कहानियाँ बेहद अच्छी थीं। मैं पिछले २५ वर्षों से चन्दामामा पढ़ रहा हूँ। यह अपनी अच्छी कहानियों से सभी पाठकों का मन मोहती है।

- आर. विजयकल / एम. पी. स्वामी, बंगलुरु

Avail the loyalty bonus!

Chandamama Subscribers will get flat 10% off on subscription renewals! (All Editions - within India)

Chandamama!

Because stories make the world go round...

Choose your Chandamama!
Go to www.chandamamashop.com & subscribe Now!!

You can also subscribe online at: **www.chandamamashop.com**

Chandamama is available in English and 12 regional languages.
Junior Chandamama for children above 4 years is available only in English.

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following editions of Chandamama:

☐ English ☐ Telugu ☐ Tamil ☐ Kannada ☐ Hindi
☐ Marathi ☐ Gujarati ☐ Oriya ☐ Bengali ☐ Sanskrit
☐ Santali ☐ Malayalam ☐ Assamese ☐ Junior (Only in English)

Name: ....

Date of Birth: .... Sex: ....

Address: ....

....

....

.... City: ....

State: .... Pin: ....

Telephone: ....

Mobile: ....

Email: ....

Subscription Number (for renewals): ....

Gift Subscription to the following address:

....

....

....

....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees ....

Cheque/DD No ....

favouring Chandamama India Ltd on ....

.... bank.

* Your subscription will commence in 6 weeks.
Please mail the subscription form to:
Chandamama India Limited,
P.O.Box No:19407, Mumbai-400093.
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email: subscription@chandamama.com
You can also subscribe online at : www.chandamamashop.com

Take Your Pick!	1 YEAR	2 YEARS	3 YEARS	4 YEARS	5 YEARS
English (₹ 25/- per copy)	₹300	₹540 $60	₹765 $135	₹960 $240	₹1125 $375
REGIONAL (₹ 20/- per copy)	₹240	₹430 $50	₹610 $110	₹770 $190	₹900 $300
JUNIOR (₹ 15/- per copy)	₹180	₹325 $35	₹460 $80	₹575 $145	₹675 $255

** conditions apply

Annual Subscription Overseas : US $40 for English Chandamama, US $30 for Regional Languages, US $25 for Junior Chandamama (including shipping and handling charges) by air mail.

मेरी स्मृतियाँ - तेलुगु

मुझे यह सब बहुत अच्छी तरह याद है। तब हम मद्रास में रहते थे। मेरी माँ हमारे एक परिचित के घर चन्दामामा पढ़ने जाती थीं। मैं उनके साथ जाता था। और इस प्रकार मुझे चन्दामामा पढ़ने की आदत पड़ी।

हमारी उन परिचित का नाम जनकम्मा था, जिनके घर हम जाते थे। उनका घर हमारे घर से कोई आधा किलोमीटर दूर था। जहाँ तक मुझे याद है, उन दिनों चन्दामामा बिना नांगा माह की पहली तारीख को आ जाती थी। उनके घर पहुँचने पर हमें जनकम्मा धारावाहिक पढ़ती हुई मिलती थीं। धारावाहिक पढ़ लेने के बाद वे पत्रिका मुझे दे देती थीं और मैं उसे घर ले जाकर पढ़कर एक घण्टे में उन्हें वापस कर देता था।

Name: M. Balaji Singh
Occupation:Rtd.Employee
Place: Hyderabad.

कभी-कभी जब हम जाते, तो उनकी पुत्री पत्रिका पढ़ती हुई मिलती थी। वह मुझे कहती कि वह शीघ्र ही मुझे पत्रिका दे देगी और प्रतीक्षा करने को कहती। जब तक मुझे पत्रिका मिलती, मैं चुप बैठने की जगह बैचेनी से इधर-उधर घूमता रहता था। तब मैं आठ वर्ष का था। लेकिन तब भी चन्दामामा पढ़ने में मुझे बहुत रुचि थी। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि मुझे अच्छी तेलुगु पढ़ना चन्दामामा की वजह से ही आया।

हमारा परिवार ग़रीब था। उन दिनों हम छः आने व्यय करके इसे खरीद नहीं सकते थे।

चन्दामामा से मेरा रिश्ता आज तक चला आ रहा है। उन दिनों की चन्दामामा की कहानियाँ दुर्लभ मोतियों की तरह हैं, और उन्होंने मेरी यादों को आज तक मधुर बना रखा है। "टोक चुक्का," "पापिष्टि मुखालु," "कोया गुरम," "चन्दामामा मंदहासम" जैसी छोटी कहानियाँ, धारावाहिक और रूपक सूझ-बूझ सिखाने के साथ ही मस्तिष्क पर पूरी तरह छाए रहते थे। "चित्र शीर्षक" प्रतियोगिता के शीर्षकों के लिये शब्दों की बाज़ीगरी मन पर अमिट छाप छोड़ जाती थी।

१९६३ में काम करना शुरू करने के बाद, जब मैंने चन्दामामा खरीदनी आरम्भ कर दी, तो उन्हें एकत्रित करके अपने पास सुरक्षित रखने लगा। १९६६ से १९७० के बीच इससे अपने रिश्ते को और प्रगाढ़ करने के लिये मैंने भी चन्दामामा को कुछ कहानियाँ भेजीं। लेकिन पत्रिका के स्तर के अनुरूप न हो पाने के कारण वे प्रकाशित न हो सकीं। मेरी यह अभिलाषा पूरी न हो सकी। फिर मेरी तरक्की हो गई और मेरी ज़िम्मेदारियाँ बढ़ गईं। उसके बाद मुझे कहानियाँ लिखने का समय न मिल सका। २००२ में अपनी सेवानिवृत्ति के बाद, मैं चित्र-शीर्षक प्रतियोगिता के लिये

शीर्षक भेजता रहा। उनमें से एक सितम्बर २००२ की चन्दामामा में और एक अक्टूबर २००९ की चन्दामामा में प्रकाशित हुआ।

अब मैं ६७ वर्ष का हूँ। जब भी समय मिलता है, मुझे पुरानी चन्दामामा देखना और उन्हें जमाकर रखना अच्छा लगता है। चन्दामामा की पुरानी कहानियाँ ज्ञान का भंडार हैं। वे बच्चों के लिये ज्ञान के दीपक की तरह हैं। मुझे जैसे उम्रदराज़ लोगों के लिये, वे स्मृतियों की लताओं में लिपटे वृक्ष हैं।

मेरी स्मृतियाँ - गुजराती

मेरा नाम अब्दुल हमीद है। मैं पालनपुर, जिला बाँसकांठा, गुजरात का रहने वाला हूँ। मेरी उम्र लगभग ३८ वर्ष है। जब मैं ग्यारह वर्ष का था, तब मेरे पिताजी ने मुझे चन्दामामा दी थी। उसे पहली बार पढ़कर मुझे इतनी खुशी हुई थी कि उस भाव का मैं वर्णन नहीं कर सकता।

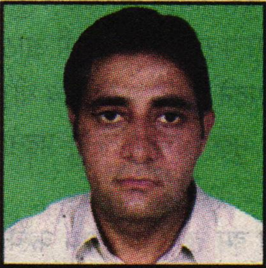

Name: Abdul Hamid Memon, Palanpur, Banskantha, Gujarat.

मुझे अरेबियन नाइट्स और चन्दामामा बहुत पसन्द हैं। विशेषकर चन्दामामा में चित्र भी कहानी की ही तरह रंग-बिरंगे होते हैं। हरितिमा, छोटे गाँवों और खेतों के चित्र ऐसे लगते हैं मानो हम खुद ही कहानी की घटना के स्थान पर पहुँच गए हों! चन्दामामा के सुन्दर चित्र दुनिया की किसी भी और पत्रिका के मुकाबले बेहतर हैं।

किसी शान्त, सुन्दर गाँव के सुन्दर और रंग-बिरंगे चित्र। पुरानी गाड़ियाँ, बरगद के वृक्ष, तालाब और झरने, पहाड़ियाँ, जानवर और पक्षी, मोर और मुर्गे सभी दुनिया की किसी भी पत्रिका से अधिक मोहते हैं।

ऊपरवाले की कृपा और हमारी अच्छी किस्मत से हम सुकून देने वाली चन्दामामा पढ़ रहे हैं, जो दिल और दिमाग को तरोताज़ा बनाती और बहुत सुकून देती है।

मैं चन्दामामा के आप सभी कर्मचारियों को धन्यवाद और बधाई देना चाहता हूँ। मैं प्रार्थना करूँगा कि आप हमें हमेशा ऐसे अंक देते रहें।

मेरी गुज़ारिश है कि आप अली बाबा चालीस चोर और चंन्दामामा में पिछले ४०-५० वर्षों में प्रकाशित अन्य कहानियाँ दुबारा प्रकाशित करें।

इन दिनों, चन्दामामा को बदलकर फिर पुराने अंकों जैसा बनाया जा रहा है, जो सराहनीय प्रयास है।

बेताल कथा

प्रजा की सेवा

राजा विक्रम फिर उसी पेड़ के पास जा पहुँचे। उन्होंने पेड़ से शव को उतारा और अपने कँधे पर डाला। और फिर वे हर बार की तरह फिर श्मशान की ओर चल पड़े। शव में छुपा बेताल फिर विक्रम से बात करने लगा। उसने कहा, ''राजा विक्रम, मैं तुम्हारी लगन और परिश्रम की सराहना करता हूँ, लेकिन मुझे तुम्हारे अपने प्रजाजनों के प्रति किये गए न्याय की निष्पक्षता पर सन्देह है। आओ, मैं तुम्हें राजा रत्न-भूषण की कहानी सुनाता हूँ, जिससे तुम्हें अपना कठोर परिश्रम भूलने में भी सहायता मिलेगी।''

राजा रत्न-भूषण अवन्तिपुर राज्य पर राज्य करते थे। अवन्तिपुर राज्य में बेरामपुर एक दूर-दराज गाँव था। इस गाँव के निवासी अधिकतर किसान थे। वे बहुत परिश्रमी लोग थे। एक दिन, एक अजनबी उस गाँव में आया। वह बहुत दूर तक पैदल चला होने के कारण बहुत थका हुआ सा लगता था। शायद

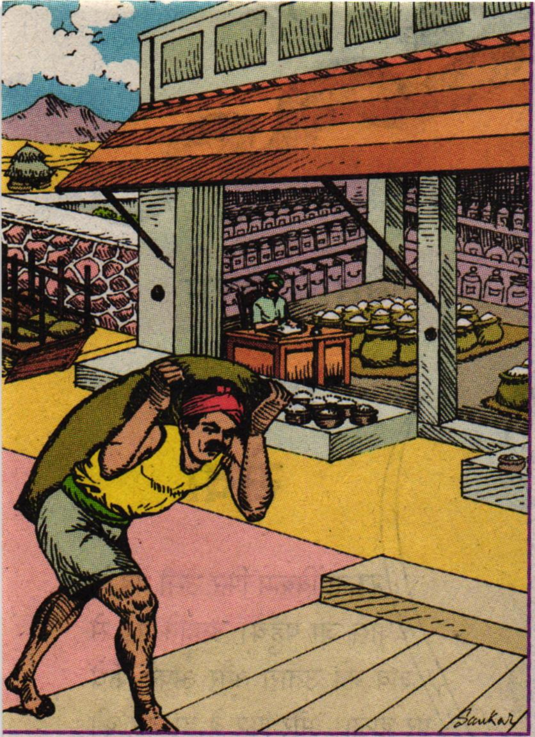

वह बहुत भूखा भी था। फिर भी, उसने किसी से भोजन नहीं माँगा। वह काम ढूँढ़ रहा था।

फिर उसे एक दुकान के सामने बोरे लदी एक बैलगाड़ी दिखाई दी। उसने दुकानदार से बात की और बैलगाड़ी से उतारकर सभी बोरे दुकान में ले गया। इसके बदले, उसने दुकान के मालिक रमणभाई से केवल भोजन माँगा। रमणभाई ने बचा हुआ कुछ भोजन उसे दे दिया और इस बात पर खुश हुआ कि उसने काम बिना किसी खर्च के करवा लिया। अजनबी ने रमणभाई को अपना नाम घासीराम बताया।

घासीराम ने उसी गाँव में रहना तय कर लिया। वह वहाँ के ज़रूरतमन्द लोगों की बिना किसी लाभ की आशा किये मदद करता। यदि उसकी मदद के बदले कोई उसे कुछ दे देता, तो वह उसे स्वीकार कर लेता और बचा कर रख लेता।

वह मकानों के ओटलों पर सो जाता। धीरे-धीरे जहाँ किसी को मदद की आवश्यकता होती, वहाँ उसे बुलाया जाने लगा। घासीराम मुश्किल से मुश्किल काम को आसानी से कर देता था। सेवा करना ही उसका उद्देश्य था।

बहुत समय तक लोगों की मदद करने के बाद, घासीराम कुछ धन बचाने में सफल रहा। वह उस धन का उपयोग कुछ ऐसे करना चाहता था कि उससे गाँव के लोगों का भी भला हो।

रमणभाई बहुत ही स्वार्थी व्यापारी था। गाँव की अकेली परचून की दुकान उसी की थी। वह कम वज़न तोलता और अधिक दाम लेता था। लेकिन गाँव वालों के पास उससे सामान खरीदने के सिवा कोई विकल्प नहीं था। उसने गाँव के खुदरा व्यापार को अपनी मुट्ठी में कर रखा था।

घासीराम इस परिदृश्य को सहन न कर पाया और उसने लोगों की मदद करने की सोची। अत: वह पास के कस्बे में गया और अपने बचे धन से एक ठेलागाड़ी और गाँववालों की ज़रूरत का सामान ले लिया। फिर वह घर-घर जाकर सामान्य मुनाफ़े पर लोगों को सामान बेचने लगा।

लोगों ने घासीराम को अपना व्यापार जारी रखने के लिये प्रोत्साहित किया क्योंकि उन्हें उससे बहुत लाभ हो रहा था। जो लोग तुरन्त पैसे नहीं दे सकते थे, उन्हें घासीराम उधार दे देता था।

यद्यपि वह बहुत कम लाभ पर सामान

बेचता था, फिर भी, क्योंकि वह बहुत सा सामान बेच लेता था, अत: घासीराम ने अपने लिये एक मकान बनाने लायक लाभ कमा लिया। उसने अपने घर ही में एक दुकान खोल ली और गाँववालों की मदद करता रहा। वह हमेशा दूसरों के भले की सोचता और स्वार्थपूर्ण तरीके से काम नहीं करता था।

उधर रमणभाई की दुकान का सामान ग्राहकों के अभाव में खराब होने लगा। रमणभाई इसके लिये पूरी तरह घासीराम को दोषी मानता था। घासीराम के प्रति उसकी ईर्ष्या हदें पार कर गई थी।

अंततः, उसने घासीराम को ही समाप्त कर देने की योजना बनाई। एक रात, जब घासीराम सो रहा था, रमणभाई ने बाहर से उसके घर को ताला लगाया और उसमें आग लगा दी।

लपटों के कारण पड़ोसियों की नींद खुल गई। लेकिन जब तक उन्होंने घासीराम को बचाया, वह बुरी तरह जल चुका था और गंभीर हालत में था।

गाँव वाले तुरन्त उसे इलाज के लिये पास के कस्बे में ले गए और अस्पताल में भर्ती करवा दिया। सभी उसके लिये परेशान थे और उसकी उसी तरह देखभाल करने लगे जैसे वह उनके ही परिवार का कोई सदस्य था।

धीरे-धीरे घासीराम ठीक होने लगा और समय पर इलाज, अच्छी देखभाल व गाँववालों की प्रार्थना के फलस्वरूप खतरे से बाहर आ गया।

उसके पास के पलंग का एक मरीज़ कई लोगों द्वारा उसकी देखभाल किये जाने से चकित था। उसने गाँव वालों में से एक से पूछा, "श्रीमान्, क्या ये आपके रिश्तेदार हैं?"

"नहीं, लेकिन ये हमारे लिये भगवान की

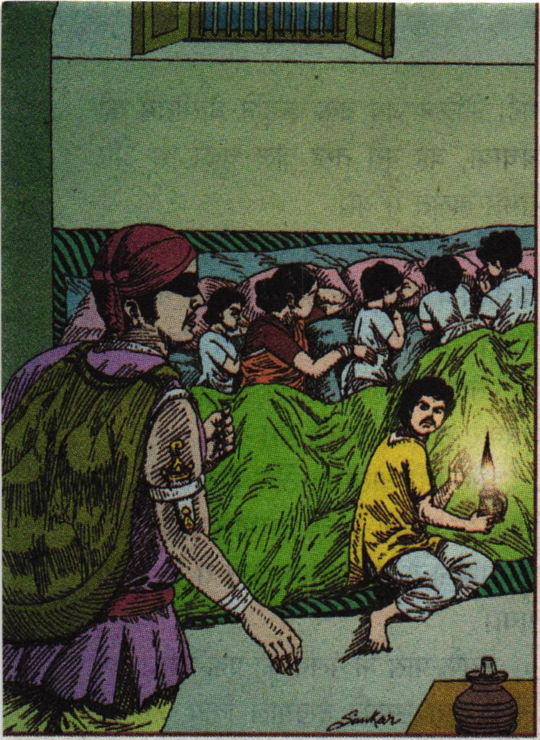

तरह हैं। हमें कभी इतने अच्छे स्वभाव वाला कोई नहीं मिला।"

"लेकिन क्या आपको पता है कि इसे पकड़वाने वाले को दस हज़ार रुपये का इनाम मिलेगा? इसे संरक्षण देने वालों को सज़ा मिलेगी। यह एक ख़तरनाक सेंधमार है। इसका नाम घासीराम नहीं चंगामल है," उस मरीज़ ने कहा।

रमणभाई भी दूसरे गाँव वालों के साथ ही घासीराम को देखने अस्पताल आया था, जिससे किसी को उसपर सन्देह न हो जाए। किस्मत से उसने उस मरीज़ की बात सुन ली। उसने तुरन्त पहरेदारों को इस बारे में बता दिया।

घासीराम को गिरफ़्तार करके राजा के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

घासीराम का असल नाम चंगामल था। वह एक दुर्दान्त सेंधमार था। राज्य के लोग उसके नाम से थरथर काँपते थे। उसे कोई रोक नहीं पाता था और उसके सिर पर १०,००० रुपयों का इनाम था।

एक दिन चंगामल एक घर में चोरी करने गया। ग़लती से उसने कुछ आवाज़ कर दी। उससे घर का मालिक उठ गया। यह देखने के लिये, कि वह आवाज़ कैसी थी, मालिक ने दिया जलाया।

चंगामल ने भागने की कोशिश की लेकिन ग़लती से उसकी टक्कर से दिया नीचे गिर गया। इससे आग लग गई और देखते ही देखते पूरा मकान लपटों में घिर गया। मकान का मालिक, उसकी पत्नी और चार बच्चे बचा लिये गए। लेकिन एक छोटी बच्ची लपटों में घिरी मकान के अन्दर रह गई।

उस समय तक पूरा मकान लपटों में घिर चुका था और उसके अन्दर जाना लगभग नामुमकिन हो गया था।

लोग चिल्लाने लगे लेकिन किसी की भी मकान के भीतर जाने की हिम्मत न थी। उन आवाज़ों को सुनकर चंगामल ने सोचा कि उसे एक छोटी बच्ची की जान जाने का कारण नहीं बनना चाहिये, इसलिये वह उसे बचाने दौड़ा।

चंगामल ने अपनी जान की परवाह न करके जलते हुए घर में प्रवेश किया और बच्ची को बाहर निकाल लाया। उस समय तक बच्ची की हालत गंभीर हो चुकी थी। चंगामल ने उसे चिकित्सक के पास ले जाने की कोशिश की, लेकिन लोगों ने उसे घेर लिया।

''भाइयों, कृपा करके मुझे इस नन्हीं बच्ची को चिकित्सक के पास ले जाने दीजिये। बाद में आप लोग जैसे चाहें, मुझे सज़ा दे सकते हैं,'' चंगामल ने विनती की।

लेकिन किसी ने भी उस छोटी बच्ची की हालत पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने क्रोध में आकर उसपर हमला कर दिया। लेकिन चंगामल किसी तरह बच निकला।

उस बच्ची की दशा देखकर चंगामल को बेहद अफ़सोस हुआ। उसने तय कर लिया कि वह सेंधमारी छोड़ देगा और बिना किसी स्वार्थ के लोगों की मदद करके जीवन गुज़ारेगा। उसने सेंधमारी से कमाई हुई सारी दौलत ग़रीबों में अनाम रूप से बाँट दी।

तब, वह दूर-दराज के बेरामपुर नामक गाँव में पहुँचा, जहाँ किसी ने उसका नाम भी न सुना था।

जैसे ही यह ख़बर फैली, कि चंगामल पकड़ा गया था, उसकी सेंधमारी के शिकार सभी लोग राजा के दरबार में पहुँच गए। उन सभी ने चंगामल को मौत की सज़ा दिये जाने की माँग की। ठीक उसी समय बेरामपुर के लोग, जिनमें आदमी, औरतें और बच्चे शामिल थे, वहाँ पहुँच गए। वे सभी चंगामल की भलमनसाहत की कसमें खा रहे थे और उसे माफ़ कर दिये जाने की विनती कर रहे थे।

उन्होंने घोषणा कर दी कि वे उसके लिये अपनी जान दे देने को तैयार थे। उन्होंने यह भी माँग की कि रमणभाई को सख़्त सज़ा दी जानी चाहिये। राजा रत्नभूषण लोगों के दो

समूहों द्वारा की जा रही एकदम विपरीत प्रकार की माँगों से कर्तव्यविमूढ़ हो गए।

फिर, उन्होंने चंगामल के एक अपराधी से निःस्वार्थ सेवाभावी बनने के पूरे वाकये पर गौर किया। उन्होंने कहा कि रमणभाई को चंगामल के पकड़े जाने हेतु सूचना देने का कोई पुरस्कार नहीं दिया जाएगा।

फिर उन्होंने कहा कि चंगामल को व्यापारिक मामलों का मुखिया बनाया जा रहा था। इस पद पर रहकर, चंगामल बाज़ार मूल्यों पर निगरानी रख व उन्हें नियंत्रित कर सकेगा।

फिर चंगामल ने राजा से दरख़्वास्त की, ''महाराज! मैं एक समय में अपराधी रहा हूँ। अतः, कृपया पहले मुझे इसका दण्ड दीजिये। उचित दण्ड मिल जाने के बाद मुझे सरकारी

अधिकारी के रूप में सेवा करने में कोई संकोच नहीं होगा।''

रत्नभूषण ने उसकी बात को सहर्ष मान लिया और उसे छ: माह का कारावास दिया। अपनी कारावास की अवधि पूरी करके चंगामल व्यापारिक मामलों का अध्यक्ष बन गया।

विक्रम को इतनी कहानी सुनाकर बेताल ने कहा, ''हे राजन्, रत्नभूषण चंगामल के पकड़े जाने पर दिया जाने वाला इनाम न देने की घोषणा करके अपने वचन से मुकर गया। और चंगामल का व्यवहार तो और भी अप्रत्याशित है।

''राजा के द्वारा सरकार में नौकरी और अच्छा ओहदा देने की घोषणा के बाद कोई भी उस प्रस्ताव को बिना सोचे स्वीकार कर लेता। लेकिन चंगामल ने सज़ा माँगी। क्या यह मूर्खता नहीं है? यदि तुम्हें इन प्रश्नों के उत्तर पता हों, और फिर भी तुम चुप रहो, तो तुम्हारा सिर फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।''

राजा विक्रम बोले, ''रमणभाई ने केवल स्वार्थवश काम किया है। चंगामल को पकड़वाते समय उसके मन में राज्य की भलाई नहीं थी। अत:, उसे किसी प्रकार का सम्मान मिलना मुश्किल था।''

''दूसरी ओर, चंगामल अपने विगत से पूरी तरह मुक्त होकर जीना चाहता था। यदि किसी सरकारी कर्मचारी का कोई आपराधिक विवरण हो, तो वह तब उसके कर्तव्य में बाधक होगा, जब उसे किसी ग़लत काम कर रहे व्यक्ति को दण्डित करना हो।''

''अपने द्वारा पहले किये गए अपराधों की सज़ा भुगत लेना औरों के लिये भी एक सबक है। इस कारण चंगामल ने पहले अपने अपराधों के लिये दण्डित किये जाने की प्रार्थना की। अतः उसका व्यवहार सर्वथा उचित और प्रशंसनीय था।''

राजा विक्रम के इस प्रकार अपना मौन भंग करते ही, बेताल शव सहित उनके कँधे से लुप्त हो गया और दुबारा पेड़ पर जा लटका।

- जी. सुब्रह्मण्यम् गौड़

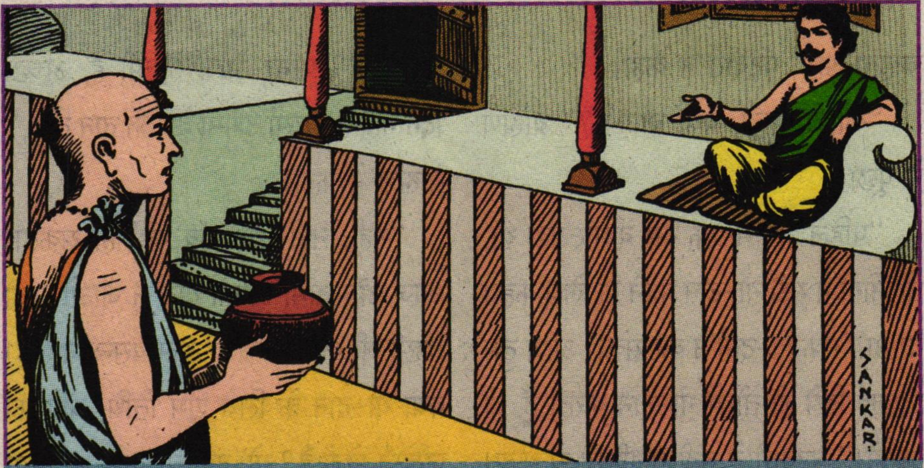

अनुचित दान

चन्द्रनगर में एक पटवारी रहा करता था। उसके पास बहुत सारी ज़मीन थी, और बहुत सारे ढ़ोर-डंगर भी। परन्तु वह बड़ा लालची था। कुछ खर्च करने की नौबत आ जाती तो वह काँप जाता था। वह अव्वल दर्जे का मक्खीचूस था।

एक बार पटवारी की एक गौ को कोई बीमारी हुई, और बीमारी बढ़ती गई। उसका पेट फूल गया, और उसके लिए साँस लेना भी मुश्किल हो गया। पटवारी को इसका तो दुख था ही कि कि गौ मर रही है, पर उसको इस बात की भी अधिक फ़िक्र थी कि मरी गौ को घर से बाहर निकालने के लिए मज़दूरों को दो रुपये देने होंगे। उसे इसकी चिन्ता होने लगी।

पटवारी ने यह बात पत्नी से कही। वह भी पति से कोई कम लालची न थी।

"मरती गौ को तो हम जिला नहीं सकते। यह देखिये कि इसके कारण हमारा खर्च कुछ न हो।" उसने पति को बहुत सोच-समझ कर सलाह दी।

"वही तो मैं सोच रहा हूँ।" पटवारी ने कहा। पटवारी जब घर के बरामदे में बैठा हुआ था तो उस तरफ़ से दान लेनेवाला एक ब्राह्मण गुज़रा। वह ब्राह्मण उस गाँव में अभी नया था। किसी दूसरे गाँव से आया हुआ था। उसे देखते ही पटवारी को एक उपाय सूझा।

"अरे ब्राह्मण! ठीक समय पर दिखाई दिये हो। मैं तुम्हारे ही पास ख़बर भिजवाना

पी. वी. बवनार्युलु

चाहता था,'' पटवारी ने कहा।

''कहिये, हुज़ूर, क्या बात है?'' ब्राह्मण ने पूछा।

''पहिले जब मैं एक बार बीमार पड़ा था, तो लोगों ने मुझे गो-दान करने के लिये कहा। पर अब तक गो-दान न कर सका। आज तुम दिखाई दिये हो तो मैं गो-दान करता हूँ, ले जाओ।'' पटवारी ने बड़ी गम्भीरता से कहा।

ब्राह्मण बड़ा प्रसन्न हुआ। वह बाल-बच्चे वाला था। दूध की हमेशा उसे तंगी रहती थी। यह सुन कर कि पटवारी बहुत लालची है, उसने उससे कभी कुछ न माँगा था। मगर आख़िर अब वही उसको बड़ा दानी दिखाई देने लगा।

''जब आप दे रहे हैं तो क्या मैं 'नहीं' कर सकता हूँ? परन्तु आज अष्टमी है, अच्छा दिन नहीं है। परसों दशमी के दिन दान लूँगा,'' ब्राह्मण ने कहा।

''नहीं, नहीं। वह सब नहीं हो सकता। आज और अभी अपना दान ले जाओ। मुझे किसी भी काम में ढील-ढाल पसन्द नहीं है। क्या गो-दान के लिये शुभ तिथि, घड़ी की ज़रूरत होती है? गो-दान तो चाहे जब दिया जा सकता और चाहे जब लिया जा सकता है,'' पटवारी ने कहा।

अगर नहीं कहता है तो पटवारी उसको और तंग करता, इसलिए गो-दान लेने के लिये आख़िर ब्राह्मण मान गया।

दोनों पटवारी की पशु-शाला में गये।

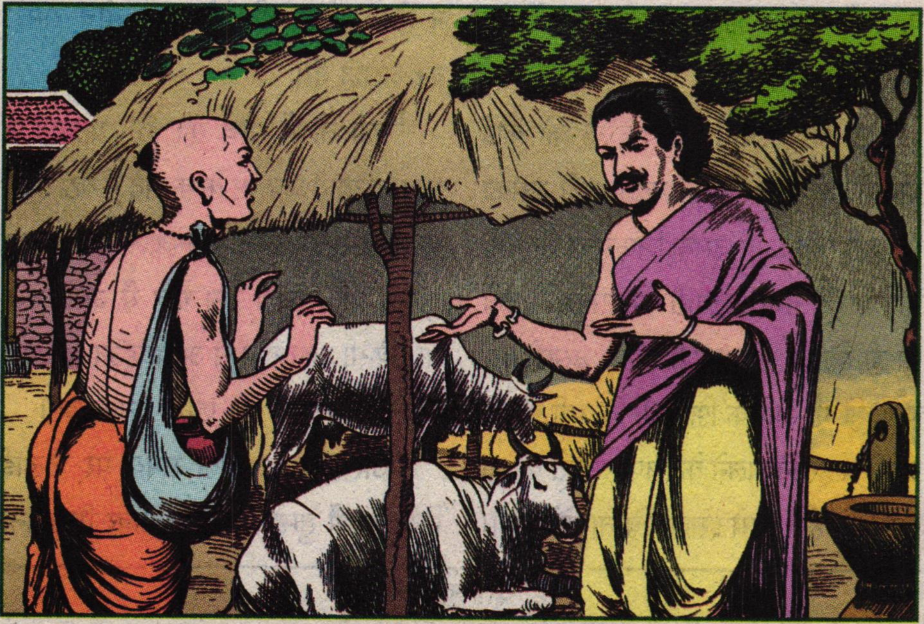

पटवारी ने गौ को, जो अब और तब की हालत में थी, दिखा कर कहा, "वह है तुम्हारी गाय, ले जाओ।"

ब्राह्मण को तुरन्त पटवारी की सारी धूर्तता समझ में आ गई।

"वह गौ तो अच्छी नहीं मालूम होती है। बीमार लगती है। तड़पती मालूम होती है," ब्राह्मण ने कहा।

"क्या मैंने कहा था कि वह बीमार नहीं है? मैंने इसी गौ को दान में देने की सोची थी। चाहे वह बीमार हो और चाहे वह मर भी जाए, वह अब तुम्हारी है, मैंने तुम्हें दान में दे दी है। अब मैं उसके लिये किसी तरह भी जिम्मेदार नहीं हूँ।" पटवारी ने कहा।

"आपकी मर्ज़ी। देखें हमारा भाग्य कैसा है? कौन किसके भाग बना-बिगाड़ सकता है? मैं अपनी गौ को लिये जाता हूँ। ज़रा एक मिनट ठहरिये।" कहता हुआ वह कुछ देर तक आँगन में किसी पौधे-पत्ते को ढूँढ़ता रहा।

ब्राह्मण का पिता मशहूर पशु-वैद्य था। उसको भी कई जड़ी-बूटियाँ मालूम थीं। थोड़ी देर में वह एक पौधा उखाड़ लाया, और उसके पत्तों का रस निकाल कर उसने गौ की नाक में डाल दिया। गौ छींकी। उसके गले में से नारियल जितना बलग़म का गोला बाहर गिरा। तुरन्त गौ खड़ी हो गई। ब्राह्मण उसके गले की रस्सी पकड़ कर पटवारी से विदा लेकर, घर हाँक ले गया।

"अरे अरे! हमने बिना सोचे एक अच्छी गौ ख्वाहमख्वाह एक ब्राह्मण को दान कर दी," पटवारी ने पछताते हुए पत्नी से कहा। दोनों कंजूस मिलकर काफ़ी देर तक इस नुकसान पर आँसू बहाते रहे।

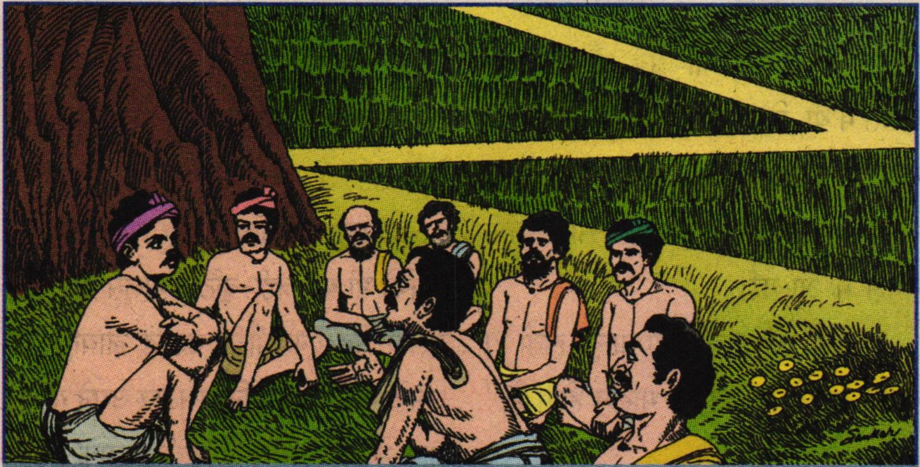

भूत से छुटकारा!

घनश्याम और कल्याणमल दोनों किसान थे। घनश्याम पालमपुर में रहता था जबकि कल्याणमल तिमकुर में। घनश्याम की पत्नी और कल्याणमल की पत्नी बहनें थीं।

घनश्याम और कल्याणमल दोनों छोटे किसान थे। लेकिन कल्याणमल वृद्ध किसानों के संपर्क में रहता था, जो खेती करने का बहुत अनुभव रखते थे, और उनसे सीखता रहता था। जब भी वह कुछ नया सीखता, उसे अजमाकर देखता था। यदि उससे उसे बेहतर फसल लेने में मदद मिलती थी, तो वह अपने अनुभव को दूसरे किसानों के साथ बाँटकर बेहतर फसलें उगाने में उनकी भी सहायता कर दिया करता था।

इस प्रकार वह न केवल अपनी फ़सलों को बेहतर करता था, बल्कि साथ ही गाँव में अपना मान-सम्मान भी बढ़ाता था।

लेकिन घनश्याम का खेती के प्रति रवैया बहुत ही अलग था। वह अपनी सफलता का कोई गुर किसी को नहीं बताता था। यहाँ तक कि यदि उसे अपने खेत में फसल की कोई बीमारी भी दिख जाए, तो भी वह साथी किसानों को आगाह नहीं करता था। इस प्रकार, वह ऐसी बीमारियों के फैलने में एक प्रकार से मदद ही करता था।

घनश्याम की कड़ी मेहनत के बावजूद, कल्याणमल हमेशा उससे आगे ही रहता था। इससे घनश्याम उसके प्रति ईर्ष्या का भाव रखने लगा।

एक साल, पर्याप्त बारिश नहीं हुई। इससे

पी. वी. सत्यनारायण

खेतों में भू-जलस्तर कम हो गया, जिससे पानी खींचकर खेतों की सिंचाई करना मुश्किल हो गया। कल्याणमल ने कुछ और किसानों से मिलकर इस समस्या पर विचार किया। फिर उसके अपने उस समूह की ओर से ग्राम के कृषि अधिकारी से बात की। उसकी सलाह से, वह अपने समूह के लिये नगर से पानी का एक पम्प ले आया। इससे कुएँ से पानी खींचना आसान हो गया। इसके साथ ही, वह जलस्तर के बहुत कम हो जाने पर भी पानी खींच सकता था। पम्प के मूल्य में अंशदान देने वाले उसके सभी किसान मित्रों ने इस प्रयास का लाभ प्राप्त किया। उस वर्ष भी उन सभी की फसलें अच्छी हुईं। कल्याणमल ने यह अनुभव औरों में बाँटा, और उसकी सलाह से दूसरे किसानों ने भी समूह बनाकर पम्प खरीद लिये, जिससे उन सभी को लाभ हुआ।

घनश्याम को यह सब सबसे बाद में पता लगा। उसके कुएँ का जलस्तर भी बहुत कम हो गया था। वह भी अपने खेत के लिये पम्प खरीदना चाहता था। लेकिन वह किसी और के साथ मिलकर यह काम नहीं करना चाहता था। साथ ही उसके पास पम्प खरीदने के लिये पर्याप्त धन नहीं था। अतः, उसने गाँव के महाजन, वरला सेठ से कर्ज़ लिया।

"फ़सल में काफ़ी वृद्धि होगी, तो कर्ज़ चुकाना मुश्किल न होगा," घनश्याम ने सोचा।

घनश्याम नहीं चाहता था कि कल्याणमल

को उसके पम्प खरीदने के विचार के बारे में पता लगे। उसने गाँव में पम्प खरीद चुके दूसरे किसानों से भी मदद न ली, कि कहीं वे जाकर कल्याणमल को यह न बता दें। अतः, वह अकेला ही नगर की ओर चल पड़ा। वहाँ जाकर उसने पानी के पम्प के बारे में जानकारियाँ लेनी शुरू कीं। उसे देख रहे एक आदमी ने उस मशीन के बारे में उसकी अज्ञानता को समझ लिया। उसने घनश्याम का विश्वासपात्र बनकर उसे यह भरोसा दिलाया कि वह उसे अच्छे पम्प दिखाएगा। फिर वह घनश्याम को किसी के पास ले गया जिससे उसे ग्राहक लाने पर पैसे मिलते थे। घनश्याम ने उससे एक पम्प खरीद लिया। पम्प अच्छी गुणवत्ता का नहीं था। लेकिन घनश्याम यह नहीं समझ पाया।

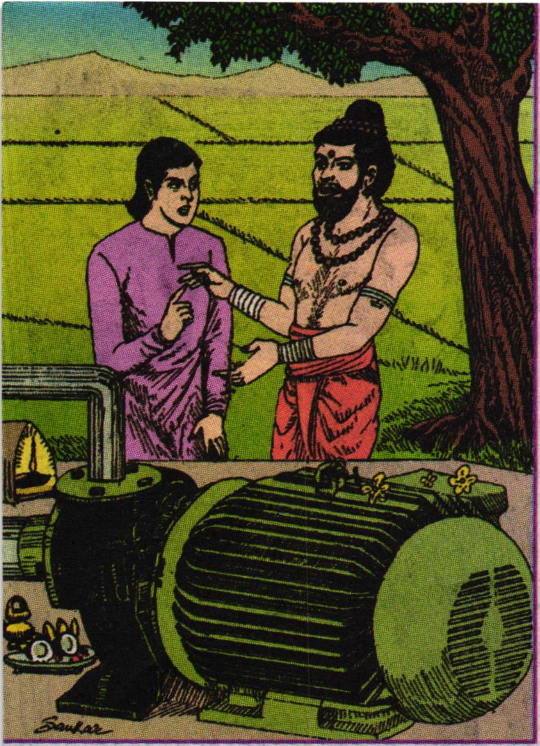

चतुराई से उससे बातों ही बातों में यह जान लिया कि क्या हुआ था।

फिर उसने उसे सलाह दी, ''प्रिय घनश्याम, तुम्हारे सम्बन्धी कल्याणमल के गाँव में जो भी किसान पम्प लाए थे, उन सभी के पम्प अच्छे चल रहे हैं। केवल तुम्हारा ही पम्प ठीक काम नहीं कर रहा।''

''हो सकता है इसका कारण यह हो कि इसपर किसी आत्मा का साया हो। यह उसी प्रकार ईंधन पी रही है जैसे ख़ून पी रही हो। क्यों न तुम अपने गाँव के ओझा जी से बात करके इसके लिये कोई टोना-टोटका करवा लो?''

लेकिन शीघ्र ही घनश्याम को पता लगा कि उसकी योजना उल्टी पड़ गई है। उसने सोचा था कि पम्प का उपयोग करके वह मज़दूरी बचा सकेगा। लेकिन वह हर महीने पम्प को चलाने के ईंधन पर और अधिक धन खर्च करता गया। जितना धन उसने पम्प के ईंधन पर ख़र्च कर दिया था, उतने में वह कुएँ से पानी निकालकर अपने खेत की सिंचाई करने के लिये दस आदमी रख सकता था।

धीरे-धीरे वह परेशान हो गया। वह कम लागत में कल्याणमल की फ़सल से अच्छी पैदावार चाहता था। पर वह यह समझ ही न पाया कि उल्टा ऐसा कैसे हो गया।

उसे चिन्तित देखकर, चन्दन नामक एक किसान ने पूछा कि माजरा क्या था। उसने

इससे घनश्याम की चिंता बढ़ गई और वह और परेशान हो गया। यदि यह अफ़वाह फैल गई कि उसके पम्प पर किसी आत्मा का साया था, तो हो सकता है उसके खेत में काम करने वाले मज़दूर इससे डर जाएँ और काम पर आना बन्द कर दें।

इसलिये जब वहाँ कोई न था, वह गाँव के ओझा के पास गया और उससे कुछ तंत्र-मंत्र करवाकर मशीन पर एक गण्डा बँधवा लिया। इसके एवज में, ओझा ने उससे एक बड़ी रकम ऐंठ ली।

लेकिन घनश्याम के ये प्रयास भी किसी काम न आए। पम्प बहुत सा ईंधन पीता रहा। इस बीच, पम्प के प्रेत-बाधित होने की ख़बर फैल गई और खेत के मज़दूरों ने डर के मारे

काम पर आना बन्द कर दिया।

घनश्याम बहुत निराश हो गया। अब तो वह बीमार होकर बिस्तर पकड़ने की अवस्था में था।

ऐसी परिस्थितियों में, एक दिन कल्याणमल पालमपुर आया क्योंकि उसे वहाँ के सरपंच से कुछ काम था। काम समाप्त करके कल्याणमल अपने सम्बन्धी घनश्याम से मिलने चला गया। चाहे घनश्याम ने कुछ न कहा हो, फिर भी खेत पर जाकर देखने के बाद वह सारा माजरा समझ गया।

उसने कहा, ''मेरे भाई, उम्मीद है तुम मेरे यह कहने से बुरा नहीं मानोगे। नई मशीनें ख़रीदने से पहले साथी किसानों से पूछना आवश्यक है। तुम्हारे पानी के पम्प पर किसी आत्मा का साया नहीं है।''

''इसका कारण यह है कि यह मशीन अच्छी गुणवत्ता की नहीं है। साथ ही इसका पाइप कुएँ में पानी के स्तर से थोड़ा ऊपर है। यह कारण है कि यह ईंधन की इतनी खपत कर रही है। यदि तुम इसकी ऊँचाई को सुधारो, तो यह समस्या दूर हो जाएगी।''

अब घनश्याम को कुछ समझ आई। मशीन पर कोई प्रेतात्मा विराजमान नहीं थी। केवल उसके दिमाग़ पर ईर्ष्या का भूत सवार था। वह कल्याणमल से जलता था और उससे बेहतर करना चाहता था।

अपना लक्ष्य पाने के लिये उसने ग़लत रास्ता अपनाया। फिर भी, कल्याणमल ने उसे सही मार्ग दिखाया और उसकी समस्या का हल सुझाया।

घनश्याम ने उसकी दयालुता के लिये उसे हृदय से धन्यवाद दिया।

फिर, उसने कल्याणमल की सलाह का पालन किया और उसके मार्ग को अपनाया। इस प्रकार उसे भी अपने समुदाय में सम्मान प्राप्त हुआ और उसकी फ़सलें भी उत्तरोत्तर बेहतर होती गईं।

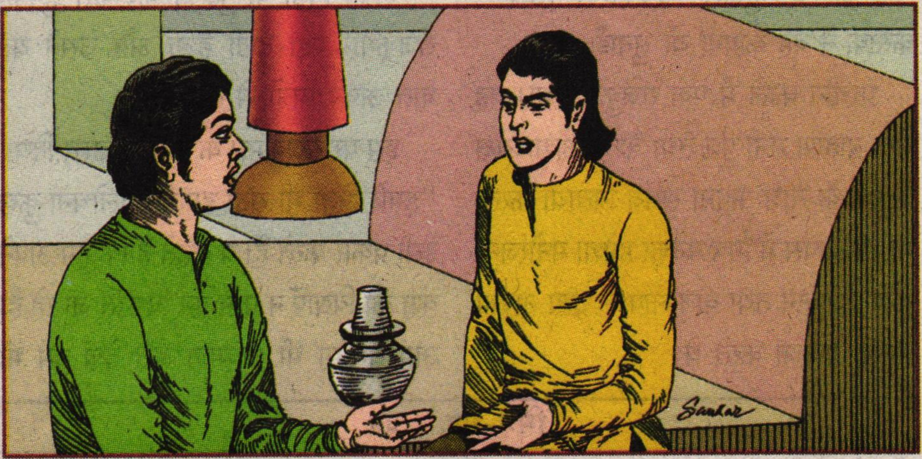

पंचतंत्र

करटक ने दमनक को तोतों की कहानी सुनाकर कहा, "तुम अपनी करनी का यों कहकर समर्थन कर सकते हो- 'मूर्ख मित्र की अपेक्षा विवेकशील शत्रु सदा अच्छा होता है!' इसके उदाहरण स्वरूप एक डाकू ने अपने प्रत्यर्थियों के पीछे जान गंवाई है! एक बंदर ने अपने एक मित्र राजा का वध किया है।"

"यह कैसे हुआ!" दमनक ने पूछा। करटक ने वह कहानी यों सुनाई:

प्राचीन काल में एक राजकुमार था। वह सदा ब्राह्मण मंत्री पुत्र तथा वैश्य कोशाध्यक्ष के पुत्र के साथ अपना समय बिताया करता था। वे आपस में मित्र बनकर हमेशा मनोरंजन, खेल, देशाटन तथा वार्तालाप के द्वारा अपना समय बिताया करते थे।

उनकी संगति के कारण राजकुमार अस्त्र-शस्त्रों की विद्या, तलवार व भाले चलाना, अश्वारोहण, गजारोहण इत्यादि क्षत्रियोचित विद्याओं में प्रवीण नहीं बन सका।

एक दिन राजा ने अपने पुत्र से पूछा, "तुमने क्षत्रियोचित विद्याएँ नहीं सीखीं, राज्य का भार कैसे संभाल लोगे?"

अपने पिता के मुँह से यह बात सुनकर राजकुमार बड़ा दुखी हुआ और उसने यह बात अपने मित्रों से कह दी।

इस पर राजकुमार के मित्रों ने उत्तर दिया, "हमारे पिता भी सदा हमारी आलोचना कुछ इसी प्रकार करते हैं। वे कहते हैं कि हम अपने वंश की विद्याएँ न प्राप्त कर बिगड़ते जा रहे हैं। अब तुम्हारा भी अपमान होते देख हमें भी

मित्र-भेद - ३०

दुख हो रहा है।''

राजकुमार ने अपने मित्रों को समझाया, ''जहाँ पर अपमान होता है, वहाँ हमें नहीं रहना चाहिए। हम तीनों अपने पिताओं से अपमानित हुए हैं। हम लोग दूर चले जायेंगे और हम पर जो आरोप किया गया है, उसे झूठा साबित करेंगे।''

राजकुमार के सुझाव को दोनों मित्रों ने मान लिया। परन्तु उनके सामने यह सवाल उठा कि कहाँ पर जाना होगा! तीनों ने बड़ी देर तक चर्चा की, अन्त में कोशाध्यक्ष के पुत्र ने यों कहा, ''धन के अभाव में हम कोई कार्य साध नहीं सकते। हम रोहण पर्वत पर जायेंगे, यदि हमारा सितारा बुलन्द है तो हमें इन्द्रनील-मणि प्राप्त हो सकती है। उसके द्वारा हम अपने मनोरथों की पूर्ति कर सकते हैं।''

इस सुझाव को बाक़ी दोनों ने मान लिया। पर्याप्त धन लेकर तीनों रोहण पर्वत की ओर चल पड़े। उनका भाग्य प्रबल था। इसलिए जब उन लोगों ने विशेष श्रम उठाकर खोजा, तब प्रत्येक को एक-एक मूल्यवान इन्द्रनील-मणि प्राप्त हुई। तब उनकी प्रसन्नता की सीमा न रही। इसके बाद तीनों ने विचार किया-''अरण्य मार्ग यात्रा के लिए हितकर नहीं है। हम इन मूल्यवान रत्नों के साथ कैसे वापस लौटें?''

'मैं मन्त्री का पुत्र हूँ, इसलिए ऐसी

समस्याओं का हल करना मैं स्वयं जानता हूँ। इसका उपाय मैंने पहले ही सोच रखा है। हम अपने रत्नों को भोजन के साथ निगल डालेंगे। वे हमारे पेटों में सुरक्षित रहेंगे। उन्हें चोर-डाकू खोजकर हड़प नहीं सकते। परसों तक हम रत्नपुर पहुँच ही जायेंगे। वहाँ पर हम जुलाब लेकर रत्नों को पुनः प्राप्त कर सकते हैं।'' मन्त्री के पुत्र ने सलाह दी।

बाक़ी तीनों को यह उपाय अच्छा लगा। तीनों ने अपने भोजन के साथ अपनी-अपनी इन्द्रनील-मणि को निगल लिया।

सुबुद्धि नामक एक व्यक्ति ने उन तीनों की आँख बचाकर आड़ में रह कर मन्त्री के पुत्र की बातें सुनीं। उसने तीनों को इन्द्रनील-

मणियों को निगलते हुए भी देखा। वह भी वास्तव में इन्द्रनील-मणियों के लिये उस पर्वत पर आया था। मगर भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया, इसलिये अनेक दिनों तक खोज-ढूँढ़ने पर भी उसे एक भी मणि न मिली।

"न मालूम ये तीनों कैसे भाग्यवान हैं। उन्हें अद्भुत मणियाँ प्राप्त हुई हैं। मैं भी इन लोगों के साथ यात्रा करके रात के वक़्त जब ये लोग गहरी नींद सोते होंगे, तब इनके पेट काटकर तीनों रत्न हड़प लूँगा।" सुबुद्धि ने अपने मन में सोचा।

यों सोचकर वह आधा कोस की दूरी पहले ही चलकर वहाँ रुक गया। शीघ्र ही तीनों मित्र उधर आ निकले। तब सुबुद्धि ने उनसे पूछा, "दोस्तों! इस भयानक जंगल को अकेले ही पार करने में मुझे डर लगता है। मैं रत्नपुर का निवासी हूँ, वहीं जा रहा हूँ। मेहरबानी करके क्या मुझे अपने साथ चलने दोगे?"

उन लोगों ने सोचा कि यदि एक व्यक्ति का और साथ रहा तो अति उत्तम होगा। इसलिए तीनों ने अपनी सम्मति दी।

उस भयानक जंगल के बीच रास्ते से सटकर डाकुओं का एक गाँव था। डाकुओं के सरदार का घर एकदम सड़क पर ही था। उसके पास अनेक पक्षी थे। उनमें से एक पक्षी राहगीरों की सारी जानकारी पाने की अद्भुत शक्ति रखता था। चारों यात्रियों को डाकू के घर से होकर गुजरते देख पक्षी ने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू किया।

डाकुओं का सरदार पक्षी की बोली जानता था। उसने अपने नौकरों को बुलाकर आदेश दिया, "सुनो, हमारा पक्षी बता रहा है कि उन राहगीरों के पास रत्न हैं, उन्हें जल्दी पकड़ लो।" ***(क्रमशः)***

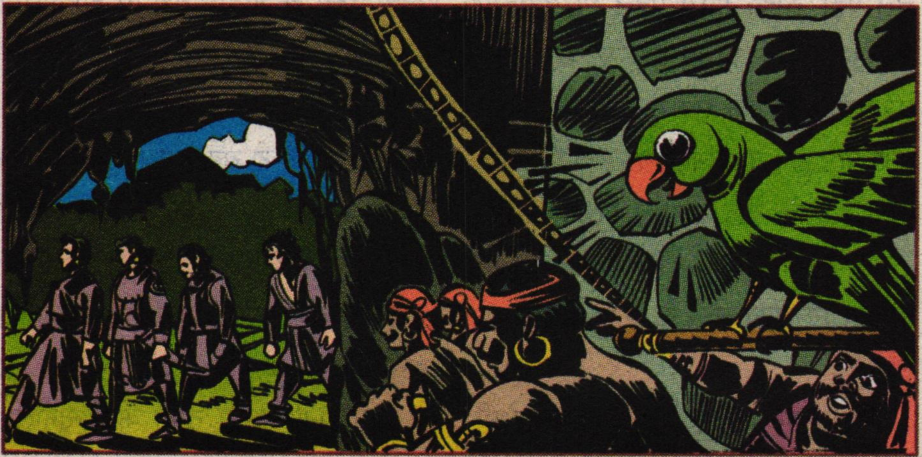

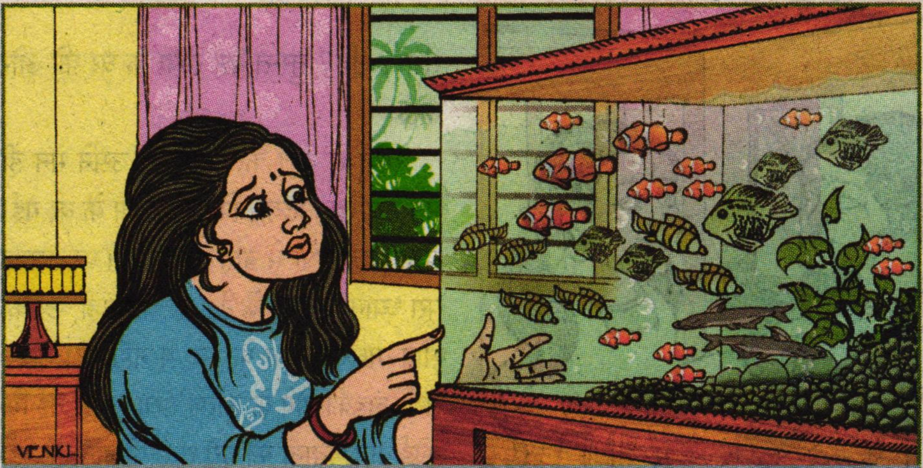

मेरी सुनहरी मछली कहाँ है?

भवानी स्तब्ध रह गई। इसका एक कारण भी था। उस दिन सवेरे जैसे ही वह उठी उसने ड्रॉइंग-रूम में रखे हुए मछलियों के टैंक की तरफ़ सिर करके अपनी मछली की ओर एक नज़र डालनी चाही। उन मछलियों की एक झलक ही, खास तौर से सुनहरी मछली की, उसे प्रफुल्लित कर देती थी। उन दोस्तों से सुप्रभात कह कर ही वह प्रातः-काल के कार्य करती थी। और आज, क्या हुआ? उसकी सुनहरी मछली नहीं थी। वह एकदम निराशा से भर गई। वह कहाँ गई होगी? रात को किसी बिल्ली ने तो घर में घुस कर उसकी प्यारी मछली को नहीं लील लिया? नहीं, उस दशा में बिल्ली सभी को खा जाती। उन्नीस मछलियों में से सिर्फ़ सुनहरी मछली गायब थी।

उसे रोना आ रहा था। सुनहरी मछली निश्चित रूप से मछलियों में हीरा थी। खिड़की से आने वाली धूप में वह कैसी चमकती थी। बिना आराम किये वह हर समय तैरती रहती थी।

भवानी अक्सर अपनी माँ से पूछती रहती थी। "माँ, क्या यह सुनहरी मछली कभी आराम नहीं करती?"

"हाँ हाँ, करती है न।" उसकी माँ का यही उत्तर होता था।

"नहीं माँ! मैंने उसे ज़रा भी सुस्ताते नहीं देखा है। वह हमेशा चंचल रहती है।"

"प्रिय भवानी! शायद वह तुम्हें बहुत चाहती है। इसीलिए तुम्हारे सामने वह हमेशा नाचती रहती है।"

"हाँ, यही कारण होगा," भवानी फौरन हाँ में हाँ मिलाती। और वही प्यारी सोन-मछली नहीं मिल रही थी। उसकी सहेलियाँ कैसी थीं!

टी. वेंकटेशन

उन्हें तो अपनी सहेली के न होने का कोई अफ़सोस ही नहीं था। वे तो मजे में तैर रही थीं।

भवानी का दिल डूब गया। वह रोने लगी। वह कहाँ गई होगी? उसने टैंक के नीचे देखा और उसे मछलियों के टैंक का पानी फर्श पर ढुला हुआ दिखा। पानी के छपके पूरे कमरे में दिख रहे थे और मुख्य दरवाजे तक देखे जा सकते थे। अचानक, उसे ऐसा लगा कि कोई शैतान व्यक्ति हॉल में घुसा और यह देख कर कि वहाँ कोई नही है उसकी प्यारी सोन-मछली को चुरा ले गया। क्योंकि यह काम जल्दबाजी में किया गया इसलिए उसने फर्श पर पानी फैला दिया। ये किसने किया होगा? स्वाभाविक रूप से उसकी किसी सहेली ने ही किया होगा। कौन हो सकता था - रम्या? राधा? रवि? तुरन्त वह रम्या के घर की ओर दौड़ी।

रम्या से बात करने के बाद उसने मन ही मन उसे छोड़ दिया। फिर वह राधा के घर गई। यद्यपि वह राधा से बातें कर रही थी पर उसका पूरा ध्यान मछली के टैंक पर था। नहीं, उसकी सोन-मछली राधा के टैंक में नहीं थी। तेज-तर्राट लड़की होने के कारण राधा समझ गई कि कोई बात भवानी को बुरी तरह परेशान कर रही है। उसने राधा को गले से लगा कर सच्चाई बताने को कहा। भवानी सुबकने लगी और बोली कि वह अपनी सोन-मछली को ढूँढ़ रही है।

''भवानी! मैं जानती हूँ उसे किसने चुराया है। एक घण्टे पहले मैंने रवि को तुम्हारे घर में घुसते देखा था। शायद तब तुम उठी नहीं थीं। इसलिए वह वापस आ गया। मुझे लगता है कि उसी ने चुरा ली होगी। चलो, हम उसके घर चलें।''

दोनों लड़कियाँ रवि के घर पहुँचीं। हॉल में रवि दिखाई नहीं दिया। रवि की माँ ने उनका स्वागत किया। ''क्या बात है लड़कियों? मुझे मालूम है कि आज स्कूल की छुट्टी है। क्या तुम रवि से कोई कॉपी लेने आई हो?''

''नहीं आन्टी! असल में भवानी की सुनहरी मछली टैंक में से गायब है और ये बड़ी दुखी है। हम रवि से पूछने आये हैं कि क्या वह इस विषय में कुछ जानता है।''

तुरन्त रवि की माँ ने उसे आवाज़ दी परन्तु वह ऊपर से नीचे नहीं आया। बार-बार बुलाने

पर भी वह नहीं आया। फिर रवि की माँ ऊपर गई और जबरदस्ती उसे नीचे लाई।

''देखो, भवानी की सोन-मछली के बारे में तुम्हें कुछ मालूम है क्या?''

''मैं? सोन-मछली? मुझे क्या मालूम?'' रवि हकलाया। वह यहाँ-वहाँ देख रहा था परन्तु दोनों लड़कियों से आँखें चुरा रहा था।

''परन्तु आज सुबह तुम उसके घर गए थे,'' राधा ने कहा। ''और मैंने कोई चीज़ छुपा कर तुम्हें बाहर आते देखा था।''

''मुझे? नहीं...यह झूठ है। मैंने कोई मछली-वछली नहीं चुराई है। मेरा पीछा छोड़ो। मेरा बहुत सिर दुख रहा है,'' रवि ने अपना सर पकड़ लिया। भवानी बुरी तरह निराश हो गई। वह कुर्सी पर ढेर हो गई।

''भवानी! क्या हुआ?'' रवि की माँ चिल्लाईं।

''मुझे थोड़ा पानी चाहिए, आन्टी! मेरा जी घबरा रहा है।''

रवि की माँ दौड़ीं और जल्दी से एक ग्लास पानी ले आईं। उन्होंने ग्लास भवानी को दे दिया। ''अ..अ..आन्टीईईईई!!'' ग्लास की तरफ़ देखते ही भवानी चीखी। उसकी प्यारी सुनहरी मछली पानी के ग्लास के भीतर तैर रही थी।

''सुनहरी मछली! यहाँ है! वाह! हा! आश्चर्य है।'' राधा चिल्लाई और खुशी से ताली पीटने लगी।

रवि की माँ स्तब्ध रह गई। उसने रवि की ओर देखा जो डर से पीला और शर्म से लाल पड़ गया था।

माँ ने थूक दिया: ''तुम्हें अपना बेटा कहते हुए मुझे शर्म आ रही है! भवानी से माफ़ी माँगो।''

''आन्टी! ये सब छोड़िये, अब मुझे कोई दुख नहीं है,'' ग्लास को चिपकाते हुए भवानी ने कहा।''

''आखिर, मुझे अपनी सुनहरी मछली तो वापस मिल ही गई है,'' भवानी का चेहरा खुशी से दमक रहा था!

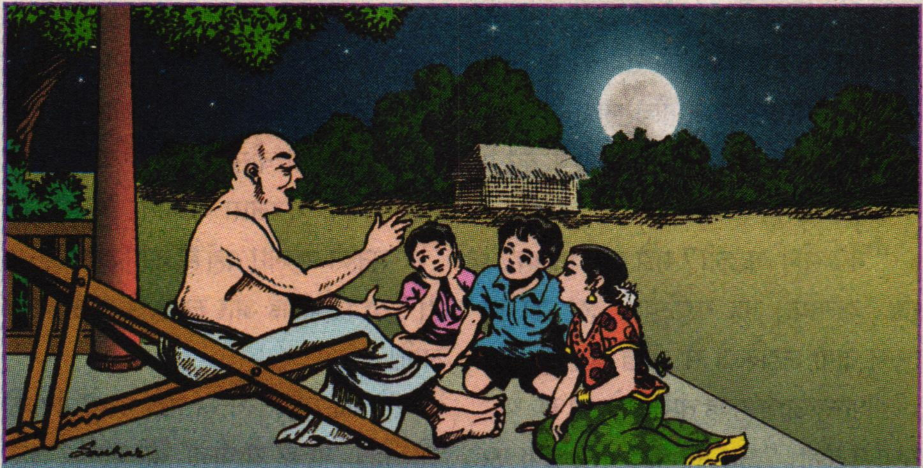

मोक्ष के योग्य

पूर्णिमा आई। बाबा आराम कुर्सी पर खिली चाँदनी में बैठे हुए थे। बच्चे उनके चारों ओर बैठे थे। बाबा मन में कुछ सोचते सोचते हँस पड़े। फिर उन्होंने यह श्लोक सुनाया-

"मनसा बध्यते जीवो,
मनसैव विमुच्यते-
देवदासो गतो बन्धं
वैश्यादासो विमोचितः।"

"इसका अर्थ क्या है बाबा?" बच्चों ने पूछा।

बाबा ने तुरन्त जवाब न दिया। उन्होंने सुंघनी निकाली। नाक में सुंघनी डालकर सूं सूं करते हुए पूछा, "यही न पूछ रहे हो कि इस श्लोक का अर्थ क्या है? बताता हूँ, सुनो। जीव मन के कारण बँधा हुआ होता है। उस मन के कारण ही वह मोक्ष भी प्राप्त करता है। कभी देवदास नामवाला नरक गया और वेश्यादास मोक्ष पा गया।"

"बाबा, देवदास कौन है बाबा, वेश्यादास को क्यों मोक्ष मिल गया बाबा? यह कहानी क्या है बाबा?" बच्चों ने कई प्रश्न किये।

"तो यह कहानी सुनाने के लिये कहते हो तो सुनाता हूँ, सुनो।" बाबा ने कहा।

अवन्ती नाम का एक नगर था। उस नगर में एक ही आयु के दो ब्राह्मण नवयुवक थे। वे दोनों अनन्य मित्र थे। परन्तु उनके व्यवहार में बहुत अन्तर था। पूछोगे कि वह अन्तर क्या था? एक हमेशा भक्ति में डूबा

सी. शेषाद्री

रहता। नीतिवान था। हमेशा पूजा-पाठ किया करता। शाम को भजन करता। उसका व्यवहार देख सब उसको देवदास कहा करते थे और दूसरा हमेशा वेश्याओं के घर जाता। भोग विलास में समय बिताता। इसलिए लोगों ने उसका नाम वेश्यादास रख दिया।

हाँ, तो यह हुआ। जबकि दोनों ऊपर से ऐसे थे तो यह क्यों नहीं पूछते कि इनके मन कैसे थे? देवदास हमेशा अपने मन में सोचा करता, "वहाँ देखो, ये वेश्यादास कितने मजे कर रहा है, मुझे तो एक भी सुख प्राप्त नहीं है," और वेश्यादास सोचा करता कि उसका मित्र उत्तम जीवन बिता रहा है, उसे अवश्य मोक्ष मिलेगा।

इस तरह वे कुछ दिन जीवित रह कर मर गये। लेकिन तब जानते हो क्या हुआ? यम के सेवक देवदास को नरक ले गये, विष्णु के सेवक आकर वेश्यादास को मोक्ष दे गये।

"यह भी क्या अन्याय है? उस वेश्यादास को मोक्ष और मुझे नरक दिया गया है?" देवदास ने कहा।

"क्या करें? तेरा मन हमेशा वेश्याओं पर लगा रहता और वह वेश्यादास हमेशा मोक्ष के बारे में सोचता रहता। मुख्य है आत्मशुद्धि, न कि कार्य।" यम के सेवकों ने जवाब दिया।

इसीलिए बड़ों ने कहा है-

"न काष्ठ विद्यते देवो,
न पाषाणे नमृण्मये,
भावेतु विद्यते देव
स्तस्मात्भावोही कारणम।"

(देव काठ में, पत्थर में या मिट्टी में नहीं है। हमारी बुद्धि में है, भावनाओं में है। इसलिए भावना ही मुख्य कारण है।)

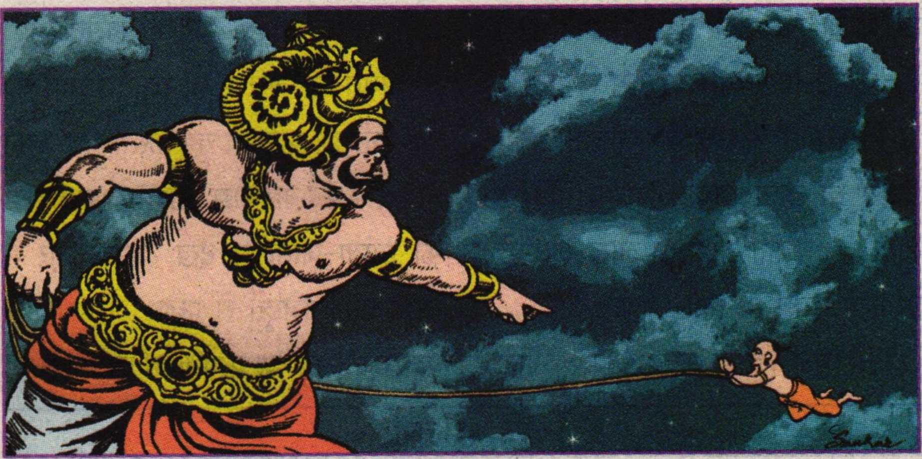

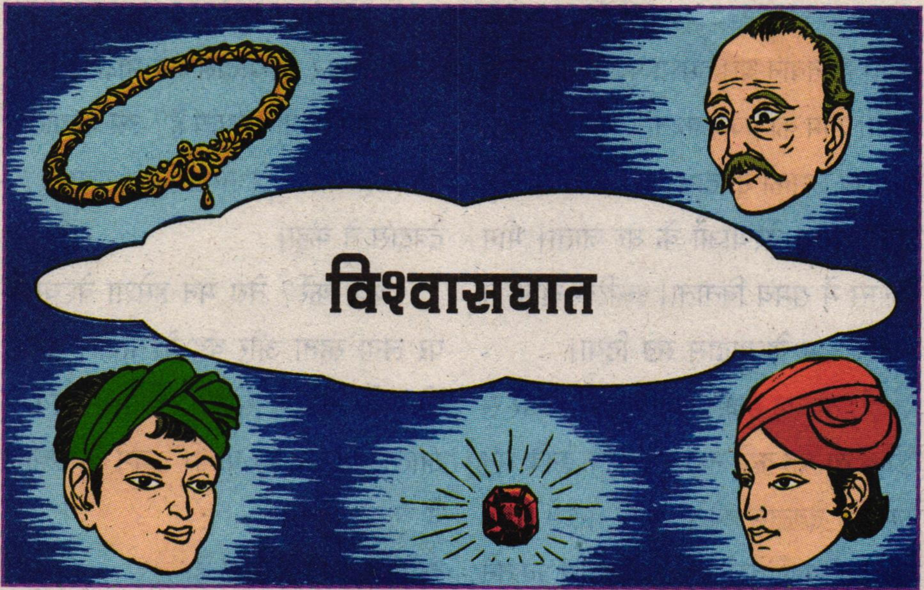

विश्वासघात

वत्स देश की राजधानी अमरावती थी। नरवाहन दत्त उसका राजा था। वहाँ वसुधर नाम का एक ग़रीब मज़दूर रहा करता था। वह बोझ ढोकर रोज़ी किया करता था।

जब वह गरीब मज़दूर राजमहल की ड्योढ़ी के पास से जा रहा था तो उसको हीरों से जड़ा हुआ एक कंकण मिला। वसुधर उसे घर ले गया। उनमें से एक हीरा निकालकर वह जौहरी हिरण्यगुप्त के पास ले गया।

हिरण्यगुप्त ने रत्न की जाँचकर कहा- "हीरा तो बहुत अच्छा मालूम होता है। अगर तुम बेचना चाहो तो लाख रुपये देने के लिए तैयार हूँ। कहो, बेचते हो?"

"मैं भला इतना रुपया कहाँ रखूँगा? आप अपने पास ही रखिए, जब कभी ज़रूरत होगी तो मैं आकर ले जाऊँगा," वसुधर ने कहा।

बाद में वह पाँच बार जौहरी के पास गया और हर बार एक-एक हज़ार रुपये ले गया। वह पैसेवाला हो गया था, इसलिए वह खूब अच्छा खाने-पीने लगा। मज़ा उड़ाने लगा। उसने अच्छे कपड़े भी खरीद लिए।

अमरावती नगर में ही रत्नदत्त नाम का एक हीरों का व्यापारी रहा करता था। उसने वसुधर से कई बार बोझ उठवाया था। वसुधर को आता-जाता न देख, उसके बारे में उसने और मज़दूरों से पूछा। उन लोगों ने बताया, "अब वह क्यों काम पर आयेगा?

बी. अंकराजु

वह अब बड़ा आदमी है, मालामाल हो गया है।''

रत्नदत्त ने यह जानना चाहा कि वसुधर के पास यकायक इतना पैसा कहाँ से आ गया है। उसने उसको मना-मनूकर बुलवाया और उससे कहा, ''अरे, सुना है अब तुम मालामाल हो गए हो। हमारे घर भी एक दिन खाना खाने आना। हम दोनों पुराने दोस्त जो हैं।''

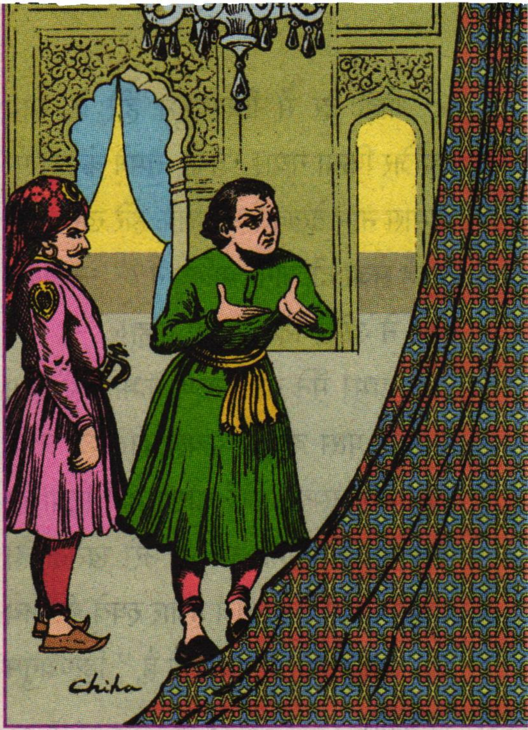

वसुधर मान गया। रत्नदत्त ने उसे खूब शराब पिलायी, खुशामद की और जब वह नशे में था, तो उससे सब मालूम कर लिया। फिर रत्नदत्त ने उसको घर भेज दिया। वह स्वयं राजा के पास भागा-भागा गया, और उसको सब बता दिया।

''महाप्रभु! उतना कीमती कंकण आपका ही हो सकता है। आपको तहकीकात करवानी चाहिए।''

नरवाहन दत्त ने वसुधर को कंकण लेकर महल में बुलवाया। कंकण राजा का था। उस पर राजा का नाम था।

''इस पर हमारा नाम देखकर भी तुमने कैसे यह कंकण अपना मान लिया?'' राजा ने वसुधर को डाँटते-डपटते पूछा। ''मैं अनपढ़ मज़दूर हूँ। बोझ ढोकर ज़िंदगी बसर करता हूँ। मैं कैसे जान सकता हूँ कि उसपर क्या लिखा है?'' वसुधर ने जवाब दिया।

''तो पाँच-दस आदमियों से पूछ लिया होता,'' राजा ने कहा।

''मुझ जैसे गरीब के पास इतना कीमती कंकण देखकर लोग पहिले मुझे चोर क़हते, और बाद में बात करते,'' वसुधर ने निवेदन किया।

बूढ़ा मन्त्री यौगन्धराय, यह सब सुन रहा था। उसने कहा, ''यह निरंपराधी है। उसे जाने दीजिए। हिरण्यगुप्त को हीरे के साथ हाज़िर होने को कहिये।''

थोड़ी देर में हिरण्यगुप्त हीरे के साथ हाज़िर किया गया। ''क्यों, तुमने कंकण पर हमारा नाम देखकर भी इसके हीरे खरीदे हैं? तुम्हें सज़ा दी जानी चाहिए न?'' -नरवाहन दत्त ने आँखे दिखाते हुए कहा।

''प्रभु! मैंने यह कंकण कभी नहीं देखा है। मेरे पास वसुधर केवल हीरा ही लाया था। मैंने उसको कोई धोखा नहीं दिया है। मैंने अच्छी कीमत पर ही उसे खरीदा है। उसने मुझसे सिर्फ़ पाँच हज़ार रुपये ही लिये हैं। बाकी रुपया मेरे पास ही है,'' हिरण्यगुप्त ने कहा।

''उस गरीब के पास इतना कींमती गहना कैसे आया, इसका तुम्हें सन्देह नहीं हुआ? शायद उसने चोरी की हो, यह भी तुमने नहीं सोचा?''

''प्रभु! मेरा काम व्यापार करना है, चोरों को पकड़ना नहीं। अगर हम अपना काम अच्छी तरह न करें, तो आप हमें ज़रूर अपनी सज़ा दे सकते हैं,'' हिरण्यगुप्त ने कहा।

''यह भी निरपराधी है। इसे पाँच हज़ार रुपये वापिस देकर, इसको भेज दीजिए। रत्नदत्त को एक बार बुलवाइए,'' यौगन्धराय ने सलाह दी।

रन्तदत्त ने सोचा कि शायद राजा ईनाम देगा। वह खुशी-खुशी राजमहल में गया। परन्तु उसको देखते ही यौगन्धराय ने कहा, ''हमें तुम्हारा व्यवहार बिल्कुल पसन्द नहीं है। तुमने वसुधर को विश्वास दिलाकर धोखा दिया है। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिए था। चूँकि यह तुम्हारा पहिला अपराध है, इसलिए हम माफ़ करते हैं।'' रन्तदत्त शर्मिन्दा हुआ।

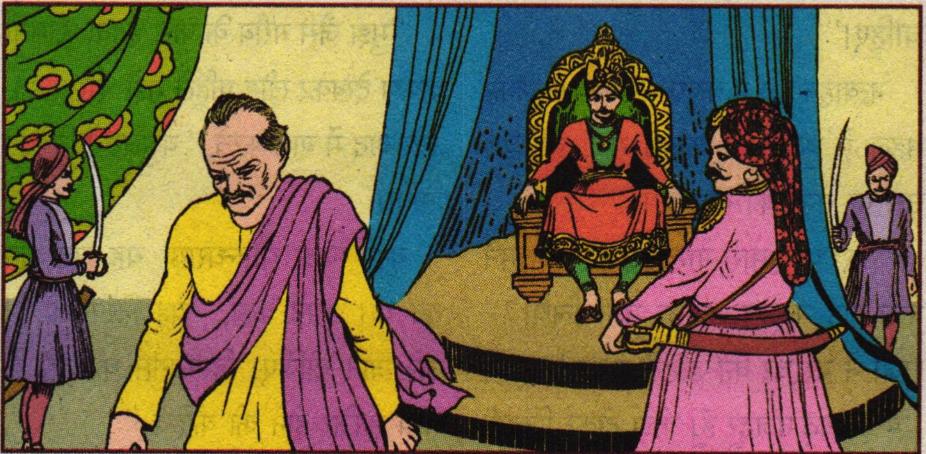

मुर्गी के दाम

एक ग्राम में बीरू नामका एक कुम्हार रहता था। संक्रान्ति का त्यौहार आया। उसकी पत्नी ने उसको एक मुर्गी खरीदकर लाने के लिए कहा। उस गाँव के एक बड़े किसान, नाहर के पास जाकर बीरू ने मुर्गी बेचने के लिए कहा।

नाहर ने उसको एक मुर्गी देते हुए कहा, ''अगर हाथ में पैसा न हो तो बाद में दे देना। हिसाब लिख रखूँगा।'' इतनी मेहरबानी दिखाने वाला भी बीरू के लिए कोई न था। वह उसकी प्रशंसा करता घर चला गया।

उस दिन बीरू और उसकी पत्नी ने मुर्गी पका कर खाई। थोड़े दिनों बाद बीरू, मुर्गी के दाम देने किसान के पास गया।

''अभी मुझे काम है। हिसाब देखने में बहुत देर लगेगी। बाद में दिखाई देना।'' नाहर ने कहा।

''मुर्गी के दाम लेने के लिए हिसाब देखने की क्या ज़रूरत है? कितना देना है, बताइये, मैं देकर चला जाऊँगा।'' बीरू ने कहा।

''अरे भाई, उसका काफ़ी बड़ा हिसाब है।'' कह कर नाहर ने बीरू को भेज दिया।

जब बीरू, दो चार बार उससे मिलने आया, तब जाकर, नाहर ने घंटे भर, कागज़ कलम लेकर कोई हिसाब किताब किया। आखिर उसने कहा, ''मुर्गी के

वी. रामराजु

हिसाब में, सब मिलाकर दो सौ पचास रुपये से कुछ अधिक होते हैं। अधिक की बात जाने दो, दो सौ पचास दे दो।''

जब बीरू को पता लगा कि उसने दो सौ पचास रुपये की मुर्गी खाई थी तो उसके मुख से थोड़ी देर तक बात न निकली।

''एक मुर्गी का दाम दो सौ पचास रुपये है? यहाँ तो कहीं सुना भी नहीं है? क्या वह कोई सोने की मुर्गी थी?'' उसने नाहर से पूछा।

''हिसाब में कोई गलती नहीं है। जिससे चाहो तुम पूछ कर देख लो। जो तूने मुर्गी ली थी, वह अब तक कितने अण्डे देती? अण्डों में से बच्चे निकलते? और वे बड़े होकर कितने अण्डे देते? उन सब के दाम तुझे देने होंगे।'' नाहर ने कहा। यह सुन बीरू का आश्चर्य दस गुना बढ़ गया।

''मैं पटवारी से बात किये बगैर एक पाई भी न दूँगा। आख़िर पता तो लगे कि बात क्या है?'' बीरू ने कहा।

''अच्छी तरह पूछ, मैंने क्या मना किया है?'' नाहर ने कहा। नाहर जानता था कि पटवारी उसकी तरफ़ ही फैसला करेगा।

दोनों मिल कर पटवारी के पास गए। नाहर ने पटवारी से कहा, ''यह बीरू, दो साल पहले, संक्रान्ति के त्यौहार पर मुझ

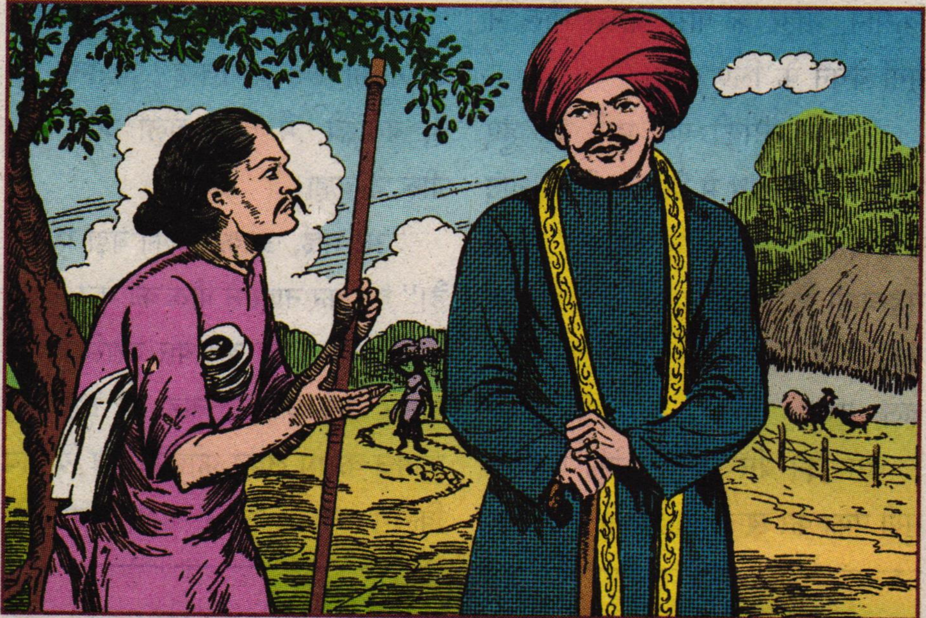

से एक मुर्गी ले गया था। वह उसका दाम अब देना चाहता है। वह मुर्गी अब तक कितने अण्डे देती, उन अण्डों के कितने बच्चे होते। उन बच्चों के कितने अण्डे होते, उन सब का हिसाब लगाने पर दो सौ पचास रुपये निकलते हैं। यह रहा हिसाब। आप ही देखिए, उसमें कोई गलती हो तो बताइये। उसका पैसा मैं यूँ ही क्यों लूँगा?''

पटवारी ने कोसते कुढ़ते, हिसाब ऊपर से नीचे तक देखा। उसने कहा, ''अरे भाई, इस हिसाब में तो कोई गलती नहीं है।''

''मैंने भी तो कहा था। बीरू को मुझपर विश्वास न हुआ। इसलिए ही आप तक आया है। बिचारा बेपढ़ा है।'' नाहर ने बीरू पर दया दिखाते हुए कहा।

बीरू हताश हो गया। वह पटवारी के घर से सीधे अपने घर जा रहा था कि रास्ते में उसको मुंशीजी मिले। उसने बीरू को देखकर कहा, ''क्यों भाई, क्या हो गया, बड़े दुख में मालूम होते हो।'' बीरू ने जो कुछ गुजरा उसे बताया।

''पटवारी ने तुमसे अन्याय किया है। जैसा मैं कहूँ, वैसा करना। नाहर से जाकर कहो कि कल गाँव के चौक में यह बात तय कर ली जाये। मैं तेरी तरफ़ से गवाही दूँगा।'' मुंशी ने कहा।

बीरू ने जाकर नाहर से ऐसा कहा। "फिर चौक में तय करने की बात क्या है? पटवारी जी ने फैसला दे ही दिया है।" नाहर ने कहा।

"मुझे आप का हिसाब समझ में नहीं आया है। पटवारी का हिसाब भी समझ में नहीं आया है। चौक में दो-चार आदमी जो कहेंगे वही मैं करूँगा। मुंशी जी से तो आप डरते ही नहीं हैं?" बीरू ने कहा।

"मुझे क्या डर है?" नाहर ने कहा। वह चौक की पंचायत के बारे में मान गया।

अगले दिन शाम को सब चौक में जमा हुए। परन्तु कहीं मुंशी दिखाई न दिया। बीरू सोचने लगा कि मुंशी भी उसे दगा दे रहे थे। सब बीरू को देखकर हँस रहे थे कि अन्धेरा होने के बाद मुंशी आया।

"शायद मेरे आने में कुछ देरी हो गई है। और कोई बात नहीं, मजदूरों ने कहा कि आज ही धान बोना होगा। इसलिए मन भर धान तुरन्त छौंकने पड़ेंगे। वह काम करके आ रहा हूं।" मुंशी ने कहा।

"बीज के धान को छौंकने की क्या जरूरत है मुंशीजी? क्या ऐसे बीज उगेंगे?" पटवारी ने मजाक करते हुए कहा।

"जब बीरू की खाई हुई मुर्गी अंडे दे सकती है तो क्या छौंके हुए बीज न उगेंगे?" मुंशी ने कहा।

सब जोर से हँसे। पटवारी का परिहास करने लगे। वह अन्धेरे में घर खिसक गया। फिर नाहर ने मुर्गी के दाम माँगने का नाम न लिया।

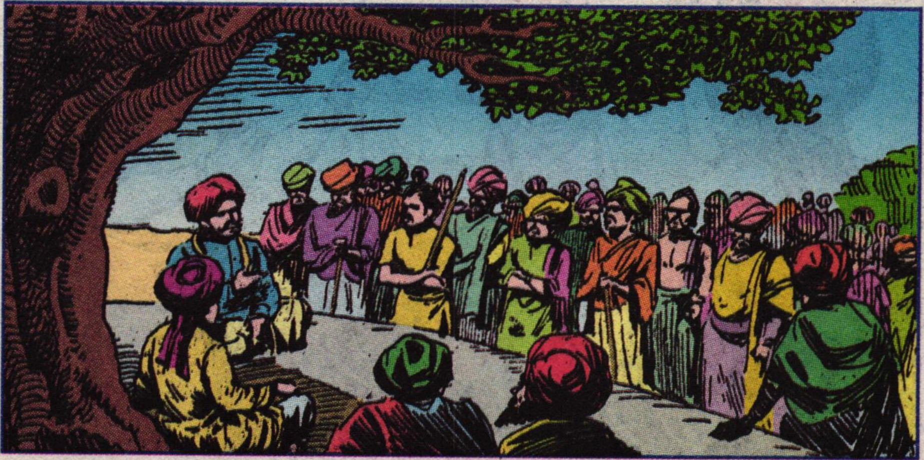

आलसी

एक दिन, तबियत खराब होने के कारण धीरेन्द्र ने अपने लड़कों को खेत पर काम करने भेज दिया। जगत स्वभाव से ही परिश्रमी था। साकाश आलसी था। परन्तु किसी तरह वह खेत पर चला गया क्योंकि वह अपने पिता को मना नहीं कर सकता था। जब कि उसका बडा भाई खेत पर परिश्रम कर रहा था, साकाश आराम से एक पेड़ के नीचे सो रहा था।

फिर भी दिन समाप्त होने पर, घर जाने से पहले, साकाश ने अपने कपड़ों पर कीचड़ लगा लिया और हाथ-पैरों को भी कीचड़ से सान लिया। साकाश ने अपनी माँ से कहा, "मैंने दिन भर खेतों पर काम किया और जगत दिन भर इधर उधर घूमता रहा।" उस पर विश्वास करके माँ ने अपने बड़े लड़के को डाँटा। तब भी, जगत ने अपने छोटे भाई को बचाने के लिए सच नहीं बताया, चुप ही रहा। खाना खाने के बाद, जगत को जल्दी से गहरी नींद आ गई और वह शान्ति से सो गया। लेकिन साकाश बेचैन हो रहा था और बार-बार करवट बदल रहा था

धीरेन्द्र जो ये सब ध्यान से देख रहा था, साकाश से बोला, "तुम्हारे बड़े भाई ने दिन । भर खूब मेहनत की। इसलिए वह अब आराम से सो रहा है। तुमने जरूर कोई काम नहीं किया होगा और दिन में सोते रहे होगे। इसी कारण तुम्हें अब नींद नहीं आ रही है। स्नेह के कारण तुम्हारे भाई ने तुम्हें बचा लिया और कुछ नहीं कहा। ठीक है न?"

साकाश बहुत शर्मिन्दा हुआ जब उसे पता चला कि भाई के कुछ भी न बताने पर भी पिताजी सब समझ गए थे।

- मल्लरेड्डी मुरली मोहन

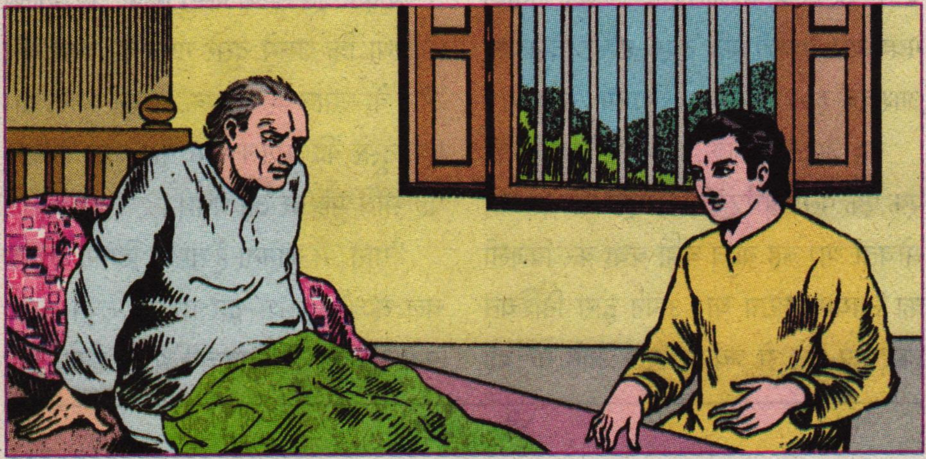

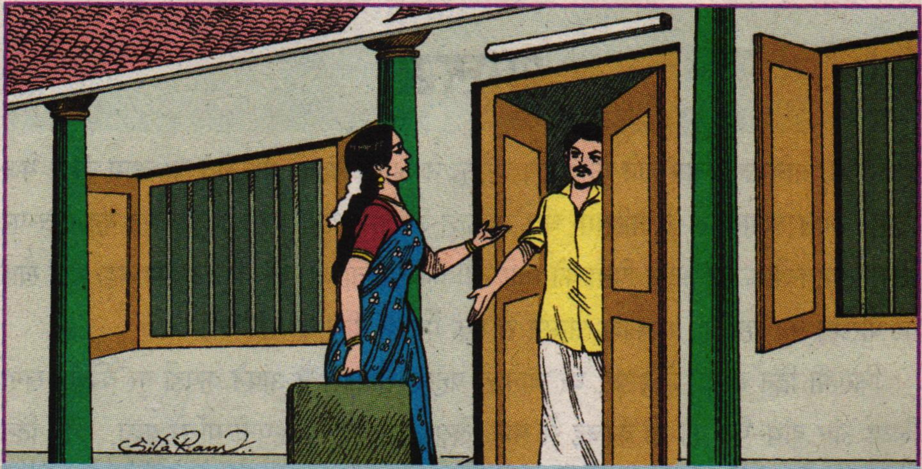

क्या मैं कंजूस हूँ?

अपने माता-पिता के घर थोड़े दिन रह कर एक शाम पार्वती घर वापस लौटी। जब उसने दरवाज़ा खटखटाया तो उसके पति शिव ने भीतर से निकल कर दरवाज़ा खोला। जब वह दरवाज़ा खोले जाने का इन्तजार कर रही थी तो उसका ध्यान वहाँ बिलकुल नई लगाई गई ट्यूब-लाइट पर गया। पहले से ही वहाँ लगे हुए जीरो-वॉट बल्ब के अतिरिक्त उसे वहाँ लगाया गया था। पार्वती को ट्यूब-लाइट देख कर आश्चर्य हुआ। उसे क्यों लगाया गया था?

वह जानती थी कि उसका पति कंजूस है। एक एक पैसा खर्च करने के पहले वह दस बार सोचता था। वह बहुत बचा बचा कर बिजली का उपयोग करता था। अपने द्वारा निश्चित किए हुए पैसे से ज्यादा बिल आने पर वह उसकी आफ़त कर देता था। वह अक्सर कहा करता था कि यदि एक वॉट बचाया जाए तो वह एक पैदा किए गए वॉट के बराबर है। इन सब बातों के मद्दे-नज़र उसकी समझ में नहीं आया कि जहाँ उसकी सब से कम जरूरत थी उस प्रवेश-द्वार पर उसने एक अतिरिक्त बिजली क्यों लगा दी।

शिव कंजूस तो था परन्तु इसका यह मतलब नहीं था कि उसमें दूसरे गुणों की कमी थी। औरों के समान वह भी एक अच्छा व्यक्ति था। एक दूसरे की कुशल-क्षेम पूछे जाने के बाद वह सीधे मुद्दे पर आ गया।

''पारो! मैं जानता हूँ तुम्हारे दिमाग में क्या चल रहा है। प्रवेश-द्वार पर नई ट्यूब लाइट लगी देख कर तुम्हें आश्चर्य हो रहा होगा। तुम्हें

डी. जानकी

अचम्भा हो रहा होगा कि मुझे क्या हो गया है जो मैंने ये किया। क्योंकि अपने मन की गहराई में, तुम मेरे कंजूस होने की वजह से मुझ से घृणा करती हो,'' कह कर वह मुस्कुराया। ''तुम्हें मालूम है कि हमारे घर के सामने कई नये घर बन गये हैं। वे सरकार द्वारा कम आमदनीवाले लोगों के लिए बनाए गए हैं। अधिकतर लोगों ने कब्ज़ा ले लिया है और रहने आ गये हैं। फिर भी बिजली लगाने का काम अभी पूरा नहीं हुआ है और वे अपनी रातें अंधेरे में गुज़ारते हैं।

परीक्षाएँ पास होने के कारण उन घरों में रहने वाले बच्चे बड़ी मुसीबत में हैं। इसलिए मेरे मन में ये विचार आया कि मैं बाहर के हिस्से में रोशनी कर दूँ जिससे वे बच्चे हमारे बरामदे में बैठ कर अपने पाठ याद कर सकें।

परोपकार के दूसरे सब कार्यों से अधिक बच्चों की शिक्षा-प्राप्ति में उनकी मदद करना श्रेष्ठ है, ऐसा मैं समझता हूँ। मैं स्कूल नहीं बना सकता क्योंकि मैं धनवान नहीं हूँ। न ही मैं पढ़ाने की योग्यता रखता हूँ। परन्तु ये छोटी सी मदद जो मैं उन बच्चों की कर सकता हूँ, कर के मुझे बड़ा सन्तोष मिलता है। क्या तुम्हें आहट सुनाई दे रही है? अन्धेरा हो गया है और उन्होंने अपनी स्कूल की किताबें लेकर आना शुरू कर दिया है। चलो, चल कर देखें।''

दरवाजा खोल कर वह उसे बाहर लाया। हँसते-मुस्कुराते छोटे-छोटे बच्चों की आवाजों ने उनका अभिनन्दन किया। वह उनकी ओर देख कर मुस्कुराया और पार्वती से बोला, ''पार्वती! मैं बिजली की बर्बादी के खिलाफ़ हूँ। मैं किसी भी वस्तु, किसी भी चीज़ की बर्बादी के खिलाफ़ हूँ। परन्तु जब किसी की सहायता की बात आती है तो मैं खर्च करने में हिचकता नहीं हूं। अब कहो क्या मैं कंजूस हूँ?'' अब पार्वती की आँखों में प्रशंसा और सम्मान था।

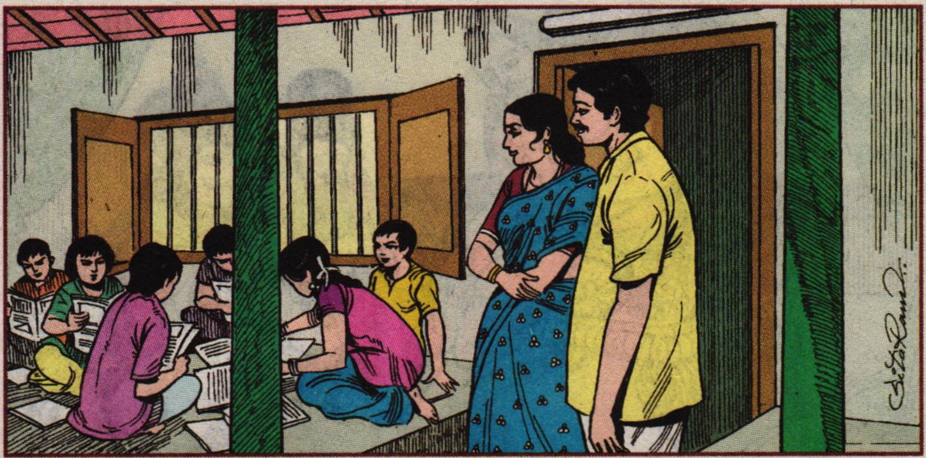

देने की आदत

राजा महेन्द्र अपने राज्य का सफलता-पूर्वक शासन करता था और हमेशा सोचता रहता था कि यह योग्यता उसे गुरु की सिखाई हुई बातों और उनके दिये हुए ज्ञान से प्राप्त हुई है। वह गुरु का समुचित आदर करना चाहता था। अतः वह गुरुकुल गया और बड़े आदर से गुरुजी को राज-दरबार में आने का निमन्त्रण दिया। वेदान्त अपने शिष्य के आग्रह को न ठुकरा सके। उन्होंने वचन दिया कि वे गुरु-पूर्णिमा पर राजा के दरबार में आएँगे। वचन के अनुसार वेदान्त अपने कुछ शिष्यों के साथ बताये हुए समय पर राजधानी की ओर चल पड़े। राजा महेन्द्र और उसकी पत्नी ने उनका भव्य स्वागत किया। राजा-रानी ने गुरुजी के चरण धोये। पण्डितों ने वैदिक मन्त्रों का पाठ किया जब राजा ने गुरुजी को माला पहनाई। फिर शाही दम्पत्ति ने रेशम के कपड़े में लिपटी हुई एक भेंट गुरुजी के हाथों में रखी। ''मेरी सफलता में आपके योगदान के लिये ये मेरी ओर से आपके आभार प्रदर्शन का संकेत है,'' राजा ने विनम्रता से कहा। ''कृपया यह साधारण सा उपहार स्वीकार कीजिए,'' कहकर रानी कपड़े को खोलने लगी। उसमें बहुत से बहुमूल्य रत्न और कई सोने के सिक्के थे। गुरु ने राजा को सब लौटाते हुए कहा, ''शिक्षक होने के नाते मुझे सिर्फ़ देने की आदत है। उपहार लेने की आदत मुझे नहीं है। आशा है तुम इस बात को समझते होगे कि किसी के लिए अपने स्वभाव के विपरीत जाना कितना कष्टप्रद होता है। प्रजा की भलाई के लिए तुम्हारे द्वारा खर्च किए हरेक पैसे को मैं अपने प्रति तुम्हारे आभार का प्रतीक समझता हूँ।''

राजा ने इसे गुरु-पूर्णिमा पर अपने गुरु के सिंखाये नये पाठ के रूप में समझकर गुरु को दी जानेवाली भेंट की सारी राशि प्रजा के कल्याण-कार्यों में लगा दी। *- एस. श्रीनिवास*

क्या भला? क्या बुरा?

चीन में एक बूढ़ा रहा करता था। उसके पास एक घोड़ा था। एक दिन वह घोड़ा कहीं चला गया। अड़ोस-पड़ोस के लोगों ने आकर उसे ढाढस दिया।

सब सुनकर बूढ़े ने कहा, ''यह भी शायद मेरे भले के लिए ही है।'' जैसे उसने कहा था, वैसा ही हुआ। जब उसका घोड़ा वापिस आया तो साथ एक नया घोड़ा भी लेता आया।

अड़ोस पड़ोस के लोगों ने आकर बूढ़े को बधाई दी। पर बूढ़े ने कहा, ''संभव है इससे कुछ नुकसान ही हो।''

इसके कुछ दिन बाद बूढ़े का लड़का जब नये घोड़े पर सवारी कर रहा था, तो वह गिर पड़ा और उसका पैर टूट गया।

फिर अड़ोस पड़ोस के लोगों ने आकर उसके प्रति सहानुभूति प्रकट की। बूढ़े ने सब सुनकर कहा, ''शायद यह भी मेरे भले के लिए हुआ है।''

ठीक उसी समय हुणों से युद्ध प्रारम्भ हुआ।

जिनके हाथ-पैर सलामत थे, उनको सेना में जबर्दस्ती भरती कर लिया गया। सब युद्ध में मर गए पर बूढ़े का लंगड़ा लड़का बचा रहा।

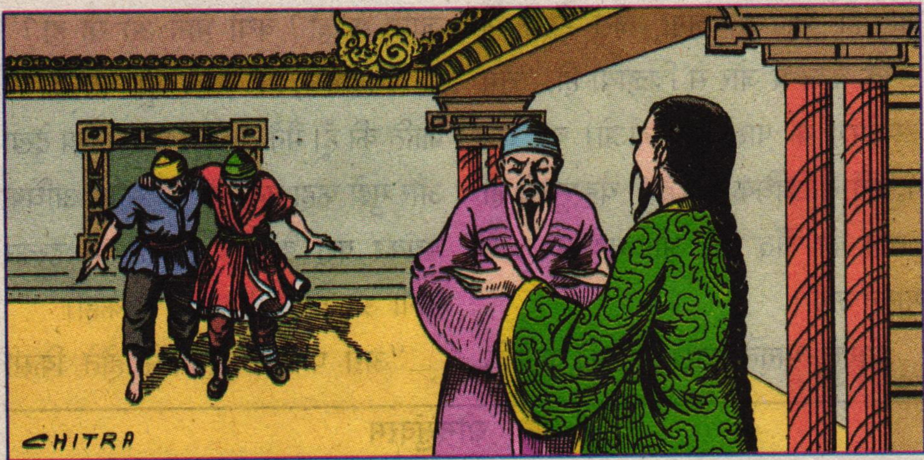

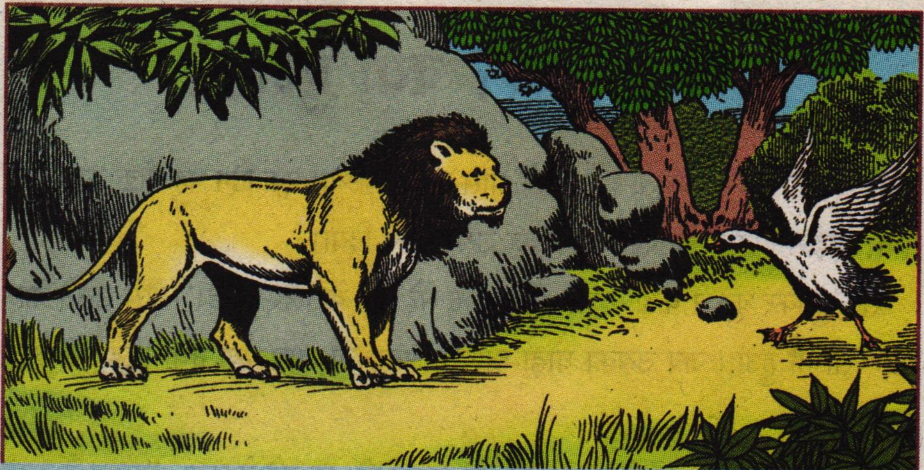

भयंकर मनुष्य

एक निर्जन वन में सब प्रकार के पशु और पक्षी, एक शेर के आधीन सुख से रहा करते थे। उस जंगल में कभी किसी आदमी ने पैर न रखा था। उस जंगल के एक बतख को एक सपना आया। सपने में, उसे एक आदमी दिखाई दिया। उसने उसे प्रेम से पास पुकारा। जब बतख मनुष्य के पास जा रही थी, उसे लगा, जैसे किसी ने उसके कान में जोर से चिल्लाया हो, ''तुम उस पशु के पास मत जाओ। वह सब पशुओं से अधिक क्रूर है।'' यह सुनते ही बतख की नींद टूटी और वह जंगल में भागने लगी।

भागते-भागते बतख, शेर की गुफ़ा के पास गई। गुफ़ा के पास युवराज खड़ा हुआ था। युवराज को उसके माता-पिता गुफ़ा से बाहर न जाने देते थे। इसलिए उसे सांसारिक ज्ञान न था। जंगल के और जन्तुओं के बारे में भी वह न जानता था। एक पक्षी को घबराकर आते देख, युवराज ने पूछा-''अरे, पक्षी तुम कौन हो? किस जाति के हो? क्यों भागे आ रहे हो?''

''महाराज, मैं बतख हूँ। बतखों की जाति की हूँ। मैंने सपने में एक मनुष्य देखा और मुझे कहा गया कि वह सबसे अधिक भयंकर पशु है। यह सुनकर, मैं डरकर भागी आ रही हूँ।'' बतख ने कहा।

''अरी पगली, तुम्हें मेरे होते किसी

वाय. सोमसुंदरम

पशु का डर नहीं होना चाहिए। उस मनुष्य को चीरकर मैं टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। मुझे भी इस तरह सपने में मनुष्य के बारे में सावधान किया गया था। परन्तु मुझपर कोई आपत्ति न आई।'' कहकर, युवराज जिस दिशा से बतख आई थी, उस ओर जाने लगा। बतख भी फुदकती-फुदकती उसके पीछे चलने लगी।

उनके कुछ दूर जाने के बाद, उनको धूल दिखाई दी। ''वह देखो, मनुष्य आ रहा है। तुम छुप जाओ। मैं उसकी ख़बर लेता हूँ।'' शेर ने कहा। परन्तु जब वह पास आया तो वह गधा निकला। पर शेर ने उसको न पहिचाना। उसने गधे से पूछा- ''तुम कौन हो? किस जाति के हो? क्यों घबराकर भागे जा रहे हो?''

''युवराज, मैं गधा हूँ। मेरी गधे की जाति है। मनुष्य ने मुझे क्या-क्या कष्ट दिये हैं, आप नहीं जानते। कितनी मार मैंने खाई है! ज्यों-ज्यों मेरी शक्ति कम होती गई, त्यों-त्यों मुझपर मार भी अधिक होती गई। खाना भी कम कर दिया गया। अब वह मुझे मार देगा।'' गधे ने कहा।

''माफ़ कीजिए, महाराज, मुझमें इतनी हिम्मत नहीं है कि फिर उस मनुष्य की नज़र में पड़ूँ।'' कहकर गधा आगे बढ़ गया।

फिर दूरी पर धूल उड़ी। परन्तु इस बार एक घोड़ा, मुख से झाग टपकाता, हाँफता-हाँफता आया। युवराज ने उसे रोककर, उसका नाम, जाति, वगैरह के बारे में पूछा। यह भी पूछा कि वह क्यों भागा आ रहा था। ''महाराज, मनुष्य से डरकर आ रहा हूँ।'' घोड़े ने कहा।

''इतने बड़े हो, तुम में इतनी ताकत है। मनुष्य से क्यों डरते हो? क्या मनुष्य में तुमसे अधिक शक्ति है?'' शेर ने पूछा।

''युवराज, न हो तो न सही, वह क्रूर

और अक्लमन्द है। मुझसे इतने दिनों तक गुलामी करवाई। मेरी पीठ पर चढ़कर, मेरे मुख में लगाम लगा कर, मुझे मार-मार कर हजारों मील सवारी की और जब मैं बूढ़ा हो जाता हूँ तो मेरा चमड़ा भी खोंस लेता है।'' घोड़े ने कहा। शेर ने उसको बहुत ढ़ाढ़स बँधाया। पर घोड़ा उसकी बिना सुने आगे चला गया।

उसके बाद ऊँट भागता आया। वह भी मनुष्य से डरकर भागा आ रहा था।

''तुम सबकी रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य है। इसलिए तुम भागो मत। यहीं ठहरो। देखते रहो, जो तुम्हारे पीछे मनुष्य भागा आ रहा है, उसका मैं क्या करता हूँ।'' शेर ने कहा। परन्तु ऊँट माफ़ी माँगकर, आगे बढ़ गया ताकि वह आदमी की नज़र में न आ जाये। मनुष्य को देखकर भागनेवालों को उसंपर विश्वास न था। यह देख, शेर को आश्चर्य हुआ।

थोड़ी देर बाद, एक बूढ़ा आदमी उस तरफ़ आया। उसके सिरपर एक टोकरा था। टोकरे में बढ़ईगिरी के औजार थे और दो-चार लकड़ी के तख्ते थे। उसके शेर को देखकर, टोकरा उतारकर उसने सामने साष्टांग प्रणाम किया।

''जय हो, युग-युग जियें महाराज।'' उसने कहा। झुर्रियोंवाले उस मनुष्य को देखकर, शेर जोर से हँसा। फिर उसने

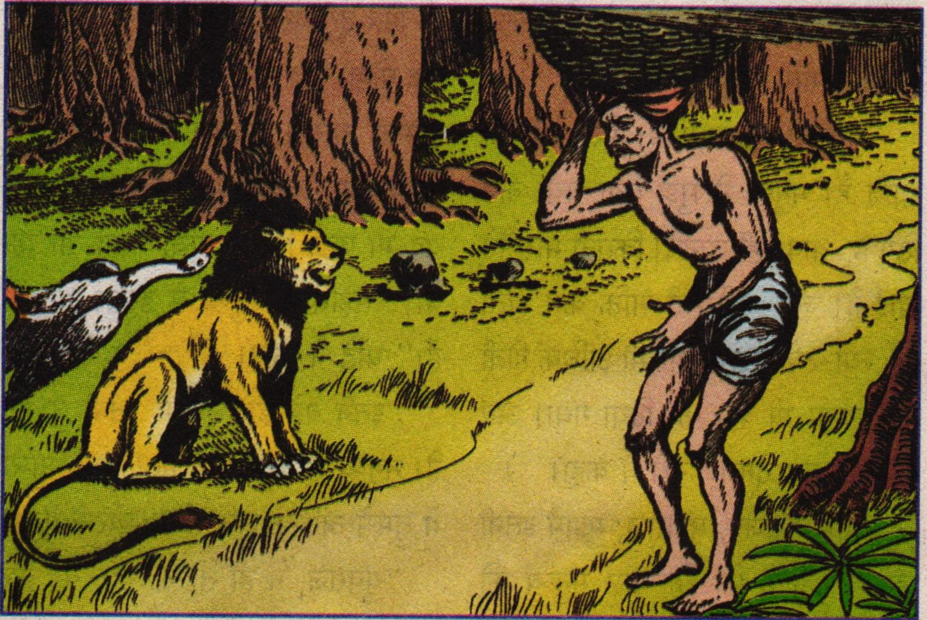

पूछा, ''तुम कौन हो? किस जाति के हो? क्या तुम भी मनुष्य से डरकर भागे आ रहे हो?''

बतख आदमी को देखते ही मूर्छित हो गई इसलिए वह शेर को न बता पाई कि वह ही मनुष्य था।

''महाराज, मैं बढ़ई हूँ, बढ़ई जाति का हूँ, आपके मन्त्री चीते ने घर बनवाने के लिए बुलवाया है। इसलिए मैं बनाने के लिए जा रहा हूँ।'' बढ़ई ने कहा।

''पहिले हमारे लिए घर बिन बनाये चीते के लिए कैसे बनाओगे? पहिले हमारा घर बनाकर जाओ।'' शेर ने कहा।

''पहिले चीते का घर बनाने दीजिये। फिर आपके लिए महल बनाऊँगा।'' बढ़ई ने टोकरा सिरपर रखकर जाते हुए कहा।

''बढ़ई जाति कोई पशु है? तुम जानते हो मैं कौन हूँ?'' शेर ने अपना अगला पंजा उठाकर धीमे से बढ़ई की छाती पर धक्का दिया। धक्के से बढ़ई धड़ाम से नीचे गिरा। टोकरे में रखे औजारों के गिरने से आवाज़ हुई।

''अच्छा हुजूर, जैसे आप कहेंगे वैसा करूँगा।'' कहकर, बढ़ई ने एक पिंजड़ा तैयार किया। उसमें एक दरवाज़ा बनाया, जिसमें से शेर अन्दर जा सकता था।

''अन्दर जाकर देखिए।'' बढ़ई ने कहा। शेर के अन्दर जाते ही बढ़ई ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। फिर वह उस पिंजरे को शहर ले गया।

''ए बढ़ई, यह तुमने क्या किया?'' शेर अन्दर से गरजा।

''मैं ही मनुष्य हूँ। मुझे देखकर तुम्हें भाग जाना चाहिए था।'' बढ़ई ने कहा।

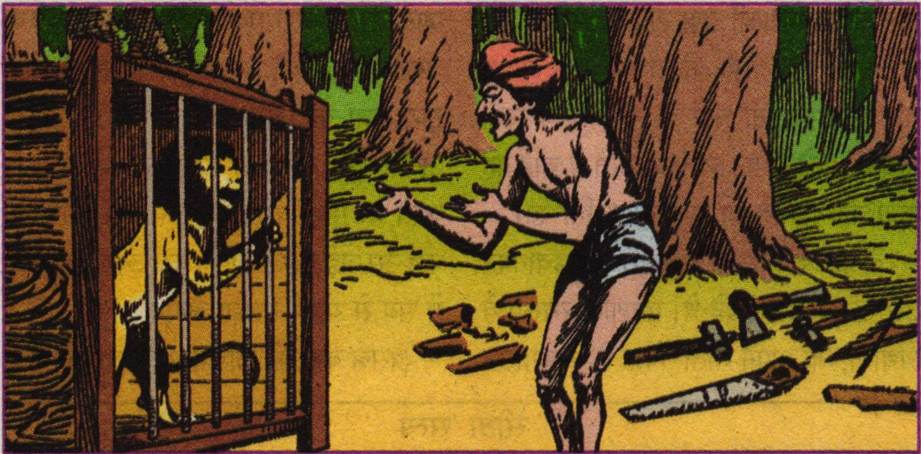

मूक-प्रशंसा

अरावली की पर्वतमाला से घिरा हुआ राज्य राजा विजयसिंह द्वारा शासित था। उसके केवल एक ही पुत्र था जो कि विवाह के कई वर्षों बाद पैदा हुआ था। राजा और रानी ने उसका नाम प्रसन्न वर्मा रखा और बड़े लाड़-प्यार से उसका पालन-पोषण किया।

सही उम्र होने पर, प्रसन्न वर्मा को पढ़ने के लिए गुरुकुल भेजा गया। उस गुरुकुल में पढ़ने वाला हरेक विद्यार्थी बड़ा होकर सफल व्यक्ति बनता था और सभी की प्रशंसा प्राप्त करता था। गुरु सर्वज्ञानी वहाँ के गुरु थे। वे सभी विद्यार्थियों से समान व्यवहार करते थे चाहे वह राजा का बेटा हो या सामान्य व्यक्ति का।

वे प्रत्येक विद्यार्थी के रुख को पहचानकर उसे उचित शिक्षा देते थे। परिणाम-स्वरूप वे विद्यार्थी, जो अपने माता-पिता के अनुशासन में नहीं थे और गुरुकुल में भी प्रारम्भिक दिनों में मुश्किलें खड़ी करते थे, शीघ्र ही स्वयं को काबू कर लेते थे और अच्छा व्यवहार करने लगते थे।

एक दिन गुरु सर्वज्ञानी ने अपने विद्यार्थियों को एक निश्चित-कार्य करने के लिए दिया। गुरुकुल के पास के जंगल में एक औषधीय जड़ी उपलब्ध थी। उस जड़ी से सारे दर्द दूर हो जाते थे। ये जड़ी एक पहाड़ी की तलहटी में उगती थी जिसकी उस इलाके के जंगली लोगों द्वारा पूजा की जाती थी। वे उस पहाड़ी को अपनी देवी की तरह मान कर उसकी पूजा करते थे। गुरु सर्वज्ञानी ने उन से कहा कि जो कोई उस जड़ी को ले आएगा वही उनके विद्यार्थियों में सब से योग्य समझा जाएगा।

प्रसन्न वर्मा को छोड़कर प्रत्येक विद्यार्थी ने

सीता सत्य

गुरु का आशीर्वाद लिया और काम पर चल पड़े। गुरु सर्वज्ञानी ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और पूछा, ''क्या तुम अपने आप को सर्वश्रेष्ठ साबित नहीं करना चाहते हो?''

''गुरुजी, मैं अवश्य ही यह करना चाहता हूं। फिर भी मैं एक राजकुमार हूँ। यदि मैं इस परीक्षा में हार गया तो कहीं मुँह नहीं दिखा सकूँगा। इसलिए मैं सोच रहा हूँ कि इस परीक्षा में भाग न लूँ।''

गुरु सर्वज्ञानी ने मुस्कुराकर कहा, ''यह सच है कि तुम एक राजकुमार हो। यदि तुम भविष्य में राजा बनना चाहते हो तो तुम्हें उस पद के लिए अपेक्षित योग्यता प्राप्त करनी होगी।.सिर्फ राज-परिवार में जन्म लेने से ही वे योग्यताएँ प्राप्त नहीं हो जाती हैं। उन्हें प्रयत्न करके प्राप्त करना पड़ता है।''

गुरु के वचन सुनकर प्रसन्न वर्मा बिना देर किये जंगल की ओर चल पड़ा। वह जंगल में कुछ मील ही गया होगा कि हथियारों से सुसज्जित वनवासियों ने उसे घेर लिया। प्रसन्न वर्मा ने घोर युद्ध किया। परन्तु अन्त में उसे आत्म-समर्पण करना पड़ा। उन्होंने उसे बाँधा और अपने सरदार के पास ले गए। उसने देखा कि उसके सभी विद्यार्थी-साथी उनके द्वारा पकड़े जा चुके थे।

प्रसन्न वर्मा को वनवासियों के मुखिया के सामने पेश किया गया।

मुखिया ने बड़े अधिकार से पूछा-''तुम कौन हो?'' राजकुमार को उसके प्रश्न करने के

ढंग से क्रोध आ गया। ''ज़रा मुझे खोलो, फिर तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं कौन हूँ!'' प्रसन्न वर्मा ने कहा।

मुखिया ने शान्ति से काम लिया और अपने सेवकों को हुक्म दिया, ''मुझे यह भी देख लेने दो। इसे आज़ाद करो।'' तुरन्त वनवासियों ने राजकुमार को मुक्त कर दिया। प्रसन्न वर्मा तुरन्त मुखिया पर झपटा और उसकी गर्दन पकड़ ली। इससे वनवासी क्रोधित हो गए। वे विरोध में चिल्लाने लगे। प्रसन्न वर्मा दूने उत्साह से मुखिया से लड़ने लगा। उसने उसके हरेक वार का जवाब दिया और अन्त में उसे कैद कर लिया।

अचानक हुई इस घटना को न समझ पाने के कारण, दल के बुज़ुर्ग गुस्से से चिल्लाने लगे

और उन्होंने प्रसन्न वर्मा पर आक्रमण कर दिया।

परन्तु उनके मुखिया ने उन्हें रोका। उसने उनसे कहा, ''यह सभ्य व्यक्ति सचमुच महान योद्धा है। ऐसे वीर का हमें आदर करना चाहिए न कि उसका अपमान करना चाहिये।

प्रसन्न वर्मा ने गर्व से पूछा, ''अब तो तुम समझ गए हो कि मैं कौन हूँ?'' वनवासियों के मुखिया ने हँस कर कहा, ''वीरों का आदर करना हमारी परम्परा है। महाशय! कृपया बताइये कि पुरस्कार के रूप में आप क्या चाहते हैं?''

''मुझे वह औषधीय जड़ी दे दीजिये जो आपके दैवीय पर्वत की तलहटी में मिलती है।'' प्रसन्न वर्मा ने कहा।

मुखिया स्वयं जाकर वह औषधीय पौधा ले आया और राजकुमार को दे दिया। फिर उसने कहा, ''कृपया मुझे बताइये यदि आप और कुछ चाहते हो।''

''मेरे सब साथियों को छोड़ दो।'' प्रसन्न वर्मा ने कहा। मुखिया ने सारे विद्यार्थियों को छोड़ दिया और उनके साथ आदर से पेश आया। उसने उन सब को वापस गुरुकुल भेज दिया।

प्रसन्न वर्मा को आशा थी कि औषधीय जड़ी लाने और अपने साथियों की जान बचाने के लिए गुरुजी उसकी बहुत प्रशंसा करेंगे। परन्तु गुरु सर्वज्ञानी ने पौधा तो ले लिया पर उसकी प्रशंसा में एक शब्द भी न कहा।

फिर, कुछ दिनों के बाद प्रसन्न वर्मा को उस बाघ को मारने का काम सौंपा गया जो गुरुकुल के आसपास रात को शिकार करता था और उस परिसर में विचरण करने वाले हिरण, खरगोश और ढोरों को मार देता था।

प्रसन्न वर्मा ने बाघ के पैरों के निशानों का अनुसरण किया और उसकी विचरने की आदतों का विश्लेषण किया। तीन दिन में उसने अपने ज्ञान का प्रयोग करके बाघ पर घात लगाई और उसे मार डाला।

वह उसके मृत शरीर को घसीटता हुआ गुरुकुल में लाया और अपने गुरु सर्वज्ञानी के सामने छोड़ दिया। तब भी गुरुजी ने एक शब्द भी नहीं कहा।

स्नातक होने का दिन आया। प्रसन्न वर्मा ने अपनी गुरुकुल की शिक्षा पूर्ण कर ली थी और वह वापस राजधानी जाने के लिये तैयार था। उसके गुरु ने उसे पास बुलाया और कहा, '' मैं

जानता हूँ इन दिनों तुम्हें कितनी निराशा हो रही थी क्योंकि मेरे द्वारा बताये हुए प्रत्येक कार्य को बहुत ही कुशलता से तुमने किया लेकिन मैंने एक भी शब्द प्रशंसा का नहीं कहा।''

''अब जब इस गुरुकुल में तुम अपनी शिक्षा पूर्ण कर चुके हो मुझे तुमसे कुछ कहना है इस आशा के साथ कि तुम उसे हमेशा याद रखोगे। किसी नेता के लिए दूसरों से प्रशंसा की अपेक्षा करना मानसिक कमजोरी का संकेत है।''

''यदि तुम अपनी उपलब्धियों के लिए दूसरों द्वारा तारीफ़ की अपेक्षा रखते हो तो इसका मतलब यह है कि तुम अपनी योग्यता को कमतर आँकते हो। जब तक तुम दूसरों से प्रशंसा की उम्मीद रखोगे तब तक तुम मानसिक रूप से बलवान नहीं बनोगे और लोगों को आगे नहीं ले जा सकोगे।''

''तुम्हारा गुरु होने के नाते यदि मैं तुम्हारी प्रशंसा करता तो समझो कि मैं यह कहता कि यह तुम्हारी प्राप्ति की सीमा है। इसके बदले मैं चुप रहा जिसका तात्पर्य यह था कि ''मैं इतने भर के लिए तुम्हारी प्रशंसा नहीं करूँगा क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी योग्यता इससे भी बढ़कर है। शायद तब तुम मेरी टिप्पणी के अभाव में इतने निराश न होते।''

''आज मैं यह कहूँगा कि तुम मेरे शिष्यों में सब से अच्छे हो। अब तुम जा सकते हो। आत्मविश्वास के साथ अपने राज्य की प्रजा की भलाई के लिए अपने ज्ञान और अपनी योग्यताओं का प्रयोग करो। पूरे मनोयोग से अपने राज्य का शासन करो। इस बात का ध्यान रखो कि ज़मीन उपजाऊ हो, लोग सुखी और सन्तुष्ट हों। मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।'' उन्होंने अपना हाथ उठाकर राजकुमार को आशीर्वाद दिया।

आत्मविश्वास से भरा और प्रोत्साहित राजकुमार अच्छी तरह शासन करने की इच्छा के साथ अपने राज्य की ओर चल पड़ा।

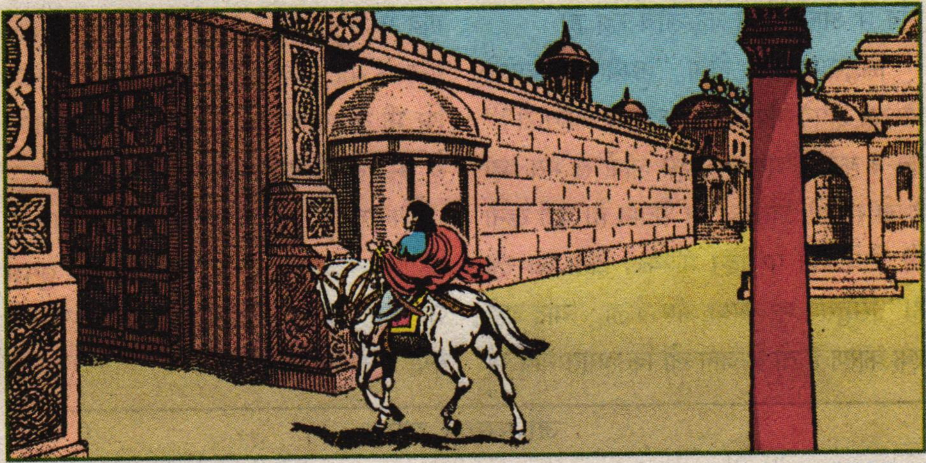

अपना अपना नज़रिया

सिरिपुरम गाँव के लोग अपने गाँव के सिद्धराम नाम के व्यक्ति को बड़ा सलीके वाला और बहुत ज्ञानी समझते थे और उसका बहुत आदर करते थे। एक दिन वह गाँव की चौपाल पर कुछ लोगों से बात कर रहा था, उसी समय एक व्यक्ति आया और अपना परिचय दिया। उसने कहा, ''साहब, मेरा नाम देव है। मैं आपके पास के गाँव घनपुरम का रहनेवाला हूँ। मैं आपके गाँव में आकर रहने का सोच रहा हूँ।

सिद्धराम ने उत्तर दिया, ''कृपया मुझे बताओ कि तुम अपने गाँव को क्यों छोड़ना चाहते हो?'' देव ने कहा, 'मेरा गाँव ऐसे लोगों से भरा पड़ा है जो स्वार्थी, लड़ाकू और शैतान हैं। वहाँ रहना मेरे लिये दिन पर दिन मुश्किल होता जा रहा है।'' सिद्धराम मुस्कुराया और बोला, ''यदि यही एक कारण है तो ये जान लो कि हमारा गाँव भी तुम्हारे गाँव से कुछ अधिक अच्छा नहीं है।'' देव बोला, ''अच्छा ऐसा है?'' और वहाँ से चला गया। दूसरे गाँववाले जो वहाँ खड़े थे सिद्धराम को अपने गाँव के बारे में इस तरह कहते सुनकर अचम्भे में रह गए।

कुछं दिनों बाद, देव किसी और आदमी के साथ आया, ''साहब, ये सज्जन, रामराज, भी मेरे ही गाँव के हैं। ये भी मेरे गाँव से आपके गाँव में आना चाहते हैं। आपने जो कुछ अपने गाँव के बारे में कहा था वह मैंने इन्हें बताया। फिर भी ये आपके मुँह से वह सब सुनना चाहते हैं, इसलिए मैं इन्हें साथ लाया हूँ।''

रामराज ने हाथ जोड़कर सिद्धराम को नमस्कार किया। सिद्धराम ने उससे पूछा, ''देव ने तुमसे जो कुछ कहा उसके बाद भी तुम हमारे गाँव में क्यों रहना चाहते हो?''

जोन्नलगड्डा रत्ना

रामराज ने उत्तर दिया, "साहब, मैं जहाँ रहता हूँ वहाँ रहने में मुझे कोई तकलीफ नहीं है। न ही मैं यह कह सकता हूँ कि वहाँ के लोग दयालु या मिलनसार नहीं हैं। मैं कुछ बदलाव और कुछ आप जैसे आदरणीय लोगों से परिचय की चाह में यह चाहता हूँ।" तब सिद्धराम ने उससे कहा, "यदि यह बात है तो बिना किसी हिचकिचाहट के तुम हमारे गाँव में रहने आ सकते हो। जैसे लोगों के बीच तुम रहना चाहते हो ऐसे यहाँ बहुत हैं।"

देव को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने पूछा, "कुछ ही दिन पहले तो आपने मुझे अपने गाँव के बारे में कुछ और बताया था।"

सिद्धराम धीरे से हँसा और बोला, "हम जिस तरह से संसार को देखते हैं वह इस पर निर्भर है कि वह हमें कैसा दिखता है। हमारा खुद का नज़रिया यह तय करता है कि हम उसे कैसे देखते हैं। तुम्हें तुम्हारे गाँववाले स्वार्थी, शैतान और झगड़ालू मालूम पड़ते हैं जबकि रामराज को वे दयालु और मिलनसार लगते हैं। मुझे लगा कि तुम्हें यहाँ के लोग भी अपने इस रुख के कारण वैसे ही लगेंगे। तुम्हारे इसी नज़रिये के कारण मैं तुम्हारे इस गाँव में आकर रहने से खुश नहीं था। इसलिए मैंने तुमसे वह सब कहा।" यह सुनकर, रामराज और देव दोनों कहने लगे, "अब हमें समझ में आया कि हमें अपना गाँव छोड़ने की जगह ये कोशिश करना चाहिये कि अपने विचारों को उदार बनायें और उस जगह की, जहाँ हम रहते हैं, और वहाँ रहने वाले लोगों की प्रशंसा करें," और उससे विदा लेकर चल दिए। फिर सिद्धराम वहाँ इकट्ठे लोगों से बोला, "आप लोग समझ गए कि मैंने देव से इस तरह क्यों कहा? इसे एक अवसर की तरह लिया जाना चाहिए अपने विचारों का पुनर्मूल्यांकन करने और दूसरों के प्रति अपना नज़रिया सुधारने के लिए।"

गाँववालों को एक नया सन्देश मिला और वे खुश होकर चल दिए।

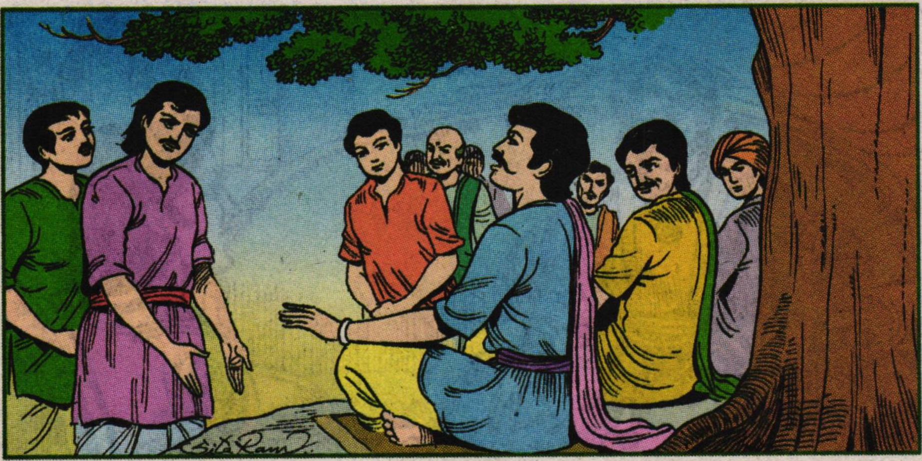

रहस्यमय उपहार

राजकुमार अनन्तसेन को राजकुमारी सान्तना का वह चित्र पसन्द आया जो उसे विवाह के प्रस्ताव के रूप में भेजा गया था। फिर भी राजकुमार उस राजकुमारी की बुद्धि की परीक्षा करना चाहता था। उसने राजकुमारी को उपहार के रूप में कसावा की जड़ें भेजीं। जवाब में उसने ज्वार के दाने एक डलिया में बन्द करके राजकुमार को भिजवा दिए। राजकुमार उपहार को देख कर मुस्कुराया और उसने डलिया भर कर बाजरे के दाने राजकुमारी को भिजवा दिये। अगले दिन उसे राजकुमारी की ओर से दो चावल से भरी डलियाँ मिलीं। राजकुमार ने उन्हें स्वीकार कर उपहार में उसे एक कुत्ता भेज दिया। राजकुमारी ने इसके जवाब में एक बन्दर भेजा। राजकुमार प्रसन्न हो गया और उसने अपने पिता राजा नागवर्धन से कहा, "प्रिय पिताजी, राजकुमारी सान्तना में भविष्य की रानी में होने वाले सब गुण हैं। अतः आप विवाह की तिथि निश्चित कर दें।" "तुम्हारे द्वारा राजकुमारी को और उसके द्वारा तुम्हें भिजवाये गये उपहारों का मतलब यदि हम जान लें तो कैसा रहे?" राजा ने पूछा। "मैंने उसे कसावा की जड़ यह जानने के लिए भेजी कि उनका देश कैसी तरक्की कर रहा है। उसने ज्वार से भरी डलिया भेज कर बताया कि वे अच्छी स्थिति में हैं व कसावा की जड़ों पर गुजारा करने की जरूरत नहीं है। मैंने बाजरा भर कर भेजा ये बताने के लिए कि वे इससे अच्छा खा सकते हैं। फिर उसने दो डलिया भर कर चावल भेज कर ये जताया कि वे इससे भी आगे बढ़ चुके हैं।" राजकुमार बोला। "फिर कुत्ते और बन्दर का क्या मतलब?" राजा ने पूछा। "ओह, कुत्ता तो मैंने उसे चिढ़ाने के लिए भेजा था। मेरा मतलब यह था कि उसे कुत्ते पसन्द हैं। फिर उसने मुझे बन्दर भेजा। वह मुझे ये सन्देश दे रही थी कि उसे मालूम है कि मैं भगवान आन्जनेय का भक्त हूं," कह कर राजकुमार हँसा। *- पुप्पाला कृष्णमूर्ति*

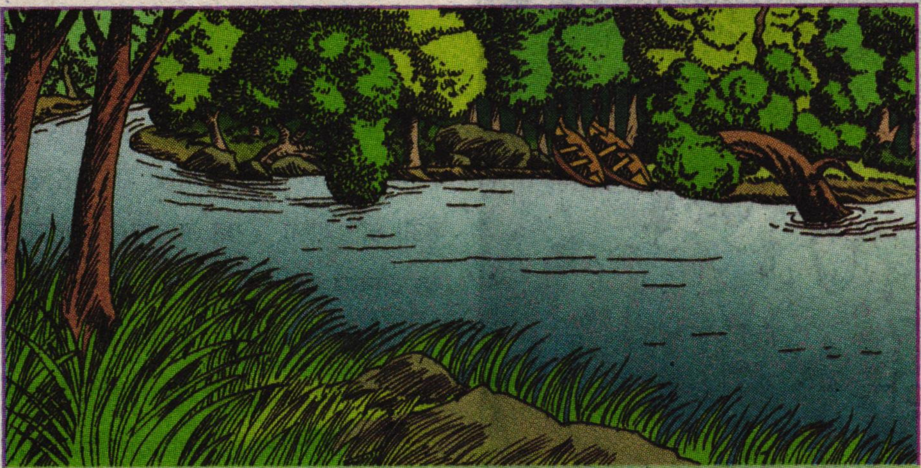

शिथिलालय-२६

(शिथिलालय का पुजारी इभ्यों को धोखा देकर एक बिल के मार्ग से भाग गया। इभ्यु नायक अपने दल के नेता नागसोम को वृच्छिक टापू का मार्ग दिखाने के लिए शिखिमुखी के साथ भेजने को मान गया। तीन बड़ी नौकाएं तैयार की गयीं। सब वृच्छिक टापू के लिए रवाना हुए। इसके बाद-)

सूर्यास्त तक शिखिमुखी के दल ने यात्रा की, तब रात के ठहरने कें लिए अनुकूल टापू की खोज करने लगे। पन्द्रह मिनट की यात्रा के बाद उन्हें एक टापू दिखाई पड़ा। नावों को किनारे के पेड़ों से बाँधकर वे लोग रसोई की तैयारी करने लगे। उन लोगों ने सोचा कि चूल्हों के धुएँ को देखकर तीसरी नाव में यात्रा करनेवाले भी थोड़ी देर में वहाँ पर आ जायेंगे।

धीरे-धीरे अंधेरा फैल गया। रसोई के बनते ही सब ने खाना खाया। एक अलाव जलाकर उसके चारों ओर बैठ गये और बातों में लग गये। तीसरी नाव अभी तक उस टापू में पहुँची न थी। शिखिमुखी को पूरा यक़ीन हो गया कि शिथिलालय का पुजारी उन लोगों से पहले वृच्छिक टापू के लिए रवाना हो चुका है। अगर कहीं उनकी रास्ते में उनकी नावों से पुजारी की नाव की भेंट हुई तो दोनों में लड़ाई निश्चित है। उस वक़्त उनमें से कुछ लोग ज़रूर जलचरों का खाना बन जायेंगे...

शिखिमुखी इस प्रकार सोच ही रहा था कि उसे टापू के पेड़ों पर पक्षियों के कलरव के साथ किनारे पर पानी में मगरमच्छ तथा

दासारी सुब्रहम्ण्यम

अन्य जलचरों की ध्वनियाँ भी सुनाई देने लगीं। उसने विक्रमकेसरी से कहा, "देखते हो न, इस टापू के चारों ओर का वातावरण कैसा भयंकर है? इससे खूंखार जानवरों वाले जंगल में रात बिताना हज़ार गुना सुखदायक होगा।"

नांगसोम ने स्वीकृति-सूचक सर हिलाया। विक्रमकेसरी ने चारों तरफ़ एक बार नज़र दौड़ाकर कहा, "तुम इस टापू के बारे में सोचते हो? मुझे तो पुजारी की याद आती है। यह सन्देह भी होता है कि उसने भी इस टापू में कहीं और जगह डेरा डाल दिया हो।"

इस पर शिखिमुखी हँस पड़ा और सूखी लकड़ियाँ अलाव में डालने लगा। अचानक टापू के एक कोने से दिल दहलानेवाली भयंकर आवाज़ सुनाई दी। लाल कुत्ता उस ओर मुख किये भूँकने लगा। शिखिमुखी झट उठ खड़ा हुआ और बोला, "यह आदमी की पुकार है या जानवर की?"

"कोई आदमी ख़तरे में फंस गया मालूम होता है या हमें धोखा देने पुजारी ने कोई चाल चली हो! हाथों में हथियार लिये अभी रवाना हो जाओ!" विक्रमकेसरी ने कहा।

अजित और वीरभद्र झट दो मशाल जलाकर आगे निकल पड़े। इस बार किसी आदमी के चिल्लाने की आवाज़ साफ़ सुनाई देने लगी। सब लोग उस आवाज़ की दिशा में दौड़ पड़े। देखा, एक लंगड़ा आदमी इधर-उधर लंगड़ाते, अपने हाथ की लकड़ी से हमला करनेवाले दो मगरमच्छों के साथ लड़ रहा है।

शिखिमुखी उस लंगड़े की रक्षा करने आगे कूद पड़ा। इतने में लाल कुत्ता भूँकते हुए लंगड़े पर झपट पड़ा। कुत्ते की भूँक सुनकर काँपते हुए लंगड़ा बोला, "शिखी साहब, पहले आप मेरी रक्षा मगरमच्छों से नहीं, बल्कि लाल कुत्ते से कीजिये। इसके बाद आप मुझे जो भी सज़ा देना चाहें, दीजिये।"

उस लंगड़े की आवाज़ सुनकर सबने समझ लिया कि वह और कोई नहीं, बल्कि उन्हें दगा देकर भागनेवाला जांगला ही है। चाहे वह दुष्ट

ही क्यों न हो, उसे कुत्ते से नुचवाना मानवता नहीं कहलाती, इसलिए शिखिमुखी ने लाल कुत्ते को अपने पास बुलाया और अपने हाथ की तलवार से एक मगरमच्छ के सर पर प्रहार किया। इसी वक़्त अजित ने दूसरे मगरमच्छ पर भाला चुभोया।

दोनों मगरमच्छ चोटों से ज्यादा मशालों की रोशनी से डर गये और झटपट पानी में कूद पड़े। जांगला हाँफ़ते हुए ज़मीन पर लुढ़क पड़ा। वह कुछ कहना चाहता था, मगर उसके मुँह से बोल नहीं फूटे।

शिखिमुखी और उसके साथी इस विचित्र घटना पर चकित हुए। वे सोच भी नहीं पाये कि इतनी रात बीते जांगला उस टापू में कैसे पहुँचा। मगर विक्रमकेसरी के मन में यह सन्देह पैदा हुआ कि पुजारी ने उन लोगों के रहस्य का पता लगा़ने जांगला को तो नहीं भेजा।

शिखिमुखी जांगला से कुछ पूछने ही जा रहा था कि इतने में विक्रमकेसरी ने तलवार उठा कर पूछा, ''जांगला, सच बताओ वरना तुम्हारा दूसरा पैर भी तोड़कर जान के साथ मगरमच्छों के बीच फिंकवा दूँगा। तुम्हारा मालिक वह कम्बख़्त पुजारी इस टापू में कहाँ पर छिपा हुआ है?''

ऐसा लगा कि इस सवाल को सुनकर

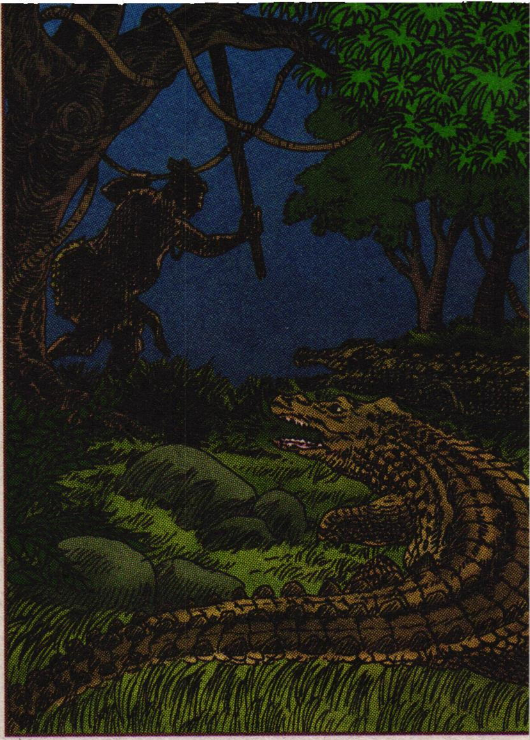

जांगला भयभीत नहीं हुआ है। उसने इस तरह गहरी साँस ली, मानो जिन्दगी से ऊब गया हो, तब बोला, ''विक्रम साहब, मैंने आप लोगों के साथ जैसा द्रोह किया है, उसे देखते हुए चाहे मैं सच भी बता दूँ, आप लोग यक़ीन नहीं करेंगे। इसलिए आप मुझे वही दण्ड दीजिये जो दिल से देना चाहते हैं।''

''यह कपट नाटक मेरे सामने नहीं चलने का है। सच बताते हो कि नहीं?'' ये शब्द कहते विक्रम ने जांगला की गर्दन पर तलवार टिकायी।

शिखिमुखी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''विक्रम, लगता है कि तुम अपनी प्रतिज्ञा भूलकर उसकी गर्दन काट रहे हो। अभी अभी तुमने

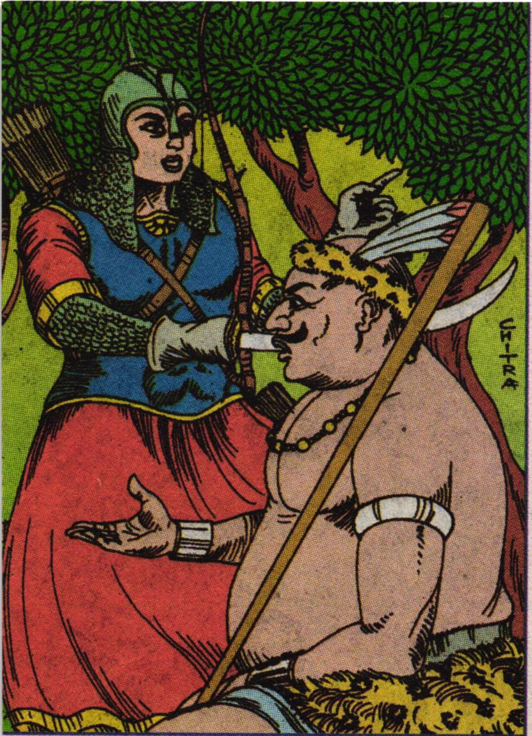

बताया कि जान के साथ उसे मगरमच्छों का खाना बनाओगे। ज़रा ठहरो तो। जांगला! तुम्हारी हालत देखने पर मालूम होता है कि तुम आराम की मौत मरना चाहते हो। मगर याद रखो कि तुम सच न बताओगे तो विक्रम तुमको जीवित ही मगरमच्छों का आहार बना देगा। समझे?''

जांगला पल-भर मौन रहा, तब बोला- ''शिखी साहब, अपराधी के मरते वक़्त चाहे सच बोले या झूठ, दोनों बराबर हैं। लेकिन मौत के पहले मैं जो सच्ची बात बताने जा रहा हूं, वह आपके लिये लाभदायक होगी। दुष्ट पुजारी आज दुपहर को दो नावों में शिथिलालय वाले टापू की ओर चला गया है। आप लोगों के वहाँ पहुंचने तक आपका अहित करने की ताक में वह बैठा होगा। इसलिए सावधान रहिये।''

शिखिमुखी को लगा कि जांगला की बातों में असत्य नहीं है। उसने विक्रम को अलग ले जाते हुए जांगला से कहा, ''सुनो, ऐसी बात है तो तुम अपने मालिक के साथ न जाकर इस मगरमच्छों वाले टापू में क्यों उतर पड़े?''

''मरने के पहले कम से कम सच्ची बात बताने के लिए रह गया, साहब! मैंने आपको दगा देने का जो द्रोह किया, उसकी वज़ह से चीते के हाथों में फंसकर लंगड़ा बन गया। मेरे पाप ने ही मुझे दण्ड दिया।''

''कामाख्यानगर में इज्जत की जिन्दगी जीनेवाले मुझे धन का लोभ देकर दुष्ट पुजारी ने बदमाश बनाया। मौक़ा पाकर मैंने उसे ख़तम करना चाहा, लेकिन वह दुष्ट ग्रहों का उपासक है। शायद उसने मेरे विचारों को भाँप लिया, इसलिए मुझे भयंकर जल-जन्तुओं का आहार बनाना चाहा।'' जांगला ने कहा।

''तुमको जल-जन्तुओं का आहार बनाया, यह कैसे संभव हुआ?'' शिखिमुखी ने अचरज में आकर पूछा।

जांगला ने कहना प्रारंभ किया, ''गोलभरा प्रदेश की नदी से लेकर यहाँ तक जब उसकी नावें बढ़ती चली आ रहीं थीं, तब से मैं चारों

तरफ़ के टापुओं को ध्यान से देखते उसका परिशीलन करने लगा। मैं एक कुशल तैराक हूँ। पुजारी के दल को मौका पाकर किसी नदी में डुबोकर मैं किसी तख़्ते की मदद से गोलभरा लौट जाना चाहता था। यह मेरी योजना थी। लेकिन उस दुष्ट ने मेरी योजना को भाँप लिया। आज दुपहर को जब नौकाएँ इस टापू के किनारे आगे बढ़ रही थीं, तब उसने नौका में से पानी में झाँक कर देखा और बोल पड़ा, "ओह, शिथिलेश्वरी के कंठाभरण महा जलसर्प ने दर्शन दिया है? उसे प्रसाद चढ़ाना होगा? ज़रूर चढ़ाउँगा। एक सजीव प्रसाद को स्वीकार कर हमें सुरक्षित शिथिलेश्वरी के मंदिर में पहुँचा दो।" ये शब्द कहते उसने आँखें बन्द कर अपने पीताम्बर को उछाल दिया। वह सीधे आकर मेरे सर पर गिर पड़ा। तुरन्त वह चिल्ला पड़ा, "ओह, जांगला! तुम्हारी किस्मत को क्या कहें? तुम शिथिलेश्वरी के सेवक का आहर बनकर अगले जन्म में सारी इभ्यु जाति का नेता बन कर जन्म लेने वाले हो।"

"मैं यह सोच ही रहा था कि वह दुष्ट क्या करने वाला है? इसी बीच उसने सवरगीध को इशारा किया। सवरगीध ने एक ही छलाँग में आकर मुझे नाव से पानी में गिरा दिया। मैं डूब जाने का अभिनय करके पानी के भीतर ही तैरते हुए समीप के इस टापू में आ पहुँचा।

मैं थकावट और भूख से शिथिल हो गया था। ऐसी हालत में मगर-मच्छों ने मुझ पर हमला कर दिया। आपने आकर मेरी रक्षा की। वरना मैं मर जाता। यही मेरी कहनी है।"

शिखिमुखी ने विक्रमकेसरी की ओर देखा। वह दूसरी ओर मुड़कर सोच रहा था। शिखिमुखी ने थोड़ी देर तक ठहरकर पूछा, "विक्रम, तुम्हारा क्या विचार है? जांगला की बातों पर विश्वास कर सकते हैं या नहीं?"

"उसने अपनी कहानी इस ढंग से बतायी की हमें उस पर विश्वास करना पड़ रहा है।" विक्रमकेसरी ने जवाब दिया।

विक्रम की बातों पर हँसकर शिखिमुखी ने यही सवाल अजित, वीरभद्र और नांगसोम से

पूछा। उन लोगों ने भी कहा कि जांगला का जवाब विश्वसनीय होता है।

"तब तो कल सुबह हम लोग जांगला को अपने साथ ले जायेंगे? क्यों विक्रम? ठीक है न?" शिखिमुखी ने पूछा।

"ज़रूर उसे हम अपनी नावों में साथ ले जायेंगे। फिर दगा देने की कोशिश की तो इस बार ज़रा भी मौक़ा दिये बिना तलवार से उसका शरीर टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।" विक्रमकेसरी ने कहा।

सब लोग वहाँ से निकल पड़े। तब जांगला ने शिखिमुखी और विक्रमकेसरी के पैर छुये, और लाठी की मदद से लंगड़ाते पीछे चलने लगा।

दूसरे दिन सवेरे ही लोग जाग पड़े। कालकृत्यों से निवृत्त होकर यात्रा के लिए नावों को तैयार किया। जांगला को शिखिमुखी और विक्रमकेसरी द्वारा नाव में चढ़ाया गया। शिखिमुखी ने यह सोचकर ऐसा प्रबंध किया कि ज़रूरत पड़ने पर डांड चलाने में वह वीरभद्र की मदद कर सकता है। रवाना होने के पहले उन लोगों ने इभ्युदल के साथ पीछे आनेवाली नाव के रास्ते चारों तरफ़ नज़र दौड़ाकर देखा। नाव का कहीं पता न था। शिखिमुखी और विक्रमकेसरी को यह संदेह हुआ कि वे लोग रास्ता तो भटक नहीं गये?

हवा का रुख़ अनुकूल था। इसलिए डांड चलाना छोड़ पाल उठाये गये। नांगसोम और वीरभद्र की नाव आगे जाने लगी। दुपहर के क़रीब शिखिमुखी यह सोचने लगा कि किसी टापू में उतरकर रसोई बना लें, तब एक टापू के मोड़ पर जल की तरंगें उठ-उठकर नाव की ओर आने लगीं। किसी की भी समझ में न आया कि उस प्रशांत जल में हठात् ऊँची-ऊँची लहरें कैसे उठने लगीं?

नांगसोम ने अपनी नौका को डांडों की मदद से पास के टापू की ओर ले जाते शिखिमुखी को भी सचेत किया। इतने में टापू के नुक्कड़ पर अचानक दो नावें लहरों के थपेड़े खाकर डोलते हुए उनकी तरफ़ आने लगीं।

उस नाव में बैठे हुए लोगों को शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने झट पहचान लिया। एक नाव में हाथ उठाकर खड़े हो शिथिलालय का पुजारी चिल्ला रहा था, ''जलसर्प हमको निगलना चाहता है। नावों को किनारे की ओर ले जाओ।''

देखते-देखते वह जलसर्प भी शिखिमुखी के दल को दिखाई पड़ा। उस सर्प का कंठ और सर सर्प जैसे थे, मगर शरीर दस-बारह हाथियों के परिणाम में लंबा था। वह अपने पैरों से पानी को उछालते हुए सर उठाकर पुजारी के दल को पकड़ने के लिए ऊपर-नीचे उलटा रहा था।

उस दृश्य को देख शिखिमुखी के साथ सब लोग थर-थर काँपने लगे। भाग्यवश उनकी नावें टापू के समीप में थीं, इसलिए वे जल्द ही किनारे पर पहुँच सके। पर शिथिलालय के पुजारी की नौकाएँ जलसर्प के पीछा करते रहने के कारण जो ऊँची लहरें उठी, उनमें फँसकर डाँवाडोल हो पानी में जाने लगीं।

शिखिमुखी का दल किनारे खड़े हो देख ही रहा था कि जलसर्प ने पुजारी की नाव में अपना सर बढ़ाकर एक को निगल लिया। पुजारी और उसके अनुचर पागलों की तरह चिल्लाते नावों को डांडों द्वारा दूर खेने लगे। जलसर्प उस आदमी को निगलने के लिए पल भर रुका और फिर उनका पीछा करने लगा।

''शिखी, यही अच्छा मौक़ा है। शायद वह दुष्ट पुजारी मेरे बाणों के क्षेत्र में हो, बाण चलाकर देखता हूँ। कहकर विक्रम ने धनुष-बाण हाथ में लिये और पुजारी की नाव पर बाण छोड़ने लगा। ***(और है)***

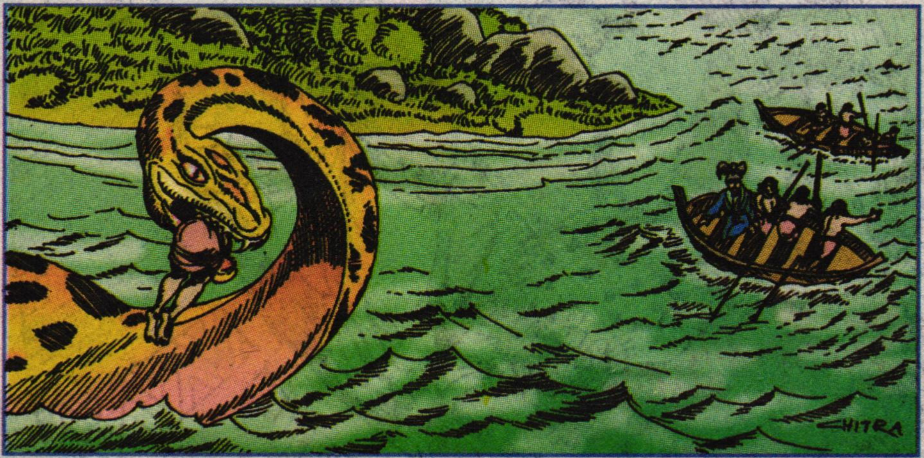

चतुराई

''आजकल कीमतें इतनी बढ़ गई हैं कि सब्जी बेचने को मुनाफ़े का धंधा बनाना बड़ा मुश्किल है,'' कहते हुए सूर्या जमीन पर बैठ गया। ''आप ऐसा क्यों कह रहे हो? यही व्यवसाय तो हम सब से अच्छी तरह जानते हैं। सिर्फ़ हमें थोड़ा तेज बनना पड़ेगा। यदि हम कोई दूसरा धंधा शुरू करें तो उसमें भी हमें जम जाने तक संघर्ष करना पड़ेगा,'' आशावादी बनते हुए उसकी पत्नी ने कहा। ''मुझे आश्चर्य है कि तुम ये कैसे कह सकती हो। लगभग एक घंटे तक मैं चिल्ला चिल्ला कर लोगों को आकर्षित करने के लिए, 'चालीस रुपये किलो, चालीस रुपये किलो' बोलता रहा। मुश्किल से कोई खरीदने आया,'' थकी हुई आवाज़ में सूर्या ने कहा।

''तुम थोड़ी देर आराम करो। मैं सब्जी बेचूँगी,'' रत्ना ने मदद के लिए कहा। सूर्या झपकी लेने चला गया। एक घण्टे बाद जब वह उठा तो उसने देखा कि सभी सब्जियाँ बेची जा चुकीं हैं। सूर्या ने सन्देह करते हुए पूछा ''क्या तुमने उन्हें नुक्सान उठाकर बेच दिया?''

''मैंने उन्हीं दामों पर बेचा जो तुमने बताये थे। मैंने थोड़ी देर इस बारे में सोचा। फिर 'चालीस रुपये किलो' चिल्लाने के बजाय मैंने 'दस रुपये में पाव किलो' चिल्लाना शुरू किया। चालीस रुपये की जगह दस रुपये सुनकर ज्यादा लोग ठेले के पास आने लगे। कितने वजन का सामान मिलेगा इस के बजाय मूल्य पर उनका ध्यान ज्यादा गया। इस प्रकार, यह न सोचते हुए कि मैं भी उसी कीमत पर बेच रही हूँ, उन्होंने अपनी जरूरत की चीज़ें खरीद लीं।''

सूर्या ने अपनी पत्नी की चतुराई की तारीफ़ की और नये आत्म-विश्वास के साथ सब्जी बेचने का धंधा चालू रखा।

- बी.व्ही. पटनायक

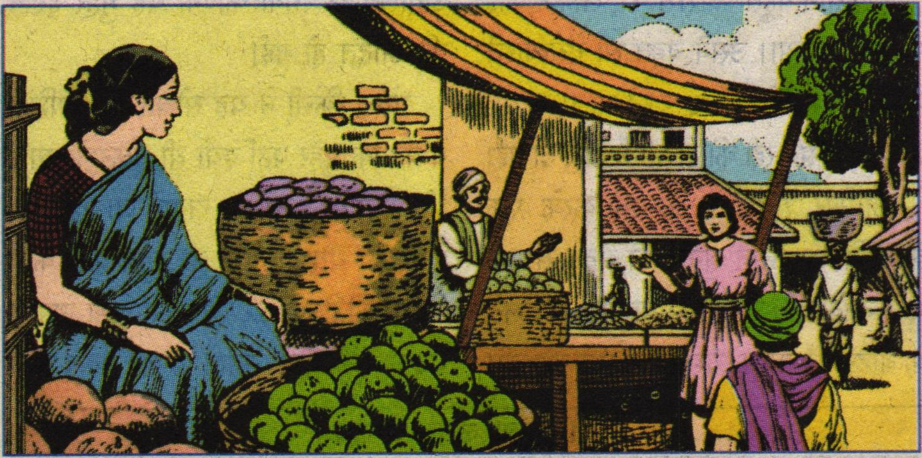

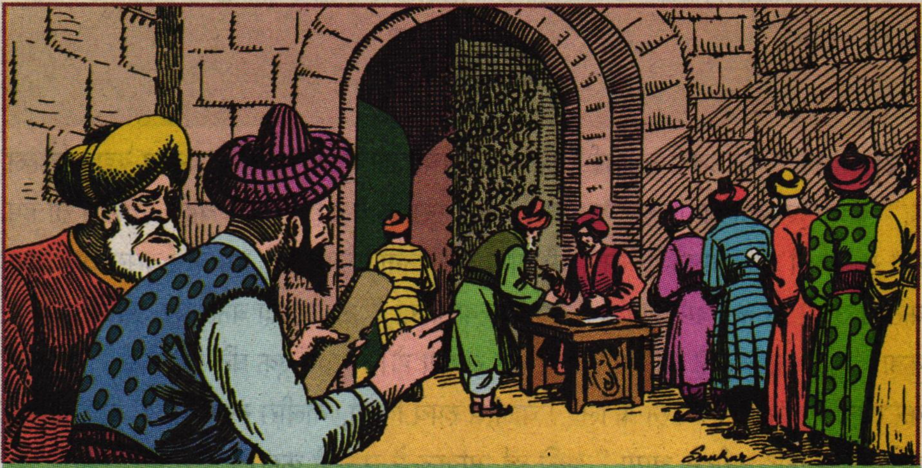

अन्धी सरकार

किसी ज़माने में हैदराबाद शहर के पास शकुरा नाम का एक गरीब रहा करता था। वह नवाब के यहाँ छोटी- मोटी नौकरी करके कम से कम दो तीन रुपये का वेतन लेकर अपना गुज़ारा करने हैदराबाद शहर आया। उन दिनों दो रुपये के वेतन पर ही अच्छा गुज़ारा हो जाता था।

शकुरा ने बहुत कोशिश की, लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ। उसने बहुत सी दरख्वास्तें भेजीं। चूँकि कोई मदद करने वाला न था, इसलिए वे सब रद्दी की टोकरी में डाल दी गईं।

आखिर शकुरा ने हिम्मत करके एक काम किया। उसने सुनार की मदद से एक मुहर बनवा ली। उसे लेकर वह बड़ी अदालत के बाहर बैठ गया। सामने एक मेज रख ली। जो कोई अन्दर अर्जी या दरख्वास्त देने जाता तो वह उस पर मुहर लगाता और उनसे एक पैसा वसूल कर लेता।

लोगों ने सोचा कि यह सब सरकार की ओर से ही किया जा रहा था। अर्जी देनेवाले मुहर लगवा कर ही कर्मचारियों के पास भेजते। जल्दी ही यह रिवाज़ सा हो गया। अदालत के लोगों को भी यह मुहर देखने की आदत हो गई।

परन्तु किसी ने यह सोचने की कोशिश न की कि मुहर वहाँ क्यों थी, किसने लगाई थी, किसके हुक्म पर लगाई जा रही थी। शकुरा ने थोड़े दिनों में ही बहुत कुछ कमा लिया। फिर उसे डर लगा कि कहीं उसका भेद न खुल जाये, नवाब उसको पकड़ न ले

जी. सत्य जगन्नाथ राव

और उसका सिर न कटवा दे। इसके लिये भी उसने एक उपाय सोचा। वह एक मुहर के लिए एक पैसा वसूल न करके दो-दो पैसा वसूल करने लगा। इसमें से एक वह खुद ले लेता और दूसरा जमा करके रखता।

इस तरह करते करते दस साल गुज़र गये। फिर न मालूम क्यों एक दिन शकुरा अदालत न जा सका। उस दिन जो अर्जियाँ पेश की गईं, उन पर मुहरें न थीं।

गुमाश्ता ने कहा, "इन पर मुहरें नहीं हैं, ये नहीं ली जायेंगी।" बात होते-होते बड़े कर्मचारी के पास गई। उन्होंने पूछ ताछ की कि यह मुहर है क्या? कौन इसे लगा रहा है?

पुरानी अर्जियाँ मंगाकर देखी गईं। उनमें यह लिखा था, अन्धी सरकार, पीतल दरवाज़ा, शकुरा मुहरा। यह बात नवाब तक पहुँची। उसने शकुरा को पकड़ कर लाने के लिए कहा। सिपाहियों ने शकुरा को लाकर नवाब के सामने हाज़िर किया। उसे डर था ही कि यह किसी न किसी दिन होगा। इसलिए वह जमा किये हुए पैसे लेकर नवाब के पास गया।

नवाब ने उससे पूछा, "तुम कौन हो? यह मुहर तुम्हारी ही है? किसने तुम्हें यह हक दिया है?"

शकुरा ने कुछ न छुपाया। उसने सब साफ़ साफ़ कह दिया। "आपके हिसाब में तीस हज़ार रुपये इकठ्ठे हुए हैं, ये लीजिये रुपये।"

नवाब ने उसकी सूझबूझ की तारीफ़ की। उसको वह काम करने के लिए ही मुकर्रिर किया। मुहर में उसने "अन्धी" शब्द निकलवा दिया। बाकी मुहर वैसी ही रखी। शकुरा की मुहर बहुत दिनों तक चलती रही।

घमण्डी

एक गरीब जंगल जाकर, लकड़ियाँ काटकर, गठ्ठर बनाकर, उन्हें कस्बे में बेचने आया। कस्बे के बाजार में लोग अधिक थे।

गरीब का लकड़ियों का बोझा भारी था। इसलिए वह जोर से चिल्लाता-''हटो, हटो'' बाजार में जा रहा था।

लोग उसका चिल्लाना सुनकर हटते जाते थे। परन्तु एक घमण्डी न हटा। उसके कपड़े लकड़ियों से लग कर फट गये। उसे बड़ा गुस्सा आया। वह उस गरीब को न्यायाधिकारी के पास घसीट कर ले गया। उसने शिकायत की कि गरीब लकड़हारे ने उसके कपड़े फाड़ दिये थे।

न्यायाधिकारी ने गरीब से बहुत प्रश्न किये। परन्तु गरीब चुपचाप खड़ा रहा। आखिर न्यायाधिकारी ने ऊब कर पूछा, ''क्यों भाई, क्यों इस गूंगे को मेरे पास लाये हो?''

''हुजूर, हमेशा यूँ ही यह रूप बदलता रहता है। गली में मैंने स्वयं इसे चिल्लाता सुना है, ''हटो हटो।'' घमण्डी ने कहा।

''यह बात है, तो उसका चिल्लाना सुन कर भी यदि आप न हटे, तो यह आपकी गलती है। आपकी शिकायत रद्द कर दी जाती है,'' न्यायाधिकारी ने कहा।

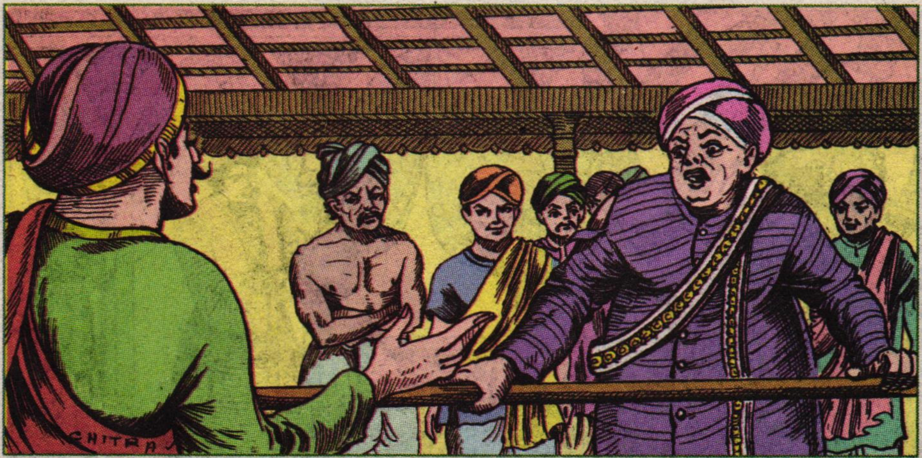

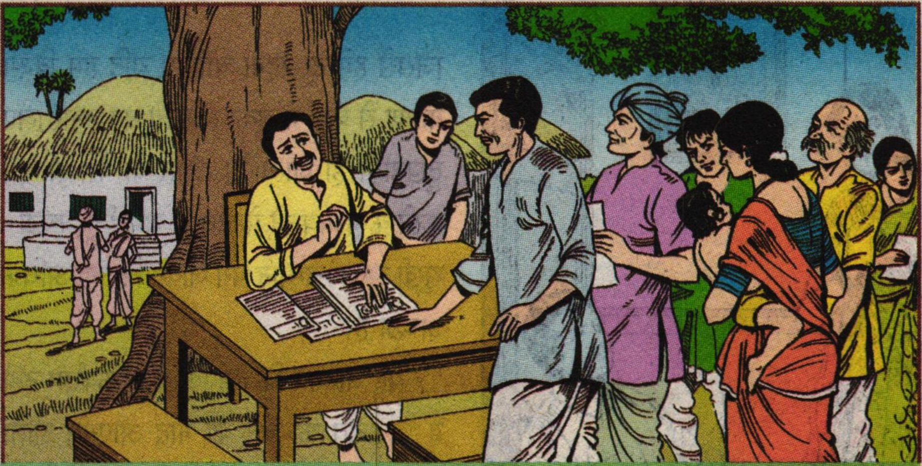

क़र्ज़ का ख़तरा

एक बार श्रीपुरम गाँव में नारायण और राममूर्ति नाम के दो मित्र रहते थे। राममूर्ति के पास दस एकड़ ज़मीन थी। नारायण के पास सिर्फ पाँच एकड़ भूमि थी जिसे वह जोत सकता था। इस तरह नारायण से राममूर्ति की माली हालत अधिक अच्छी थी।

उन दिनों रुपया उधार देनेवाले शहरों से गाँव आकर लोगों को ऋण दिया करते थे। वे लोगों को ऋण लेने के लिए प्रलोभन दिया करते थे। यहाँ तक कि वे ऋण न माँगने वालों को भी ऋण देने की पेशकश करते और उन्हें इस तरह उकसाते कि वे ऋण लेने के लिए तैयार हो जाते।

उन लोगों से वे ज़मीन या कोई और जायदाद गिरवी रखवा लेते। कभी-कभी वे किसी ऋण लेने वाले से कोरे कागज़ पर दस्तख़त भी करवा लेते। गाँववाले ऋण लेने के लिए इसलिए आकर्षित होते थे कि उन्हें आसानी से एक बड़ी रकम मिल जाती थी। इस ऋण पर उन्हें अत्यधिक ब्याज देना पड़ता था। फिर भी वे तुरन्त होने वाले फायदे के कारण ऋण लेने से हिचकिचाते नहीं थे। राममूर्ति को खेती के लिए ऋण की जरूरत न थी। फिर भी वह इन ऋणदाताओं से पैसा उधार लिया करता था। अपनी खेती से मिलनेवाले अन्न को वह कालेबाजार में बेच कर बड़ा मुनाफा कमाता था।

दूसरी तरफ नारायण कर्ज़ लेना पसन्द नहीं करता था। वह अपनी आय में से बीज, खाद और कीट-नाशक खरीदता और खेती में उतना ही निवेश करता जितना वह कर सकता था।

तिरुमलश्री

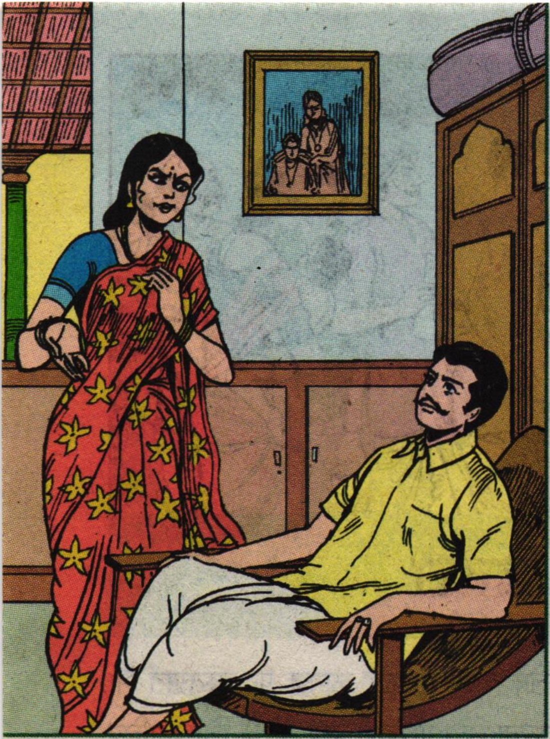

जिससे हमें दूर रहना चाहिए। यदि हम किसी कारण से कर्ज़ न चुका सकें तो वह हमारे लिए दुखदायी हो जाता है। उधार के पैसे से ऐश करने के बजाय तो मेहनत से कमाई हुई रूखी-सूखी खाकर सम्मान भरा जीवन बिताना अधिक अच्छा है।

यह जानकर कि हम किसी के कर्जदार नहीं हैं, हमें रात को चैन की नींद आएगी। सीता लक्ष्मी उसकी ओर ऐसे देखती थी जैसे वह पगला गया हो।

प्राकृतिक आपदाओं के कारण लगातार दो वर्षों तक किसानों की फसल बर्बाद हुई। वे सब मुसीबत में पड़ गए।

बड़े बड़े काश्तकार तो किसी हद तक ये नुकसान सह गए लेकिन छोटे छोटे किसान तो बुरी तरह बर्बाद हो गए। देश में खाद्यान्न की कमी हो गई।

सीता लक्ष्मी भी पति पर कर्ज लेने के लिए जोर देने लगी।

परन्तु नारायण अभी भी कर्ज़ लेने के लिए तैयार न था। उसने दृढ़ता से कहा, "यदि जरूरत पड़ी तो मैं कोई भी और छोटामोटा काम कर लूँगा परंतु मैं कर्ज़ नहीं लूँगा।" अपनी नाराज़गी दिखाने के लिये वह घर छोड़ कर अपने माता-पिता के घर चली गई।

कुछ दिन बीत गए। एक दिन, कुछ सरकारी अफसरों ने राममूर्ति के घर पर छापा मारा।

कभी-कभी पैसे की जरूरत होने पर वह अपनी पत्नी के गहने बेच देता था। और नई फसल आने पर उसे बेच कर फिर से उसके लिए गहने बनवा देता था। इसका परिणाम यह होता था कि वह अपनी पाँच एकड़ में से आधी ही जमीन पर खेती कर पाता था।

उसका मित्र राममूर्ति उसे ऋणदाताओं से ऋण ले लेने की सलाह दिया करता था। नारायण साफ़ मना कर देता था क्योंकि वह ऋण लेने के सख्त खिलाफ़ था।

नारायण की पत्नी सीता लक्ष्मी को यह ज़रा भी पसन्द न था।

नारायण यह कह कर उसको समझाने की कोशिश करता था कि ऋण एक बड़ा खतरा है

उन्होंने अनाज के भण्डार और दालों को, जो उसने काले बाजार में बेचने के लिए अलग रखे थे, जप्त कर लिया।

उस पर सज़ा के तौर पर ढेर सारा जुर्माना लगाया गया। राममूर्ति का सारा धन जुर्माने और जेल जाने से बचने के प्रयत्न में खर्च हो गया।

उसी बीच वे ऋणदाता जिन्होंने उस गाँव में किसानों को कर्ज़ दिया था वसूली के लिए आ गये। वे किसान कर्ज़ न चुका सके अतः उनकी जायदाद जप्त हो गई।

वे ऋणदाता, जिन्होंने पहले राममूर्ति को रुपया उधार लेने का निमन्त्रण दिया था, अब बिना उसकी आर्थिक स्थिति की परवाह किये उसे कर्ज़ के भुगतान की तारीख का सूचनापत्र थमा गए और उन्होंने उसकी जमीन और मकान को अधिकृत कर लिया।

नारायण को यह बात मालूम पड़ी। वह बहुत दुखी हुआ और अपने मित्र को धीरज बंधाने गया।

"सिर्फ इसलिए अन्धाधुन्ध ऋण लेते जाना, कि कोई देनेवाला है, निश्चित रूप से लेनेवाले को परेशानी में डाल देता है। पहली गलती तुमने ऋण लेकर की दूसरे तुमने काला-बाजारी को अपनाया," नारायण ने उसे प्यार से झिड़कते हुए कहा।

"चलो जो हुआ सो हुआ। अब हम मेरी पत्नी के गहने बेचकर साथ-साथ मेरी ज़मीन में पैसा लगाएँगे। चलो हम लाभ को आधा आधा बाँट लेते हैं।"

राममूर्ति का दिल अपने मित्र की दयालुता से भर आया। उसने अपने मित्र को गले लगा लिया।

सीता लक्ष्मी को गाँव में घटित हुई घटनाओं की जानकारी मिलने पर बड़ा सदमा लगा। उसे अपने पति की बुद्धिमत्ता पर विश्वास हो गया और वह अपने घर लौट आई। उसने अपने पति से अपनी बेवकूफ़ी के लिए क्षमा-प्रार्थना की।

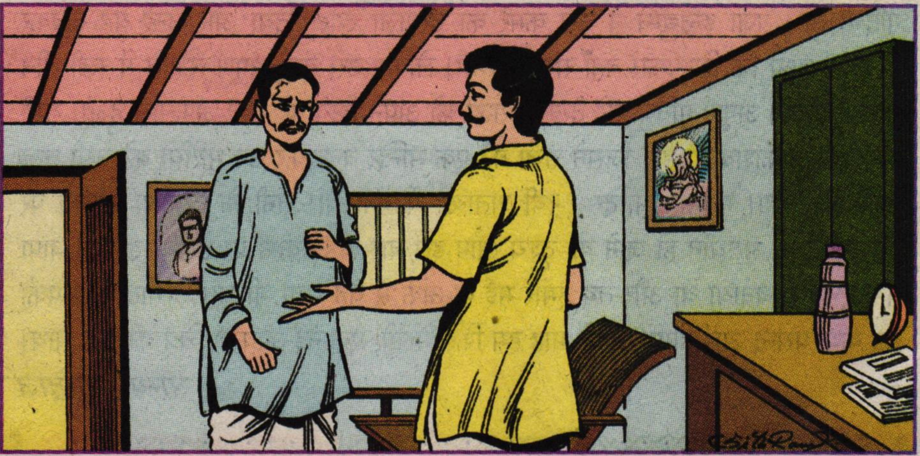

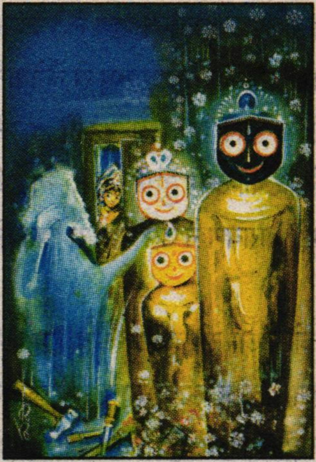

आवरण पृष्ठ की कथा

उड़ीसा के पुरी में स्थित जगन्नाथजी का मन्दिर हिन्दुस्तान के चार धामों में से एक है।

एक समय की बात है, शवर जाति का मुखिया नीलाद्रि के जंगल में चुपचाप नील माधव के रूप में भगवान की पूजा कर रहा था। अवन्ति का राजा इन्द्रद्युम्न विष्णु का अनन्य भक्त था। उसने स्वप्न देखा कि भगवान को उनके असल रूप में उत्कल में देखा जा सकता था। राजा ने विद्यापति को उस रूप की तलाश में भेजा। लेकिन मुखिया ने अपनी पूजा के गुप्त स्थान का पता बताने से इंकार कर दिया। लेकिन विद्यापति वहीं रुका रहा और अन्त में उसने उस स्थान का पता लगाकर राजा को बता दिया। किन्तु जब राजा उस गुफ़ा में पहुँचा, तो नील माधव की प्रतिमा अन्तर्धान हो चुकी थी। राजा दुःखी हो गया, लेकिन फिर उसे एक स्वप्न आया कि उसे पहले अश्वमेध यज्ञ करना चाहिये, जिसके बाद उसे समुद्र तट पर लकड़ी का एक टुकड़ा मिलेगा, जिससे वह प्रतिमा बनवा सकता है। उसने स्वप्न के अनुसार काम किया और उसे समुद्र की लहरों पर तैरता एक लकड़ी का टुकड़ा मिल गया। देवताओं के शिल्पकार, विश्वकर्मा एक बूढ़े के रूप में उसके सामने प्रकट हुए और उन्होंने मूर्ति बनाने का प्रस्ताव किया। उनकी शर्त यह थी कि उन्हें २१ दिनों तक एक कमरे में केवल उस लकड़ी के टुकड़े के साथ काम करने दिया जाए, और उस अवधि तक कोई न टोके। पहले दो सप्ताह तक तो हथौड़ी और आरी के चलने की आवाज़ें आती रहीं, लेकिन उसके बाद आवाज़ें आनी बन्द हो गईं। उत्सुकतावश रानी गुंदिचा और राजा इन्द्रद्युम्न ने उस कमरे का दरवाज़ा खोल दिया और उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि शिल्पकार वहाँ से ग़ायब था। लेकिन उसे वहाँ अपूर्ण स्थिति में रखी तीन मूर्तियाँ मिलीं। अपूर्ण मूर्तियों को देखकर राजा को अपने किये पर बहुत अफ़सोस हुआ। तभी फिर एक आकाशवाणी हुई, जिसने राजा को एक मन्दिर बनवाकर उन मूर्तियों को उसी तरह पूजने को कहा। वर्तमान मन्दिर १२वीं शताब्दी में बना था। रानी के दरवाज़ा खोलने पर विश्वकर्मा के अंतर्धान हो जाने का दृश्य आप इस बार के आवरण पर देखेंगे। इसे श्री वापा ने १९९० में बनाया था और तब हमारे मई के अंक में यह छपा भी था। उम्मीद है आपको यह कथा पसन्द आई होगी। अगले माह हम फिर मिलेंगे, एक नई आवरण चित्र कथा के साथ।

- सौम्या भारद्वाज

मैं क्या बन सकता हूँ?

गाना गाना, यह दोनों हो सकते हैं, शौक भी और व्यवसाय भी। संगीत को इन दिनों बहुत प्रशस्ति मिल रही है। यह इन दिनों में एक अच्छा करियर हो सकता है। आओ हम संगीत को बतौर प्रोफ़ेशन लेने के बारे में अधिक जानकारी लेते हैं। संगीत मानव सिद्धिओं में से एक सबसे महत्त्वपूर्ण सिद्धि है।

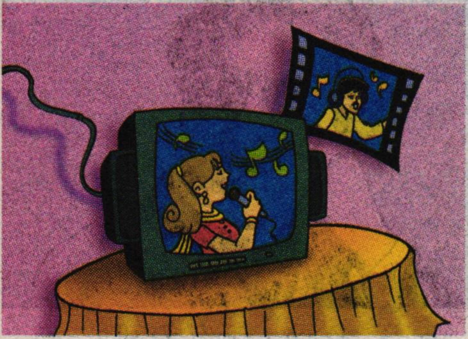

यह एक अलौकिक ध्वनि है जो भावनाओं को जन्म दे सकती है। संगीत दिमाग को हलका और तरोताजा बना देता है।

संगीत के विभिन्न प्रकार होते हैं, जैसे कि शास्त्रीय, लोक संगीत, जैज़, पॉप, फ़्युज़न इत्यादि। इस क्षेत्र में विभिन्न अवसर भी उपलब्ध हैं। एक अच्छा परफ़ॉर्मर (गायक या वादक) या एक उम्दा शिक्षक बनने के अलावा, व्यक्ति गीत रचनाकार, संगीत प्रकाशक, संगीत पत्रकार, डिस्क जॉकी/विडियो जॉकी या संगीत थेरापिस्ट भी बन सकता है। दूरदर्शन जैसे टीवी चैनल्स, ऑल इंडिया रेडियो एवं व्यक्तिगत एफएम चैनल स्टेशन्स, सांस्कृतिक एवं जनसंपर्क विभाग, संगीत शोध संस्थान, शैक्षणिक संस्थाएँ, कला केन्द्र इत्यादि अच्छे अवसर प्रदान करते हैं। समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं में भी संगीत समीक्षकों की आवश्यकता होती है। व्यक्ति अपने घर पर व्यक्तिगत तौर पर क्लासेस या स्कूल भी शुरु कर सकता है, या स्वतंत्र कार्यक्रमों का आयोजन और निर्देशन कर सकता है। आज के युग में, सेटेलाइट टेलिविज़न के आने और संगीत चैनलों की बढ़ती लोकप्रियता एवं संगीत इवेन्ट की कॉर्पोरेट स्पॉन्सरशिप ने संगीत को एक विशाल उद्योग का रुप दे दिया है।

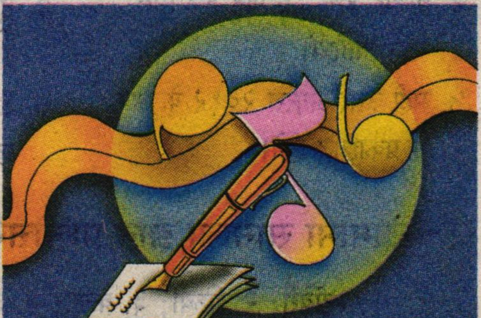

आज संगीत के एक बहुत बड़े व्यवसाय के रुप में पनपने के कारण आप अपना करियर बनाने के लिये कई विधाओं में से कोई भी व्यवसाय चुन सकते हैं। उनमें से कुछ निम्नानुसार हैं:

१. संगीत लेखक/गीत लेखक २. गायक/परफ़ॉर्मर ३. प्रोड्यूसर ४. कलाकार/संगीत मेनेजमेन्ट ५. संगीत पत्रकार ६. संगीत प्रशिक्षक/शिक्षक ७. संगीत थेरापिस्ट ८. म्युज़िकोलॉजिस्ट ९. विडियो जॉकी (वीजे) और डिस्क जॉकी (डीजे) १०. संगीत लाइब्रेरियन.

- साई

चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - ४०

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

***Co-sponsored by** Infosys*
FOUNDATION, Bangalore

सही उत्तर देने वाली प्रविष्टियों में से एक को ₹ २५०/- रुपये का इनाम दिया जाएगा।*

***यदि सही प्रविष्टियों की संख्या एक से अधिक हो तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को ₹५०/- की राशि मिलेगी।**

तुम्हें क्या करना है:

१. एक कागज पर उत्तर लिखो।
२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।
३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-४०** लिखो।
४. तुम्हारे उत्तर ३० जून तक मिल जाने चाहिये।
५. सही उत्तर अगस्त २०१२ के अंक में प्रकाशित होंगे।

भारतीय आविष्कार

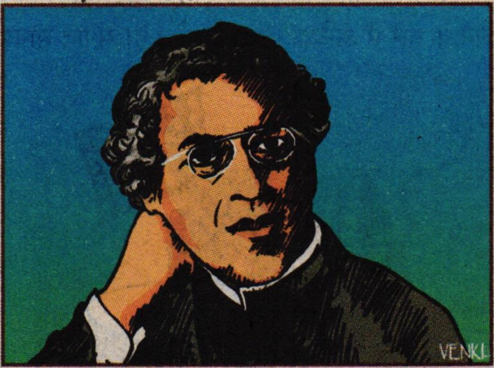

१. अंक '०' की खोज किसने की थी?
२. मोतियाबिन्द की सबसे पहली शल्यक्रिया किसने की?
३. त्रिकोणमिति के फ़ंक्शंस को किसने प्रतिपादित किया?
४. पौधों की बढ़त को मापने की मशीन का आविष्कार किसने किया?
५. शतरंज का सबसे पुराना रूप क्या है?
६. दुनिया का पहला विश्वविद्यालय कहाँ स्थापित किया गया था?
७. ८०० ई पू में पायथोगोरस थियोरम की खोज किसने की?

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-३७, फरवरी २०१२ के उत्तर:

१. स्ट्रॉबेरी; २. किवी; ३. केला; ४. आम; ५. एवोकेडो; ६. मेन्गोस्टीन; ७. विटामीन सी ८. फ्रक्टोज़।

फरवरी '१२ की सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का कोई विजेता नहीं है।

हँसते-हँसते हो जा लोट-पोट

शिक्षक : "पप्पू, तुम्हारा 'मेरा कुत्ता' पर लिखा हुआ निबंध बिलकुल तुम्हारे भाई के निबंध जैसा ही है। क्या तुमने नकल की थी?"

पप्पू : "नहीं मैडम, वो एक ही कुत्ता है....जिस पर हम दोनों ने लिखा है!"

पहला लड़का : पता है! मेरे इतिहास के प्रोफेसर ने मुझे शोध के लिए इंटरनेट के उपयोग करने की सलाह दी, यह बहुत उपयोगी रहा।

दूसरा लड़का : अच्छा!??

पहला लड़का : हाँ! मुझे १७ लोग ऐसे मिले जो शोध बेचते हैं!

एक कॉलेज के विद्यार्थी को उसके दिनभर के शेड्यूल को पूरा करने के लिए दो घंटे के किसी कोर्स की ज़रूरत थी। उसमें सिर्फ़ एक वन्यजीवन प्राणीशास्त्र का कोर्स ही फ़िट हो रहा था।

एक हफ़्ते के बाद, एक टेस्ट लिया गया। प्रोफेसर ने एक शीट थमाई जिसमे चार ब्लॉक बने हुए थे। हर ब्लॉक में पक्षियों के पैर बने हुए थे। सिर्फ पैर, न पंजा न बाकी शरीर। टेस्ट इस बारे में था कि यह पैर किस पक्षी के हैं। विद्यार्थी बहुत देर तक पेपर को देखता रहा और झुंझलाता रहा।

आखिर, वह खड़ा हुआ और वह पेपर मेज पर पटका। "यह भी कोई पेपर है भला? इतना खराब पेपर मैंने जिंदगी में नहीं देखा।"

शिक्षक ने उसे समझाते हुए कहा, "बेटा, इस तरह तो तुम इस टेस्ट में फ़ेल हो गए हो। तुम्हारा नाम क्या है?" विद्यार्थी ने अपनी पेंट को घुटनों तक उठाया और शिक्षक को दिखाते हुए कहा, "आप ही बताएँ!!"

डोनट की कहानी

डोनट के प्रेमी एडमिरल रिचर्ड बायर्ड दक्षिणी ध्रुव की यात्रा पर जाते समय अपने साथ १०० पाउंड डोनट का आटा ले गए, जो दो वर्ष के लिये पर्याप्त था।

डोनट का अपना विशेष दिवस होता है! अमेरिका में जुलाई के प्रथम सप्ताह में राष्ट्रीय डोनट दिवस मनाया जाता है। इसे १९३८ में ज़रूरतमंदों की सहायता और सैल्वेशन आर्मी के स्वयंसेवकों के सम्मान में आरम्भ किया गया था, जो युद्ध के दौरान सैनिकों को डोनट पहुँचाते थे। इस दिन, कई दुकानें लोगों में मुफ़्त डोनट बाँटती हैं।

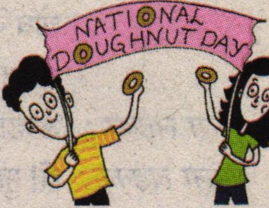

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, कई स्वयंसेवक डोनट बनाकर अमेरिकी सैनिकों का उत्साह बढ़ाने के लिये उन्हें देते थे। पहले ही दिन से ये डोनट बहुत पसन्द किये गए और सैनिकों की लम्बी कतार उनके तम्बू के सामने डोनट लेने के लिये अपनी बारी का इन्तज़ार करती थी। पहले दिन १५० डोनट्स से शुरू करके बाद में वे ९००० डोनट रोज़ बनाने लगे।

सभी डोनट छेद वाले नहीं होते। पोलेंड में बनने वाले पज़्की पारंपरिक डोनट होते हैं। इन्हें कार्निवाल के उत्सव के दौरान फ़ैट ट्यूज़डे और मार्डी ग्रास पर खाया जाता है। इस दिन डोनट की लोकप्रियता समझ में आती है क्योंकि फ़ैट ट्यूज़डे को लोग लेंट के उपवास के पहले फ़ैट युक्त भोजन करते हैं। पज़्की में दूध, अंडे, आटा, लार्ड शकर होती है और क्रीम या जैली का मिश्रण भरा जाता है।

ओलीबोलन भी एक प्रकार के बिना छेद वाले डोनट होते हैं, जिन्हें नीदरलैंड्स की जरमेनिक जनजातियाँ २६ दिसम्बर से ६ जनवरी के बीच खाती हैं। वे मानते हैं कि देवी पर्चटा और दुष्ट आत्माएँ आसमान में उड़कर सामने आने वाले किसी का भी पेट फाड़ देती हैं। लेकिन ओलीबोलन के तेल और चिकनाई के कारण उनकी तलवार उसके पेट पर से फिसल जाएगी जिसने उसे खाया होगा। क्या लॉजिक है!

शरद ऋतु में बाग़ से तोड़े गए ताज़े सेब से बेहतर क्या हो सकता है? सिडर डोनट! एपल सिडर सेब से बना बिना मीठा किया गया और न छाना गया ड्रिंक होता है। सिडर डोनट सिडर मिलों में बेचे जाते हैं, और मीठे और मसालेदार होते हैं क्योंकि आटे में सिडर, दालचीनी और जायफल डाला जाता है। क्या बात है!

बर्लिनर ऐसे डोनट होते हैं, जिनमें जैम या जैली भरी जाती है। जर्मनी के कुछ भाग में इन्हें फ़ैन्कुचन भी कहा जाता है। इन्हें नव वर्ष की पूर्व संध्या पर और मार्डी ग्रास उत्सव पर खाया जाता है। एक सामान्य मज़ाक है इनमें जैम की जगह सरसों भर देना और सामान्य बर्लिनर्स के साथ मिला देना।

दक्षिण कोरिया की बेकरियाँ विभिन्न चटकीले रंगों में डोनट बनाती हैं, जैसे गुलाबी, हरा और सफ़ेद। इनमें भाप दिया गया चिपचिपा चावल का आटा और मीठा लाल फली का पेस्ट या तिल भरे जाते हैं।

वड़ा और बालूशाही हमारे अपने डोनट हैं - एक नमकीन और एक मीठा। सड़क की दुकानों और होटलों से लेकर वड़ा लगभग पूरे दक्षिण भारत में हर तरह के खाने के साथ मिलता है। बालूशाही की तुलना चिकनी परत वाले डोनट से की जाती है।

चूँ-चूँ का डिब्बा

आप कितनी भाषाएँ जानते हैं? अब चन्दामामा के माध्यम से बहुत सी भाषाएँ जानें एवं आत्मविश्वास के साथ भारत भ्रमण करें! नीचे की तालिका में दिए गये भाषा के शब्द पढ़ें। उसके बाद तालिका में और नीचे देखकर अन्य भाषाओं में इन्हें किस तरह बोला एवं लिखा जाता है वह जानें।

English	Only two days.	How is the preparation?
Hindi	केवल दो दिन.	तैयारी कैसी है?
Telugu	రెండు రోజులు మాత్రమే. रेन्डु रोजुलु माथ्रमे.	సన్నాహం ఎలా ఉంది? सन्नाहम एला वुन्दि?
Tamil	இரண்டு நாட்கள் தான்! इरान्दु नाटकल थान!	நீ எப்படி படித்திருக்கிறாய்? नी येप्पदी पदित्तुरुक्किराई?
Bengali	মাত্র দুই দিন। मात्रो धुई धिन.	প্রস্তুতি কেমন হয়েছে? प्रोस्तुति केमो छोलचे?
Marathi	फक्त दोन दिवस. फक्त दोन दिवस.	पूर्वतयारी कशी झाली आहे? पूर्वतैयारी कशी झाली आहे?
Kannada	ಎರಡು ದಿನ ಮಾತ್ರ. एरळु दिन मात्र.	ತಯಾರಿ ಹೇಗೆ ನಡೆದಿದೆ? तयारी हेगे नळेदिदे?
Oriya	କେବଳ ଦୁଇ ଦିନ। केबल दुई दिना.	ପ୍ରସ୍ତୁତି କିପରି ଅଛି? प्रस्तुति किपारी आच्छी?
Gujarati	ફક્ત બે દિવસ. फक्त बे दिवस.	તૈયારી કેવી છે? तैयारी केवी छे?
Assamese	কেৱল দুদিন। केवल दुदिन.	প্ৰস্তুতি কেনে? प्रस्तुति केने?
Malayalam	രണ്ടു ദിവസം മാത്രം. रांडु दिवसम मात्रम.	ഒരുക്കങ്ങൾ എങ്ങനെയുണ്ട്? ओरुक्कान्गल एन्गाना उन्दु?
Santali	ᱠᱷᱟᱹᱞᱤ ᱵᱟᱨ ᱫᱤᱱ ᱥᱩᱢᱩᱝ। खाली बार दिन सुमुन्ग.	ᱪᱮᱫ ᱞᱮᱠᱟᱢ ᱥᱟᱯᱲᱟᱣ ᱟᱠᱟᱱᱟ? चेड लेकाम सपदाव अकाना?
Sanskrit	केवलं दिनद्वयम्। केवल दिवद्वयम.	सिद्धता कथं प्रचलति? सिद्धता कम प्रचलति?

English	It was very easy.	It was very difficult.
Hindi	वह बहुत आसान था.	वह बहुत कठिन था.
Telugu	చాలా సులభం. चाला सुलभम.	చాలా కష్టం. चाला कस्टम.
Tamil	அது மிகவும் சுலபம். आधु मिकावुम सुलभम.	அது மிகவும் கஷ்டம். आधु मिकावुम कष्टम.
Bengali	সেটা খুব সহজ ছিল। सेता खुब सहोज छिलो.	সেটা খুব শক্ত ছিল। सेता खुब शक्तो छिलो.
Marathi	ते खूप सोपं होतं. ते खूप सोपा होत.	ते खूपच कठीण होतं. ते खूपच कठीण होत.
Kannada	ಅದು ತುಂಬಾ ಸುಲಭ ಇತ್ತು. आडु तुम्बा सुलभ इत्तु.	ಅದು ತುಂಬಾ ಕಷ್ಟ ಇತ್ತು. आडु तुम्बा कष्ट इत्तु.
Oriya	ଏହା ଭାରି ସହଜ ଥିଲା। एहा भारी सहज थिला.	ଏହା ଭାରି କଠିନ ଥିଲା। एहा भारी कठिण थिला.
Gujarati	તે ખૂબ સહેલું હતું. ते खूब सहेलुं हतुं.	તે ખૂબ મુશ્કેલ હતું. ते खूब मुश्केल हतुं.
Assamese	এইটো একেবাৰে সহজ আছিল। ऐतु एकेबारे क्षहस आसिल.	এইটো বৰ কঠিন আছিল। ऐतु बोर कठीन आसिल.
Malayalam	അത് വളരെ എളുപ്പമായിരുന്നു. आथु वालारे एलुप्पमायिरुन्नु.	അത് വളരെ പ്രയാസമായിരുന്നു. आथु वालारा प्रयासमायिरुन्नु.
Santali	ᱱᱚᱣᱟ ᱟᱫᱤ ᱟᱞᱜᱟ ᱛᱟᱦᱮᱸᱭᱟ। नोवा आदि अल्गा ताहेन्या.	ᱱᱚᱣᱟ ᱟᱫᱤ. ᱟᱱᱛ ᱛᱟᱦᱮᱸᱭᱟ। नोवा आदि अन्त ताहेन्या.
Sanskrit	तत् अतिसुलभम् आसीत्। तात अतिसुलभ आसित.	तत् अतिकठिनम् आसीत्। तात अतिकठीण आसित.

जम्बो और मिर्चियाँ

कुछ समय से असम में जंगलों से सटे गाँवों में बिना बुलाए मेहमान चले आते हैं: जंगली हाथियों के झुंड, जो मस्त रहते हैं। हाल के समय में, अधिकाधिक जंगल कट रहे हैं। जंगली जानवरों के रहने के स्थान कम होते जा रहे हैं। साथ ही, इन्सानों की बस्तियाँ हाथियों के रहने के स्थानों के निकट तक पहुँच गई हैं। इससे बहुत परेशानियाँ उत्पन्न हो गई हैं। जंगली हाथियों के झुंड गाँवों में घुस आते हैं और गाँव वाले घबरा जाते हैं और अपने पास मौजूद हर चीज़ का उपयोग करके अपनी रक्षा करने की कोशिश करते हैं। अब असम के वन विभाग को एक विचार आया है जिसे वह समस्या का एकदम सही इलाज बता रहा है: वह असम की विश्व प्रसिद्ध मिर्च का उपयोग करके इन हाथियों को बस्तियों से दूर रखना चाहता है। यह मिर्च, जिसे स्थानीय बोली में भूत जोलोकिया कहा जाता है, दुनिया की सबसे तीखी मिर्च होती है। इस मिर्च का एक चिपकने वाले विशेष पदार्थ के साथ बना मिश्रण गाँवों की सरहद पर लगी रस्सियों पर लगा देने से यह हाथियों को भगा देगा। कारण यह कि मिर्च इतनी तेज़ है कि हाथी जैसे मोटी चमड़ी के जानवर को भी इसे छू लेने से तेज़ जलन होगी और वह पलट जाएगा। वर्ल्डवाइड फंड फ़ॉर नेचर भी इस योजना का समर्थन कर रहा है। उत्तरी असम के कुछ गाँवों में इस काम को शुरू कर दिया गया है जो सोनाई-रूपाई वन्यजीव अभयारण्य के निकट हैं, जिसमें जंगली हाथी काफ़ी संख्या में हैं।

बाल पंचायत

नई दिल्ली का एक झुग्गी बस्ती इलाका, गोविन्दपुरी, किसी भी और झोपड़पट्टी की ही तरह है। लेकिन यहाँ की एक बात ख़ास है। यहाँ रहने वाले बच्चों ने अपनी समस्याओं को सुलझाने का एक अनूठा तरीका निकाला है। इन्होंने खुद ही बाल पंचायतें बना ली हैं, जिनमें केवल बच्चे ही सदस्य हैं। ये बाल पंचायतें बच्चों के स्कूल छोड़ने, किसी के परीक्षा में फ़ेल होने और यहाँ तक कि कारगिल जैसे मसलों पर भी गौर करती हैं। ये कई प्रकार के काम करते हैं - बच्चों में टीबी और ड्रग्स की समस्या पर फ़िल्म बनाना, क्ले और प्लास्टिक मोल्डिंग, गुड़िया बनाने और मेटल एम्बॉसिंग जैसी कलात्मक कार्यशालाओं में भाग लेना और युद्ध पर गए सैनिकों के परिवारों के लिये धन इकट्ठा करने के लिये नुक्कड़ नाटक करना। बच्चे पंचायत में अपने विचार रखते हैं, और फिर इन समस्याओं के हल ढूँढ़ते हैं। कम्यूनिटी एड स्पॉन्सरशिप प्रोग्राम (सीएएसपी) नामक एक गैर-सरकारी संगठन ने इन बच्चों को यह पंचायत गठित करने की प्रेरणा दी। यह इसके बाल विकास और झुग्गी बस्तियों के बच्चों के विकास के कार्यक्रमों का भाग है। इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य है ग़रीब बच्चों को अपने अधिकारों के बारे में शिक्षित करना और उन्हें यह विश्वास दिलाना कि वे भी समाज का अंग हैं, अतः समाज में उनकी आवाज़ की अनदेखी नहीं हो सकती।

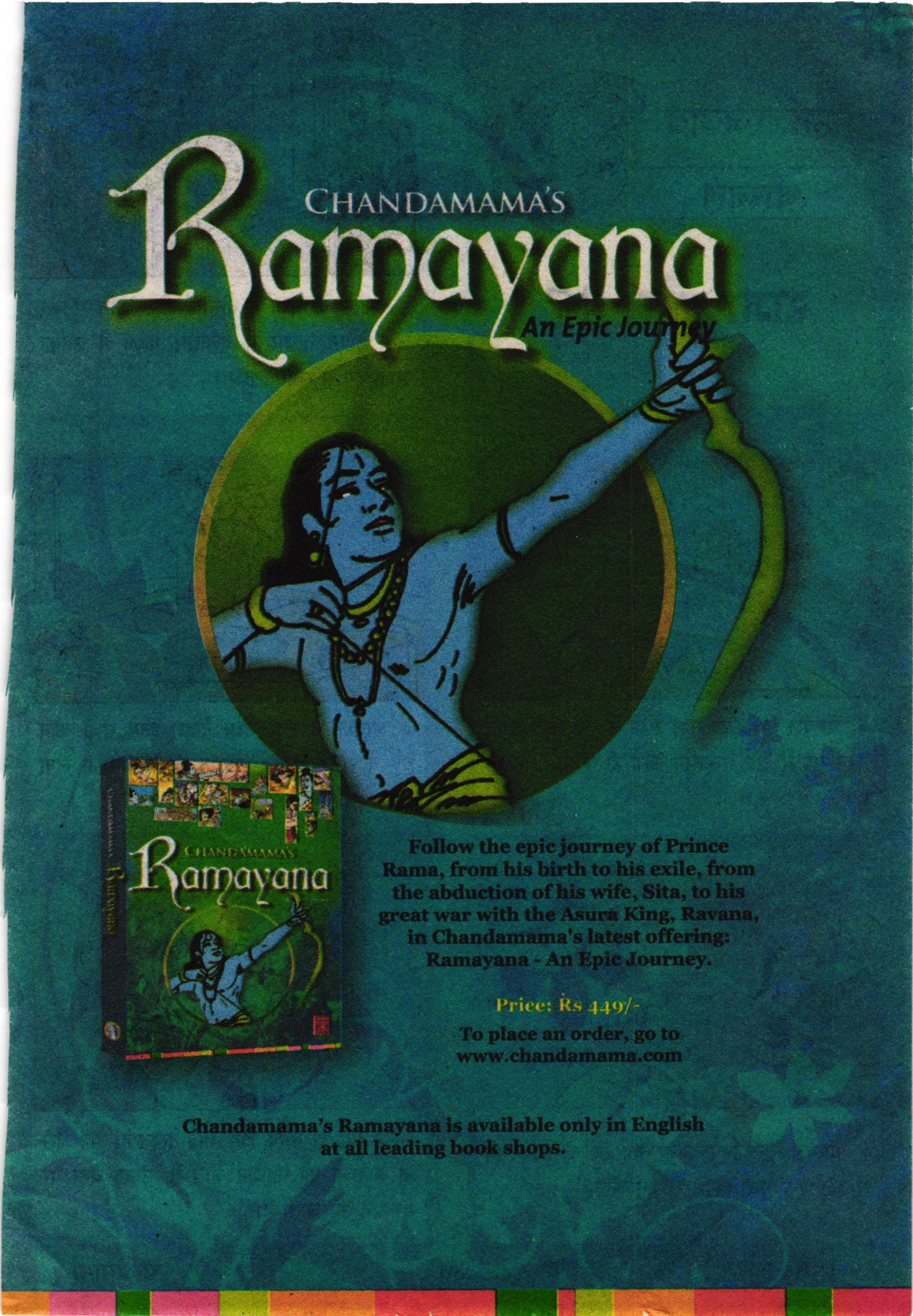
CHANDAMAMA'S
Ramayana
An Epic Journey
CHANDAMAMA'S
Ramayana
Follow the epic journey of Prince Rama, from his birth to his exile, from the abduction of his wife, Sita, to his great war with the Asura King, Ravana, in Chandamama's latest offering: Ramayana - An Epic Journey.
Price: Rs 449/-
To place an order, go to www.chandamama.com
Chandamama's Ramayana is available only in English at all leading book shops.

हाज़िरजवाब बीरबल

राजा कौन है?

१. फ़ारस के राजा ने बीरबल की ख्याति सुनकर उन्हें अपने दरबार में बुलाया। महल में उनका शाही ढंग से स्वागत हुआ।

२. बीरबल अचकचा गए। सभी ने एक जैसे कपड़े पहन रखे थे और सिंहासन जैसी ही कुर्सियों पर बैठे थे।

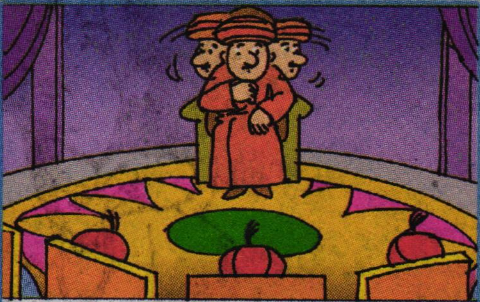

३. बीरबल ने इधर-उधर देखा। इनमें राजा कौन है? वे सोचने लगे, ''शायद ये मेरी परीक्षा लेना चाहते हैं।

४. बीरबल ने ध्यानपूर्वक हर चेहरे को देखा। 'इनमें से कोई एक राजा होगा। लेकिन कौन?'

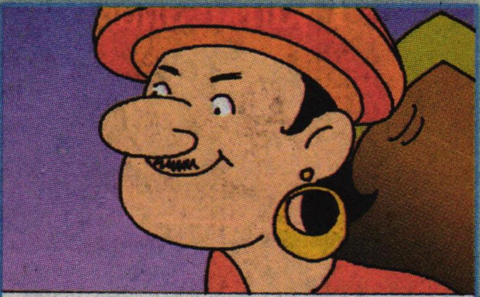

५. वे कुछ देर उनके हाव-भाव देखते हैं। फिर जैसे ही वे राजा को पहचान जाते हैं, उनके चेहरे पर मुस्कान आ जाती है।

६. बीरबल उनके पास जाकर तीन बार सलाम कर कहते हैं, "शहंशाह को मेरा विनम्र आदर कुबूल हो!"

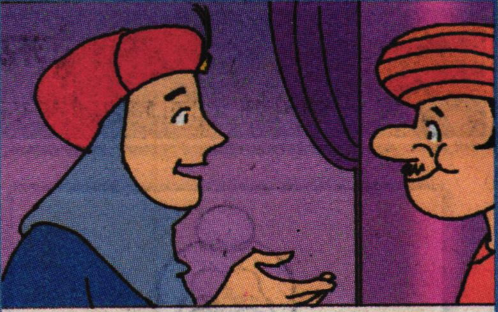

७. राजा आश्चर्यचकित हो जाता है। "तुमने मुझे कैसे पहचान लिया, बीरबल?" उन्होंने पूछा।

८. "सरल है, महाराज। यहाँ सभी ने आपके जैसे कपड़े पहने हैं, लेकिन सभी आप ही की तरफ़ देख रहे थे।"

९. "बीरबल! तुम महान् हो। तुम्हें इनाम मिलना चाहिये।" बीरबल राजा की कृपा का आभार मानते हैं। "आपको धन्यवाद, महाराज।"

फ़ेन्यूग्रीक, या मेथी, जैसा कि इसे आम तौर पर कहा जाता है, एक छोटा पौधा होता है जिसके फूल सफ़ेद होते हैं। इसके बीज कोष में १० से २० छोटे, चपटे, पीले-भूरे रंग के, कडवी सुगंधवाले दाने होते है। दाने की गंध तीव्र होती है और वे स्वाद में कड़वे होते हैं। इन दानों में विटामिन और खनिज भरपुर पाएं जाते हैं। इन में प्रोटीन की मात्रा भी अधिक होती है। भारत में भोजन में मेथी का उपयोग बहुत होता है। आयुर्वेद में भी इसके औषधीय गुणों के बारे में काफ़ी लिखा गया है। रक्त शर्करा के स्तर को घटाने की क्षमता होने के कारण, मेथी मधु प्रमेह के इलाज में अधिक उपयोगी है। पाचक रेशों का उत्तम स्रोत है। इन मेथीदानों का नियमित सेवन सत्तक्षीणता के है। चमड़ी पे आई सूजन पर भी इन पत्तों का लेप लगाने से सूजन उतर जा

ट्रेज़र बॉक्स

इस महीने, आओ हम संतो के कुछ रंगीन चित्रो पर एक स्क्रैप-बुक बनाएँ

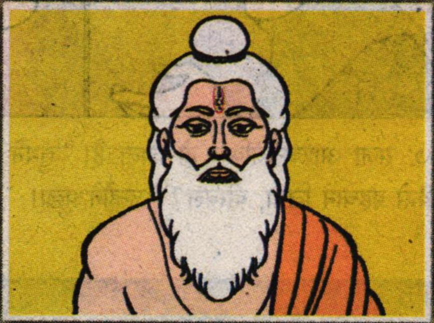

वाल्मीकि

अगस्त्य

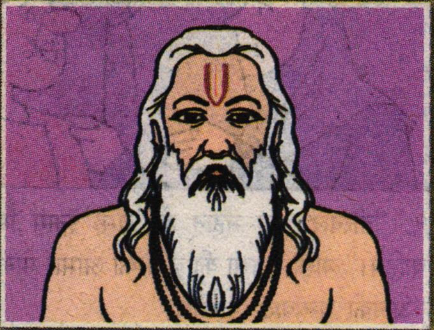

अत्रि

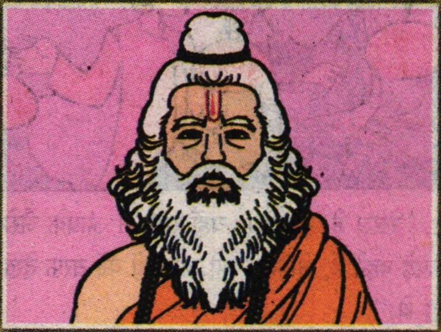

दुर्वासा

तन्य

भृगु

Chandamama

Art Book

I got Chandamama art book yesterday itself. what a lighting speed. When i see the art book, my 1st impression is "superb printing". In art book each and every image is having nice description in left side of the page. Why don't you mention the description of Chandamama's cover page image monthly wise? Once again thank you for sending the artbook an d Chandamama intime.

With Best Wishes,
Dr. V.V. Venkata Ramana, Hyderabad, AP

Order Now

2 Volumes

₹ 1500/-

Log on to: **www.chandamama.com** or Contact: Chandamama India Ltd.
B3, Cross Road 'B', MIDC, Andheri(E), Mumbai-400093. Ph. No: 022 28312872/28311849
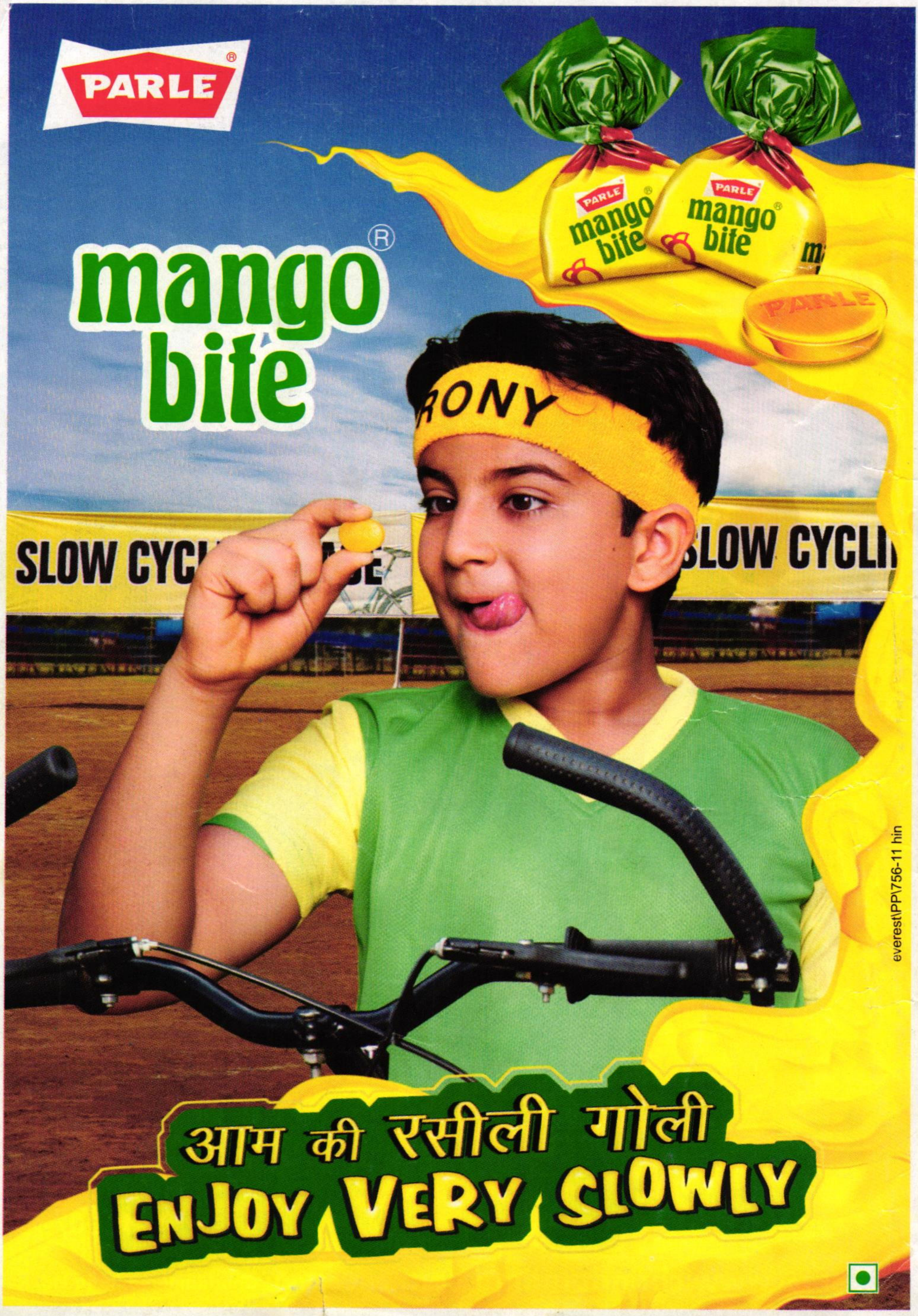
CHANDAMAMA (Hindi) May 2012 Registrar of Newspapers of India No. MAHHIN/2010/35899
Licensed to post regd. No. MH/MR/N/130/MBI/10-12